खण्ड-३
सफलता के सोपान

भाग्यवाद हमें नपुंसक और निर्जीव बनाता है

एक ही औषधि हर मर्ज पर, हर व्यक्ति के लिए काम नहीं आ सकती। इसी प्रकार परिस्थितियों के अनुरूप अनेक सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है। विद्यार्थियों और वानप्रस्थों के लिए ब्रह्मचर्य धर्म है किंतु विवाहितों के संतानोत्पादन के लिए काम-सेवन भी धर्म बन जाता है। साधुओं का सम्मान एवं दुष्टों का प्रताड़न परस्पर विरोधी सिद्धांत विपरीत परिस्थितियों में प्रयुक्त होते हैं। भाग्यवाद का सिद्धांत भी एक ऐसा ही प्रयोग है जो केवल तब काम में लाया जाता है, जब मनुष्य के पुरुषार्थ करने पर भी अभीष्ट सफलता न मिले। असफलता में निराशा और खीज उत्पन्न होती है और अपनी भूल तथा दूसरों के असहयोग के अनेक प्रसंग ध्यान में आते हैं। ऐसी दशा में असफलता की हानि के साथ लोग भावी सतर्कता के लिए शिक्षा तो नहीं लेते, उल्टे अपने या दूसरों के ऊपर झल्लाते, उद्विग्न होते देखे जाते हैं। इन परिस्थितियों में भाग्यवाद की चर्चा करके चित्त को हल्का किया जा सकता है। उस समय के लिए यह उपयुक्त औषधि है।

एक युवक को नौकरी के लिए इंटरव्यू देने पच्चीस तारीख को बुलाया गया। युवक इक्कीस तारीख को चलने को हुआ तो घर वालों ने कहा—आज शनिवार है, अच्छा दिन नहीं, कल जाना, दूसरे दिन पंडितजी बोले—रवि, शुक्र को पश्चिम की यात्रा वर्जित है, सो वह दिन भी गया। तेईस तारीख को "योगिनी" बाँए एड़ेगी कहकर ज्योतिषी ने चक्कर में डाल दिया। चौबीस को कपड़े पहनकर वह चलने को हुआ कि एक बच्ची ने छींक दिया, यद्यपि लड़की को जुकाम था, पर घर वालों ने नहीं जाने दिया। पच्चीस को घर से निकलते ही बिल्ली रास्ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काट गई। अपशकुन टालने के लिए जब तक लड़के को रोक कर रखा दरवाजे पर लिखा पाया—नो वेकेन्सी "अब कोई स्थान खाली नहीं है।"

पर यह दवा यदि कुसमय में काम में लाई जाए तो पुरुषार्थ के उत्साह को ठंडा कर सकती है और व्यक्ति को अकर्मण्य बना सकती है। अपने देश में ऐसा ही कुछ बहुत दिनों से होता चला आ रहा है और हम अपने कर्त्तव्यों के प्रति निर्जीव, नपुंसक, अन्यमनस्क और निराशाग्रस्त होते चले जा रहे हैं। "जो भाग्य में लिखा है, सो होगा—होतव्यता टलेगी नहीं—जितना मिलना है, उतना ही मिलेगा—'कर्मरेखा मिटती थोड़े ही है'—जब अच्छे दिन आएँगे, तभी सफलता मिलेगी जैसी मान्यताएँ यदि मजबूती से मन में जड़ जमा लें तो किसी भी मनुष्य को अकर्मण्य और निराशावादी बना देंगी। वह यही सोचता रहेगा कि जब अच्छा समय आएगा तब सब कुछ अपने आप ठीक हो जायेगा, यदि अपने भाग्य में नहीं है तो मेहनत करने पर भी क्यों मिलेगा ? ऐसे भाग्यवादी व्यक्ति न अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करते हैं और न पूरे उत्साह से किसी काम में लगते हैं, फलस्वरूप उन्हें कोई महत्त्वपूर्ण सफलता भी नहीं मिलती। आशा की ज्योति जलती ही न हो, तो प्रगति पथ पर प्रकाश कैसे उत्पन्न होगा ?

यह विचारधारा भारतीय दर्शन के सर्वथा विपरीत है। अपने यहाँ सदा पुरुषार्थ, कर्म, प्रयत्न और संघर्ष को मानव-जीवन की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में प्रतिपादित किया जाता है। अपना सारा अध्यात्म इतिहास और दर्शन इसी प्रतिपादन से भरा पड़ा है। फिर यह भाग्यवादी विकृत विचारधारा कहाँ से चल पड़ी ? इसकी खोज करने पर स्पष्ट हो जाता है कि सामन्तवादी शोषकों ने अपनी अत्याचारों से पीड़ित जनता को किसी प्रकार शांत संतुष्ट करने के लिए यह मनोवैज्ञानिक नशे की गोली विनिर्मित की। उनके इशारे पर साधु, पंडित भी इसी तरह के किस्से कहानी गढ़कर पीड़ितों के रोष-प्रतिरोष को शांत शमन करने में लगे रहे।

नारद जी पृथ्वी पर लोगों की कुशल देखने आये। वे जिससे भी मिले सबने दुःखों का ही रोना रोया। कोई अन्न के लिए, कोई, वस्त्र के लिए, कोई स्त्री, पुत्र और मकान के लिए। एक स्थान पर साधुओं की जमात लगी थी। उन्होंने नारद जी को फटकारा, भगवान हमारे लिए मिष्ठान्न भोग क्यों नहीं देते ? नारद जी हैरान होकर लौटे और भगवान् से कहा—भगवन् ! आपने इन लोगों को अभावग्रस्त क्यों बनाया ! भगवान् ने हँसकर कहा—नारद ! मैं कर्म करने वाले को ही कुछ दे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता हूँ। जो दीनता और दरिद्रता से खुद नहीं लड़ सकता, उसका तो मैं भी भला नहीं कर सकता।

नृशंस विदेशी शासन के द्वारा उत्पीड़ित जनता बहुत क्षुब्ध और आवेशग्रस्त थी। आये दिन कत्लेआम, मंदिरों का गिराया जाना, सयानी लड़कियों को जबरदस्ती ले जाना, बलात् धर्म-परिवर्तन करना जैसी घटनाएँ किसका खून न खौला देंगी ? कौन प्रतिरोध के लिए तैयार न होगा, पर आश्चर्य इस बात का है कि मुट्ठी भर अत्याचारियों के विरुद्ध समुद्र जितनी विस्तृत और परम तेजस्वी भारतीय जनता प्रतिरोध की दृष्टि से कुछ भी न कर सकी और वे दुष्ट उत्पीड़न लंबी अवधि तक यथावत् चलाते रहे। इस नपुंसकता के पीछे हमारी भाग्यवादी दार्शनिक भ्रष्टता का ही प्रमुख हाथ रहा, जिसने क्षोभ, रोष प्रतिरोध एवं संघर्ष की शौर्य प्रकृति को चकनाचूर करके फेंक दिया।

कत्लेआम हुए और हमें कहा गया, जिनको जिस प्रकार, जिस दिन, जिसके हाथों मरना है, वह उसी तरह मरेंगे। उस विधान को कोई मेट नहीं सकता। उनका प्रारब्ध ऐसा ही था, जिसके कारण उन्हें मरना पड़ा। मारने वाले तो निमित्त मात्र थे उन पर रोष करने से क्या लाभ ? लड़कियों को घरों से उठा कर ले गए तो कहा गया, जिस लड़की का अन्न जहाँ बदा है, जिसके साथ इसका जूरी-संयोग लिखा-बदा है, जहाँ दुःख-सुख इसे भोगना है वहीं तो यह रहेगी। इस विधि-विधान के प्रतिकूल रोष करने से क्या बनेगा ? मुट्ठी भर विदेशी, रोमांचकारी लूट-खसोट और नृशंस उत्पीड़न करते रहे और हमें कहा गया—भगवान की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता, फिर यह अप्रिय लगने वाली घटनाएँ भी उन्हीं की इच्छा से हो रही हैं। उनका पुण्य-फल रहा होगा और हमारा पाप उदय हो रहा होगा। इसी से भगवान का यह विधान चल रहा है इसे सहन कर लेना और चुप बैठे रहना ही उचित है।

इन धारणाओं ने हमें नपुंसक बना दिया और एक हजार वर्षों तक हम मुट्ठी भर विदेशी शासकों के पैरों तले बेतरह कुचले जाते रहे। इतना ही नहीं हमारा व्यक्तिगत पौरुष, उल्लास, उत्साह एवं पराक्रम भी सो गया। जब ग्रह दशा, भाग्य चक्र, हस्तरेखा ही अनुकूल न हो, तब प्रयत्न करने का झंझट भी क्यों उठाया जाए ? जब समय बदलेगा, तब भाग्य लक्ष्मी का उदय होने से घर पर बैठे सम्मान बरस पड़ेगा, इस मान्यता के रहते कठिन कष्टसाध्य पराक्रम करने का महत्त्व ही क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहा ? ऐसी दशा में कोई कुछ सुधारात्मक बड़ा काम किस आधार पर आरंभ करें ? किसी बड़े परिवर्तन के लिए कोई किसलिए साहस इकट्ठा करे ?

शोषक और दुष्ट, दुराचारी अपने द्वारा उत्पीड़ित शोषित लोगों को इसी आधार पर ठंडा करते रहे कि तुम्हारे भाग्य में कुछ ऐसा ही लिखा था, जिसके कारण दुःख दरिद्र सहन करने पड़ रहे हैं। हम तो निमित्त मात्र हैं। असली कारण तो तुम्हारा भाग्य है। गायें कटती रहें, तो हम बधिकों को किस मुख से कह सकते हैं कि तुम्हारा कृत्य अनुचित है ? भाग्य और भगवान की इच्छा ही एक मात्र कारण है, तब उस कुकृत्य को रोकने की, विरोध करने की बात सोचना ही बेकार है। हर पाप और अपराध का करने वाला अपने पक्ष में यही दलील देकर अपने को निर्दोष सिद्ध कर सकता है, फिर उस बेचारों को क्यों कोई रोके ? संसार के दीन-दुःखी, पीड़ित अपंग जब भगवान की इच्छा से ही इस स्थिति में पड़े हैं, विधि का विधान भोग रहे हैं, तो उनकी सेवा, सहायता करना व्यर्थ है। इससे तो भगवान और विधाता दोनों ही नाराज होंगे कि हमारे विधान में क्यों हस्तक्षेप किया ? ऐसी दशा में दीन दुखियों की सेवा, सहायता करना भी एक अपराध बन जाता है।

टालस्टाय के पास खड़ा एक युवक बड़ा दुःख व्यक्त कर रहा था। कह रहा था—मेरी नौकरी नहीं लग रही, घर में कुछ नहीं। भगवान ने मेरे साथ बड़ा अन्याय किया, मुझे कुछ नहीं दिया। टालस्टाय बोले—चाहो तो एक हजार में अपने पैर, पाँच हजार रुपए में हाथ, दस हजार रुपये में नाक और बीस हजार रुपए में आँखें बिकवा सकता हूँ। युवक भौचक्का-सा खड़ा बोला—यह आप क्या कह रहे हैं ? क्या मैं अपना शरीर कटवाऊँ ? टालस्टाय हँसे और बोले नहीं जी ! शरीर कटवाने की बात नहीं कह रहा, मैं तो यह कह रहा हूँ कि पचास हजार के तुम्हारे इतने ही अंग हैं, कुल शरीर तो लाखों का है। इतना मूल्यवान् शरीर पाकर भी तुम भगवान् को और भाग्य को दोष देते हो ?

किसी समाज का दर्शन-दृष्टिकोण भ्रष्ट हो जाए तो उसमें सर्वांगीण भ्रष्टता आती है। भाग्यवाद हमारी दार्शनिक भ्रष्टता है, जिसने हमारी कर्त्तव्य निष्ठा को बुरी तरह कुचल-मसल कर फेंक दिया और हम किसी समय के विश्व मूर्धन्य आज दुःख-दरिद्र की हीन परिस्थितियों में पड़े बिलख रहे हैं। बड़े से बड़े झटके खाकर भी जर्मनी और जापान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुनः अपनी पूर्व स्थिति पर पहुँच गए, पर ५० वर्ष बीत जाने पर भी हमारी राजनीतिक स्वाधीनता हमें प्रगति पथ पर अग्रसर न कर सकी। इसका एक बहुत बड़ा कारण हमारी दार्शनिक पराधीनता है। बौद्धिक दृष्टि से हम अभी भी गुलाम हैं। अँग्रेज, मुसलमान, भले ही चले गए हों, पर हमारे मस्तिष्क को भाग्य, देवता ग्रह-नक्षत्र विधि-विधान, ईश्वर इच्छा, समय का फेर आदि मूढ़ मान्यताओं की जंजीर उसी तरह से जकड़े हुए हैं।

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने सियेटल शहर घूमते हुए एक आठ वर्षीय बच्चे को अखबार बेचते हुए देखा। स्वामी जी ने पूछा—तुम तो किसी संपन्न घर के लगते हो, अखबार क्यों बेचते हो ? लड़के ने उत्तर दिया—हाँ श्रीमान जी ! मेरे घर वाले सचमुच संपन्न हैं, पर हम किसी के आश्रित नहीं रहना चाहते" अपना भाग्य अपनी मुट्ठी में रखते हैं। स्वामी जी के मुँह से इतना ही निकला—तभी तो तुम सब इतने संपन्न हो।

भाग्यवाद के सिद्धांत का यदि कुछ उपयोग है तो केवल इतना कि जब मनुष्य असफल या हताश हो जाए तो थोड़ी देर के लिए अशांति को हल्का करने के लिए उसका वैसा ही प्रयोग कर लिया जाए जैसा कि तेज बुखार के सिर दर्द में "एस्प्रो" की गोली खाकर थोड़ी देर के लिए राहत मिल जाती है। इसके अतिरिक्त यदि कर्त्तव्य क्षेत्र में उसका उपयोग किया जाने लगा तो उससे केवल अनर्थ ही उत्पन्न होगा। लोग अपना कर्त्तव्य और पुरुषार्थ खो बैठेंगे। आशा और उत्साह, साहस और शौर्य सब कुछ कुंठित हो जाएगा। न अनीति के विरुद्ध संघर्ष कर सकना संभव रहेगा और न सेवा तथा सुधार के लिए किसी के मन में उत्कंठा जगेगी। इस मान्यता के रहते हम युग-युगांतरों तक दयनीय परिस्थितियों में ही निर्जीव और निःचेष्ट बने पड़े रहेंगे, इसलिए आवश्यक है कि इस बौद्धिक दासता के भ्रष्ट सिद्धांत को ठोकर मारें जिसे शोषकों ने हमारे रोष की प्रतिक्रिया से बचने के लिए गढ़ा और फैलाया है। कल का कर्म ही आज भाग्य बन सकता है। कल का दूध आज दही कहला सकता है। इसलिए यदि भाग्य कुछ है भी तो केवल हमारी कर्मठता की प्रतिक्रिया, प्रतिध्वनि मात्र हैं। इसलिए हमें भाग्य की ओर न देखकर कर्मनिष्ठा को ही प्रधानता देनी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. भाग्यवाद और पुरुषार्थ में जिस प्रकार अंतर है, उसी तरह किन्हीं और दो भिन्न उदाहरणों को बताएँ ?
२. पुरुषार्थ के असफल होने पर क्या हानि है तथा तब भाग्यवाद से क्या लाभ हैं ?
३. भाग्यवाद किस प्रकार व्यक्ति को अकर्मण्य बना देता है ?
४. भाग्यवाद का प्रचारक कौन था तथा उसका कारण क्या था ?
५. विदेशी शासक भारतीय जनता पर किस प्रकार शासन किया करते थे ?
६. भाग्यवाद से हमें विदेशी शासकों के राज्य से क्या हानियाँ उठानी पड़ीं ?
७. यह आप कैसे कह सकते हैं कि भाग्यवाद ने हमें नपुंसक बना दिया है ?
८. विदेशी शासकों के जाने के बाद भी पचास वर्ष बीत जाने पर भी हम उन्नति क्यों नहीं कर सके ?
९. भाग्यवाद उपयोगी भी है, कब ? कैसे ?
१०. कर्म भाग्य कब बनता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बौद्धिक परावलंबन का परित्याग

ग्रह नक्षत्र आसमान में रहते हैं। वे पाञ्चभौतिक अणु-परमाणुओं से बने पिंड मात्र हैं। जैसा कि चंद्रमा पर पदार्पण करके तथा मंगल, शुक्र आदि की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करके पता लगा लिया गया है। उनमें न देवता रहते हैं न प्राणी। यदि रहते भी हों और कुछ प्रभाव भी डालते हों तो वह समस्त पृथ्वी पर उसके किसी भाग पर ही हो सकता है। यह किसी प्रकार संभव नहीं कि ये निर्जीव पिंड अलग-अलग व्यक्तियों पर अलग-अलग प्रकार के प्रभाव डालें। भारतीय ज्योतिष शास्त्र खगोल विद्या का महत्त्वपूर्ण अंग है। उसमें नक्षत्रों की गतिविधियों का बहुत बड़ा ज्ञान समाविष्ट है। यह विद्या अति महत्त्वपूर्ण है, पर पिछले दो हजार वर्षों से तो उस विज्ञान में फलित ज्योतिष की एक नई शाखा रचकर भ्रम और अज्ञान फैलाने का एक घृणित साधन बना लिया गया है। गणित ज्योतिष ऋषियों की देन है उसमें वैज्ञानिक तथ्यों का समावेश है, पर फलित ज्योतिष तो यों ही अटकल-पच्चू है, लोगों को अशुभ ग्रह दशा के भय से डराना और डरे हुए लोगों से ग्रह देवता की पूजा-पत्री के नाम पर कुछ ऐंठ लेना यही इस नई गढ़ंत का एकमात्र आधार है। पिछले दिनों व्यवसायी लोगों ने भोली जनता की धर्म श्रद्धा का अनुचित शोषण करने के लिए यह जाल-जंजाल रचकर खड़ा कर दिया है और असंख्य व्यक्ति उन मान्यताओं के शिकार होकर अकारण दुःखी रहते और अपना भारी अहित करते रहते हैं।

विवाह-शादियों में जन्म-पत्र मिलाने की प्रथा से असंख्य सुयोग्य जोड़े मिलने से वंचित रह जाते हैं। लड़की-लड़के सुयोग्य हैं, संबंधी रजामंद हैं, पर पंडितजी ने पत्रा देखकर बता दिया कि विधि वर्ग नहीं मिलता। बस सारा आधार नष्ट हो गया। मन नहीं भर रहा है, विवाह जोड़ना कुछ जम नहीं रहा है, पंडितजी ने बता दिया विधि वर्ग बहुत अच्छा मिलता है, बस स्वीकृति मिल गई। परिणामों की शोध की जाए तो पता लगेगा कि विधि वर्ग की संगति मिलाकर जो विवाह किए गए थे उनमें से कितने सफल रहे। परिणाम उल्टा ही मिलेगा, क्योंकि विधि-वर्ग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की सनक में जो लोग अन्य बातों की उपयोगिता-अनुपयोगिता की परवाह नहीं करते, उन्हें स्पष्टतः घाटे में रहना चाहिए और रहते भी हैं।

लड़की मंगली है। लड़का मंगली है। बस इतने भर से उनके विवाह-शादी असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य हो जाते हैं। सुयोग्य बच्चे जो सुयोग्य साथी पाने के अधिकारी थे, इस मूढ़ मान्यता के शिकार हो गये कि उनकी कुंडली में मंगल बैठा है। उन्हें सुयोग्य साथी के चुनाव में वंचित रहना पड़ा। कोई मंगली जोड़ा बैठे तब काम चले। ढूँढ़-खोज में निराश अभिभावक जहाँ भी मंगली की तुक बैठती है, वहीं विवाह की बला काट देते हैं, ये बच्चे आजन्म रोते-बिलखते रहते हैं।

देखना यह है कि क्या इस बात में कुछ सच्चाई भी हो सकती है कि करोड़ों मील दूर रहने वाले ग्रह-नक्षत्र पृथ्वी निवासी किसी व्यक्ति विशेष को प्रभावित ही नहीं करें, वरन् उनकी विवाह-शादी जैसी आवश्यकताओं में हस्तक्षेप करें। विवेक कहता है—यह सर्वथा असंभव है। एक तो ग्रह-नक्षत्रों में कोई जीवन ही संदिग्ध है। विज्ञान उन्हें निर्जीव पिंडमात्र सिद्ध कर रहा है। यदि ये सजीव भी हों, तो हर व्यक्ति के प्रति उनको बार-बार बदलने वाली रीति-नीति का कोई कारण या आधार समझ में नहीं आता। हिन्दू-समाज का एक बहुत छोटा वर्ग फलित ज्योतिष पर विश्वास करता है। इस देश के निवासियों में से भी अधिकांश की मान्यता अलग तरह की है। अन्य देशों की तो बात ही क्या कहनी। वहाँ उस तरह की कोई मान्यता नहीं। तब क्या उन्हें ग्रह-नक्षत्रों का कोप-भाजन ही बनना पड़ता होगा ?

पिछले दो हजार वर्षों से हम बौद्धिक गुलामी के बेतरह शिकार हुए हैं। स्वतंत्र चिन्तन और विवेक-शीलता को छोड़ बैठे। फलस्वरूप हम जीवन के हर क्षेत्र में परावलंबी होते चले गए। एक हजार वर्षों की राजनैतिक पराधीनता इस बौद्धिक गुलामी की ही प्रतिक्रिया थी। जो मानसिक दृष्टि से परावलंबी हो जाता है उसे व्यावहारिक जीवन में भी किसी का गुलाम बन कर ही जीना पड़ता है। विदेशियों और विधर्मियों के पैरों तले हम एक हजार वर्ष तक इसीलिए दबे पड़े रहे कि स्वतंत्र चिंतन और विवेकपूर्ण दिशा निर्धारण की प्रवृत्ति खो बैठे। जो कुछ होना है, जो कुछ होगा देवताओं की, भाग्य की, नक्षत्रों की कृपा से होगा। हमारी स्वतंत्र चेतना तो निरर्थक है। इस प्रकार की मान्यता हमारी सबसे बड़ी दुर्बलता है। इस दुर्बलता का फूहड़ उदाहरण फलित ज्योतिष के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रूप में देखा जा सकता है। जन्म पत्रों में ही हमारा सब कुछ भूत-भविष्य लिखा है। यह मान्यता हमारे पुरुषार्थ को निरर्थक सिद्ध करती है। जो होना है सो जन्म कुंडली में ही लिखा है। हमें इसी के अंगुलि-निर्देशों पर घूमना है। यह मान्यता स्वतंत्र चिंतन और पुरुषार्थपूर्ण कर्त्तव्य के सारे द्वार बंद कर देती है। मनुष्य बौद्धिक दृष्टि से पराधीन और भाग्यवादी बनकर किसी अज्ञात के संकेत और सहयोग, असहयोग से बँधी हुई पतंग की तरह अपने को मानने लगता है। जीवन के प्रगति पथ पर यह स्थिति सबसे बड़ी बाधा और विपत्ति है। इसने हमारे विवेक और कर्त्तव्य को जितनी क्षति पहुँचाई, उतनी शायद ही किसी और भ्रांति ने पहुँचाई हो। हमारा भविष्य निर्धारित और विश्वस्त है—इस मूढ़ मान्यता पर जो विश्वास करेगा वह न तो पराक्रमी हो सकता है और न अपनी प्रतिभा को सजग करने के लिए आवश्यक उत्साह ही उत्पन्न कर सकता है। फलित ज्योतिष एक प्रकार से हमें भाग्यवादी, परावलंबी और नपुंसक बनाकर रख देती है। यह हमारे आध्यात्मिक जीवन की एक महती विपत्ति ही कही जा सकती है। जिन्होंने इस जंजाल का सृजन किया उन्होंने मानव-समाज का कितना अहित कर डाला, वे बेचारे शायद ही यह अनुमान लगा सके हों।

एक पहाड़ पर दो चीटियाँ रहती थीं। एक चीनी की खान में और दूसरी नमक की खान में। चीनी की खान वाली चींटी ने नमक की खान वाली चींटी को भोज दिया। दूसरे दिन नमक की खान वाली चींटी आई और दिन भर चीनी की खान में रही, पर उसे कुछ भी खाते नहीं बना। चीनी की खान वाली चींटी को पता था। नमक वाली चींटी के मुँह में अँगुली डालते हुए उसने कहा—मौसी जी ! पहले यह जो नमक का टुकड़ा मुँह में लिए हुए हो इसे तो निकालो। वह टुकड़ा निकालते ही उसने भर पेट चीनी खाई। जो लोग पूर्वाग्रह में पड़े हुए हैं, वे नमक वाली चींटी के ही समान हैं।

जन्म-पत्र बनवाने और किसी को दिखाने का अर्थ है अपने ऊपर बैठे-ठाले एक चिन्ता भय एवं अशांति का आवरण तान लेना। नौ ग्रहों में से कभी कोई प्रतिकूल न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। ज्योतिषी इसी बात को बताकर डरा देगा और प्रयत्न करेगा कि उसे पूजा-पाठ के—ग्रह-शांति के नाम पर कुछ ऐंठने को मिले। डरा हुआ व्यक्ति देता भी है और ज्योतिषी की गहरी छनती रहती है, पर अपने ऊपर जो आशंका और भीति सवार हो गई वह हर घड़ी खून सुखाती रहेगी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानसिक शांति को नष्ट करती रहेगी। ग्रहों को शांत या अशांत कर सकना ज्योतिषी के हाथ में होता तो वह गर्मी के दिनों में सूर्य को जरूर शांत कर देता ताकि पृथ्वी पर सुहावना मौसम बना रहे। चंद्र-आकर्षण को जरूर शांत कर देता ताकि समुद्र में ज्वार-भाटे न उठते और जहाज एवं नावों का आवागमन निरापद हो जाता। जो इतना भर नहीं कर पाते उनसे कैसे आशा करें कि ग्रहों की गति-विधियाँ उनकी मुट्ठी में हैं।

शकुन, मुहूर्त हमारी गतिविधियों को पग-पग पर रोकते हैं। अभी कोई काम आवश्यक करना है, मुहूर्त नहीं निकला, तो उसे रोकना ही पड़ेगा। सोमनाथ मंदिर पर महमूद गजनवी ने आक्रमण किया तो उसका प्रतिकार करने का मुहूर्त ही नहीं निकला फलस्वरूप बिना लड़े ही उस विशाल संपत्ति पर आक्रमणकारियों का अधिकार हो गया। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटनाएँ आए दिन घटित होती रहती हैं और हर क्षण मूल्यवान है इस तथ्य को भूलकर हम किसी अच्छे मुहूर्त की राह जोहते रहते हैं। बिल्ली का रास्ता काट जाना, कुत्ते का कान फड़फड़ा देना, पनघट की ओर जाता खाली घड़ा, किसी जुकाम पीड़ित की छींक हमारे उत्साह को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है। अपशकुन हो गया तो दिल धड़कने लगा। हिम्मत आधी रह गई। ऐसी दशा में यदि घबराए हुए व्यक्ति को असफलता का मुँह देखना पड़े तो आश्चर्य ही क्या है ?

कोई नई वस्तु, पशु या व्यक्ति घर में आया तो देखते हैं कि यह शुभ है अशुभ। संयोगवश कोई हानिकर प्रसंग आ गया तो दोष बेचारे उस नवाआगंतुक का है। नई बहू घर में आई उसी दिन संयोगवश भैंस मर गई। सारा दोष नई बहू का, यह अभागिन है। इसी प्रकार किसी अयोग्य का संयोग शुभ सिद्ध होने का बन जाए, तो फिर तो पौ बारह हैं। लाखों विधवाएँ अपराधिनी की तरह इसीलिए मुँह छिपाए फिरती हैं कि उनका पति मर गया और मृत्यु का कारण उनका अशुभ भाग्य ठहराया गया।

एक थे पंडितजी, प्रतिदिन पूजा के बाद शंख बजाते। शंख-ध्वनि सुनते ही पड़ोसी धोबी का गधा जोर-जोर से रेंकने लगता। पंडितजी बड़े खुश होते और कहते—गधा पूर्व जन्म का योगी है, उसका नाम भी उन्होंने शंखराज रख लिया था। एक दिन शंखराज नहीं बोले, पता चला कि गधा मर गया है। पंडित जी ने इस दुःख में अपने बाल मुड़ा डाले। शंखराज मर गया है यह खबर और पंडितजी के सिर मुड़ाने की खबर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाकर उनके यजमानों को सिर मुड़ाना पड़ा। उसी दिन गाँव में एक सिपाही आया था, उसने शंखराज के मरने की बात सुनी तो खुद भी बाल मुड़वाए और धीरे-धीरे सारी फौज घुट-मुंड हो गई। हैरान अफसरों ने पता लगाया, तो मालूम हुआ कि शंखराज कोई व्यक्ति नहीं गधा था, लोगों ने तो अंधविश्वास वश सिर मुड़ाए किसी ने वस्तुस्थिति जानने का प्रयत्न नहीं किया। अंधविश्वास ऐसे ही फैलता है।

अशुभ भविष्यवाणियों के आधार पर लोग अपने उज्ज्वल भविष्य की आशा छोड़ बैठते हैं। हाथ की रेखाओं की, चेहरे पर किसी अंग की, बनावट देखकर जिन्हें भाग्यहीन घोषित कर दिया है, उन बेचारों की मनोभूमि एक प्रकार से कुचल दी गई। उन्हें प्रगति पथ पर अग्रसर होने का उत्साह अब कहाँ से मिल सकेगा ? भ्रांतियों के जंजाल से हम निकलें और इस बौद्धिक परावलंबन की बेड़ियाँ तोड़ फेंकें यही हमारे लिए उचित एवं उपयुक्त है।

प्रश्न

१. ज्योतिष कितने प्रकार का होता है। उसमें कौन-सा श्रेष्ठ है ?
२. फलित ज्योतिष की हानियों पर प्रकाश डालिए ?
३. विवाह के पूर्व कुंडली मिलाने से लाभ है या हानि ?
४. ग्रह दशा से डरा कर जनता को गुमराह करना कहाँ तक उचित है ?
५. दो हजार वर्ष की गुलामी का भयंकर दुष्परिणाम क्या हुआ ?
६. सिद्ध कीजिए "भाग्यवाद निरर्थक है।"
७ उन्नति या प्रगति का आधार स्वतंत्र चेतना है या भाग्य ?
८. स्वतंत्र चिंतन एवं पुरुषार्थ पूर्ण कर्त्तव्य ही सुख के सारे द्वार खोलता है ? सिद्ध कीजिए।
९. सिद्ध कीजिए कि शकुन, मुहूर्त, कुंडली, राशिफल मनुष्य को भयभीत व कमजोर बनाते हैं ?
१०. असफलता का मूल कारण क्या है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचार शक्ति और अपना महत्त्व समझे

श्रावस्ती के दो गिरहकट वहाँ पहुँचे जहाँ भगवान बुद्ध के उपदेश सुनने के लिए भीड़ एकत्र थी। एक गिरहकट तो लोगों की जेबें काटता रहा दूसरा बुद्ध के उपदेश सुनने लगा। भगवान बुद्ध कह रहे थे, जो अपनी बुराइयों को ढूँढ़ता और उन्हें निकालने का साहस करता है, वही सच्चा पंडित है। बात हृदय में उतर गई, गिरहकट ने अपनी बुराइयाँ निकालनी प्रारंभ की और सचमुच एक दिन भगवान बुद्ध का परम प्रिय शिष्य बना।

हमें दुनियादारी का बहुत ज्ञान है, पर अपने संबंध में एक प्रकार से अन्जान ही बने हुए हैं। भूगोल, इतिहास, वाणिज्य, शिल्प कला, विज्ञान, कानून, लोक व्यवहार आदि के संबंध में हमने बहुत कुछ जाना सीखा है। उसके बल पर आजीविका कमाने और प्रतिष्ठा पाने में भी एक हद तक सफल हुए हैं, पर उस सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी से वंचित ही हैं, जिसके बिना यह सारा सीखा जाना और सिखाया जाना निरर्थक है। बाहर की जानकारी और चमक दमक के आकर्षण में हम अपने को ही भूल बैठे हैं। अपना मकान बन जाने में कितनी सुविधा होगी यह कल्पना तो है, पर अपना व्यक्तित्व बन जाने से प्रगति की संभावनाएँ कितंनी प्रशस्त हो जाती हैं यह पता ही नहीं। घर, कपड़े, बर्तन, फर्नीचर एवं शरीर की सफाई का महत्त्व तो मालूम है, पर अंतःकरण की स्वच्छता के फलस्वरूप हम कितने श्रद्धा भाजन बनते हैं यह तथ्य सूझता ही नहीं। शरीर और मस्तिष्क के बलवान और सुखी बनने के लिए हर संभव उपाय करते हैं, पर आत्मबल, मनोबल, प्रतिभा, दूरदर्शिता आदि की भी कुछ उपयोगिता है, यह बात सूझ नहीं पड़ती। तृष्णा और वासना की तृप्ति में जो अधिक सुख मिलता है उसके लिए मन बहुत ललचाता है और उसे प्राप्त करने का ताना बाना निरंतर बुनता रहता है, पर यह समझ में नहीं आता कि आत्म-संतोष और आंतरिक आनंद जैसी कुछ दिव्य अनुभूतियाँ भी होती हैं और उनका भी अपना कुछ मूल्य होता है।

जो कुछ संसार में है उसकी अनुभूति हम अपने ही माप दंड से करते हैं। गुरु ने युधिष्ठिर को भेजा कि नगर में जो बुरे आदमी रहते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका पता लगाकर लाओ। वे कई दिन घूमे और तलाश करते रहे, पर उन्हें सबमें अच्छाइयाँ ही दीखीं और लौट कर गुरु को अपनी असफलता बताई। दूसरे दिन दुर्योधन भेजे गए उन्हें नगर के अच्छे आदमी ढूँढ़ने के लिए कहा गया। कई दिन की तलाश के बाद उन्होंने यही सूचना दी कि इस नगर में एक भी भला आदमी नहीं रहता। वैसे उस नगर में दोनों ही तरह के लोग रहते थे, पर अपने दृष्टिकोण के अनुरूप उपर्युक्त दोनों छात्रों को केवल एक ही प्रकार के लोग मिले। संसार जैसा भी कुछ भला बुरा दीखता है उसमें मूलतः अपना ही दृष्टिकोण काम करता है। यदि उसे सुधार लिया जाए तो विक्षोभ भरी परिस्थितियाँ संतोषजनक बन सकती हैं। हर व्यक्ति और हर परिस्थिति में कुछ उज्ज्वल पक्ष रहता है। यदि उसे ही देखा जाए, तो हमें सर्वत्र शुभेच्छा और शिक्षा बिखरी दिखाई पड़ेगी। लोगों में जो मिलता है वह ही पर्याप्त दीखेगा और क्षोभ असंतोष व्यक्त करने के स्थान पर उस स्वल्प दीखने वाले सहयोग की तौल बढ़ जाएगी।

बगल में खड़े दो गुलामों की ओर इशारा करते हुए तैमूर लंग ने कवि अहमदी से प्रश्न किया—बता सकते हो इन गुलामों की कीमत क्या होगी ? पाँच टके। अहमदी मुस्करा कर बोले। तैमूर गुस्सा होकर बोला—मैंने इन्हें चार हजार अशर्फियों में खरीदा है। अहमदी बोले—खरीदा होगा, पर संसार में जो सांसारिक बुराइयों का सामना नहीं कर सकता, उस आदमी का मूल्य पाँच टका से ज्यादा नहीं हो सकता ? तैमूर अभिमान में आकर बोला—अच्छा बताओ, मेरी कीमत क्या होगी ? इस पर अहमदी हँसे और बोले—दो टके ! तैमूर आग-बबूला हो उठा तो अहमदी ने स्पष्ट किया—जो अपनी ही बुराइयों का सामना नहीं कर सकता, वह इन गुलामों से गया-बीता ही होगा।

हमें बाहर कम और भीतर अधिक देखना चाहिए। दूसरों की समीक्षा कम और अपनी अधिक करनी चाहिए। दुनियाँ की गतिविधियों को पढने समझने से भी ज्यादा अपनी आंतरिक स्थिति और प्रकृति को समझना चाहिए। परिवार और संसार को सुधारने से ज्यादा अपने सुधार पर ध्यान देना चाहिए। आत्म चिंतन, आत्मनिरीक्षण द्वारा अपना अन्वेषण करें और देखें कि अपने गुण, कार्य, स्वभाव में क्या दोष दुर्गण हैं जिनके कारण हमें पग-पग पर व्याधियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रगति के पथ में बढ़ चलने के लिए जिस मनस्विता, प्रतिभा और चरित्र निष्ठा की आवश्यकता है उसमें जितनी कमी हो उसे पूरा करने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए क्रमबद्ध योजना बनानी चाहिए। अपने जीवनोद्देश्य को समझें। मनुष्य जन्म के पीछे छिपे ईश्वर के प्रयोजन को समझें। तदनरूप विचारणा बदलने और तदनुकूल कार्य पद्धति अपनाने का साहस उत्पन्न कर सके तो समझना चाहिए कि आत्म बोध का लाभ मिला और आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो गया।

बुरी संगत में पड़ कर एक लड़के ने किसी से कर्ज ले लिया। कर्ज चुकाने के लिए उसने घर से सोना चुराया, पर इससे उसका हृदय पश्चाताप से झुलसने लगा। सीधे कहने की तो हिम्मत नहीं हुई, पर उसने पत्र में अपने पिता को सारी बातें लिखकर क्षमा माँगी। पिता ने समझ लिया कि लड़के का हृदय शुद्ध है, तो उन्होंने क्षमा कर दिया। यही लड़का आगे चलकर गाँधी जी के नाम से विख्यात हुआ।

मनुष्य का विकास और भविष्य उसकी मनःस्थिति पर निर्भर है। जैसा बीज होगा वैसा ही पौधा उगेगा। जैसे विचार होंगे वैसे कर्म बनेंगे। जैसा कर्म करेंगे वैसी परिस्थितियाँ बन जाएँगी। भली बुरी परिस्थितियाँ अनायास ही सामने नहीं आ खड़ी होतीं। उनका अपने कर्त्तव्य से बड़ा संबंध होता है। वृत्तियों की प्रतिक्रिया परिस्थितियों के रूप में सामने आती हैं। यह तथ्य है कि वृत्तियाँ अनायास ही नहीं होने लगतीं वरन्, चिरकाल से मन में स्थित विचार पद्धति का परिणाम होती हैं।

वास्तविक पूँजी धन नहीं विचार है। वास्तविक शक्ति साधनों में नहीं, विचारों में सन्निहित है। व्यक्तित्व का निखार विचार शीलता पर अवलंबित है। सोचने के ढंग से जीवन को दिशा मिलती है और दिशा निर्धारण पर भविष्य का भला-बुरा होना निश्चित है। सच तो यह है कि आज कोई व्यक्ति जिस भी स्थिति में है वह उसके अब तक के विचारों का ही परिणाम है और भविष्य में जैसा कुछ बन सकेगा उसका आधार उसकी विचार शैली ही होगी।

कहा जाता है कि खोपड़ी में मनुष्य का भाग्य लिखा रहता है। इस भाग्य को ही कर्म लेख भी कहते हैं। मस्तिष्क में रहने वाले विचार ही जीवन का स्वरूप निर्धारित करते और संभावनाओं का ताना-बाना बुनते हैं। इसलिए प्रकारांतर से भी यह बात सही है कि भाग्य का लेखा-जोखा कपाल में लिखा रहता है। कपाल अर्थात् मस्तिष्क। मस्तिष्क अर्थात् विचार। अतः मानस शास्त्र के आचार्यों ने यह उचित ही संकेत किया है कि भाग्य का आधार हमारी विचार पद्धति ही हो सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारों की प्रेरणा और दिशा अपने अनुरूप कर्म करा लेती है। इसलिए कर्म में लिखा हो, जैसी भाषा का प्रयोग पुरातन पंथ से करते हुए भी तथ्य यही प्रकट होता है कि कर्त्तव्य अनायास ही नहीं बन पड़ता उसकी पृष्ठभूमि विचार शैली के अनुसार धीरे-धीरे मुद्दतों में बन पाती है।

ब्रह्माजी ने कुत्ता, बिल्ली, बैल, भेड़, हाथी, साँप एक-एक कर अनेक जीव बनाए और सबसे पूछते गए तुम्हारा जीवन कैसा है ? सबने यही कहा—पितामह ! कष्ट और अभावों के अतिरिक्त और कुछ भी, तो नहीं है। इस पर पितामह ने एक सर्वांगपूर्ण मनुष्य शरीर की रचना की। कुछ दिन बाद मनुष्य को बुलाकर पूछा—कहो तुम्हें तो कोई अभाव नहीं है, पर मनुष्य ने भी वही कष्ट सुनाए, जो अन्य प्राणियों ने कहे थे। पितामह बहुत दुःखी हुए और बोले—तात ! मनुष्य शरीर, मनुष्य का हृदय, मनुष्य की आत्मा देने के बाद मेरे पास कुल एक उपदेश बचा है—जाओ और अपनी सब बुराइयाँ ठीक करो तो तुम्हारे सब कष्ट दूर होंगे और कोई उपाय नहीं।

मानव के भौतिक शरीर में दिव्य तत्व का जो महान अंश विद्यमान है उसे "विचार" ही कहा जा सकता है। अध्यात्म की भाषा में उसे ही मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का अंतःकरण चतुष्टय कहते हैं।

अध्यात्म का सारा ढाँचा हमारी, विचारणा, मान्यता, आस्था, निष्ठा और आकांक्षा को परिष्कृत करने के लिए ही खड़ा किया गया है। ईश्वर, कर्मफल, पुनर्जन्म, पाप, पुण्य, स्वर्ग, नरक आदि की मान्यताएँ और पूजा उपासना, धर्म, कर्म आदि के सारे कर्मकांड, धर्मानुष्ठान इसी प्रयोजन के लिए विनिर्मित हुए हैं कि आदमी के सोचने का ढंग उच्च आदर्शों पर अवलंबित हो। कथा वार्ता, स्वाध्याय, सत्संग, धारणा, ध्यान शास्त्रदर्शन के पीछे छिपे तथ्य को समझा जाए तो उसका मूल प्रयोजन विचारों को अस्तव्यस्त दिशा में भटकने न देकर उन्हें सुसंस्कृत बनाने का ही दृष्टिकोण होगा। लोग स्वास्थ्य, शिक्षा, धन-वैभव प्रभाव, पद आदि संपत्तियों का महत्त्व तो जानते हैं, पर न जाने क्यों अभी तक यह समझ नहीं पाए कि वास्तविक संपदा तो विचारणा ही है और उसी के बल पर विभिन्न स्तर की सफलताओं तथा समृद्धियों का ताल-मेल बैठता है।

एक तहसीलदार देखने में तो बदसूरत था, पर उसकी बौद्धिक क्षमता, असाधारण थी, एक दिन एक कलक्टर ने व्यंग करते हुए कहा—जिस समय भगवान् के यहाँ सुंदरता बँट रही थी उस समय आप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहाँ थे ? तहसीलदार ने कहा—जहाँ बुद्धि बँट रही थी वहाँ ? कलक्टर इस उत्तर से बहुत लज्जित हो गया।

हमें अत्यन्त बारीकी के साथ अपनी विचार श्रृंखला पर गौर करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि उनका स्तर क्या है ? यह प्रवाह किस दिशा में बह रहा है। यदि वासना, तृष्णा, क्रोध, लालच, आवेश, ईष्या, द्वेष, अहंकार जैसी आकांक्षाओं की प्रधानता है, तो समझना चाहिए कि हमें उलझाने वाली परिस्थितियों में जकड़ा रहना पड़ेगा। अपने दोष दुर्गुणों को समझने और उन्हें सुधारने की आकाँक्षा यदि जाग पड़े, तो समझना चाहिए कि विचारों का महत्त्व समझ में आने लगा। कुविचार और असंस्कृत विचार ही मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं और वे ही पतन के गर्त में गिराते तथा प्रगति के पथ में अवरोध उत्पन्न करने के कारण हैं इसलिए दूरदर्शी लोग अपनी परिस्थिति को सुधारने से पूर्व मानसिक स्थिति को निष्पक्ष भाव से समझने और तीखी दृष्टि से यह देखने की कोशिश करते हैं कि किन अवाँछनीय, असामाजिक और अनैतिक विचारों ने मनोभूमि पर कब्जा जमा रखा है। जिस प्रकार शत्रुओं और दुष्टों द्वारा अपने ऊपर होने वाले आक्रमणों को निरस्त करने के लिए हम सतर्कता बरतते और सुरक्षात्मक तैयारी करते हैं उसी प्रकार कुविचारों की मनःक्षेत्र में कितनी जड़ जम गई है उसे देखने और उखाड़ने के लिये प्रबल प्रयत्न किया जाना चाहिए। आत्मशोधन को सबसे बड़ा पुरुषार्थ माना गया है जिससे चितवृत्तियों की चंचलता और कुपथगामिता पर नियंत्रण कर लिया जाना चाहिए। बाहरी शत्रुओं से निपटना सरल है, क्योंकि वे दिखाई पड़ते हैं किंतु आंतरिक शत्रु समझ में नहीं आते, दीखते भी नहीं, इसलिए उनकी ओर ध्यान भी नहीं जाता और निपटने की आवश्यकता भी अनुभव नहीं होती। इसी उपेक्षा में वे अपनी जड़ें गहराई तक जमाते चले जाते हैं और क्रमशः सारे चिंतन तंत्र पर कब्जा करके मनुष्य को गई गुजरी स्थिति में ला पटकते हैं।

बंदर नदी में तैर रहा था, तभी मगर ने उसकी टाँग पकड़ ली। बन्दर हँसा और बोला—बहुत खूब मगर जी ! लकड़ी का टूँठ पकड़ कर सोच रहे हो कि बंदर पकड़ लिया। मगर ने अपनी बेवकूफी समझकर पाँव छोड़ दिया। जो विपत्ति में धैर्य रखकर विचार करते हैं, वह अनेक संकटों से भी पार पा लेते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस प्रकार हम दूसरे लोगों की समीक्षा करते हैं दोष ढूँढ़ते और आलोचना निंदा किया करते हैं इसी तरह वरन् उससे भी अधिक कड़ाई के साथ अपने विचार संस्थान की—गुण कर्म, स्वभाव की परख करनी चाहिए। यह क्रम आत्म चिंतन के लिए एक नियत निर्धारित समय पर नित्य ही चलाना चाहिए। असत्य, छल, निष्ठुरता, व्यभिचार, बेईमानी आदि असामाजिक अपराधों पर ही नहीं आलस्य, प्रमाद, आवेश, असहिष्णुता, कटुभाषण, अशिष्टता, अधीरता, चिंता, निराशा, कायरता आदि व्यक्तिगत दुर्गुणों पर भी नजर रखनी चाहिए और उन्हें हटाकर प्रतिपक्षी सद्विचारों और सद्भावना की मनोभूमि में प्रतिष्ठापित करने का वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए जैसे चतुर किसान अपने सबसे अच्छे खेत में सबसे अच्छा बीज बोकर सबसे अच्छी फसल उगाने का लाभ प्राप्त करता है।

एक बंदर पकड़ में नहीं आ रहा था। अंत में मदारी ने एक युक्ति निकाली, उसने एक सँकरे मुँह का घड़ा लिया और उसमें बंदर को दिखा-दिखाकर तमाम रोटियाँ भर दीं। घड़े को छोड़कर आप छिपकर बैठ गया। बंदर ने आकर घड़े में हाथ डाला और मुट्ठी भर रोटी पकड़कर हाथ निकालना चाहा, तो हाथ घड़े के मुँह से बाहर न निकला। बंदर इसी तरह खीझ-खीझ कर हाथ निकालने का प्रयत्न करता, न निकलने पर अपने ही हाथ को चबाता रहा। थक गया तो मदारी ने आकर पकड़ लिया। यह था विचारशीलता और अबुद्धिमत्ता का अंतर।

चोर पर निगाह रखने में उसे चोरी करने का अवसर नहीं मिलता और अपनी हानि बच जाती है। उसी प्रकार अपने अनुदार दुर्गुणों पर भी सतर्क रहा जाए और उनके आक्रमण का अवसर न आने देने के लिए पहले से ही सावधानी रखी जाए तो वे ईंधन न मिलने पर बुझ जाने वाली आग की तरह समाप्त हो जाते हैं। जो विचार अभ्यास में आते और क्रियान्वित होते हैं उन्हीं की जड़ जमती है। बुरे विचारों को चित्त क्षेत्र में प्रवेश न करने दिया जाए और उनके स्थान पर तुरंत प्रतिरोधक उच्च विचार प्रस्तुत कर दिए जाए तो चोर जैसी स्थिति के आसुरी विचारों के पलायन करते ही बनेगा। वे तभी तक ठहरते हैं जब तक कि उनका प्रबल प्रतिरोध नहीं होता, श्रेष्ठ विचारों को चिंतन क्षेत्र में स्थान मिले और उन्हें कार्यान्वित होने के अवसर मिलते रहें, तो कोई कारण नहीं कि वे हमारे गुण, कर्म, स्वभाव में सम्मिलित न हो जाएँ और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत न करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक घर में चोर घुसे और गृहपति को मार-मार कर पूछने लगे—तुम्हारा खजाना कहाँ है ? घर का मालिक पिट रहा था और तरह-तरह की अनुनय-विनय कर रहा था। यह देखकर उसकी बुद्धिमान स्त्री बोली—आओ तुम्हें मैं खजाना दिखाती हूँ यह कहकर वह उन्हें तहखाने में ले गई। वहाँ पहुँच कर बोली—अरे चाबी तो ऊपर ही रह गई यह कहकर वह ऊपर आई और दरवाजा बंद कर दिया। पुलिस को बुलाकर—उसने चोरों को पकड़वा दिया। पुलिस वालों ने संकट में भी धैर्य और बुद्धि से काम लेने से स्त्री के गुण की बड़ी प्रशंसा की।

विचार निर्माण में सहायता करने वाले सत्साहित्य का क्रमबद्ध स्वाध्याय इस प्रयोजन के लिए नितांत आवश्यक है। सद्विचार संपन्न, चरित्रवान उत्कृष्ट गतिविधियों में संलग्न व्यक्तियों का सत्संग भी बहुत सहायक सिद्ध होता है। भूलों के लिए अपने आपको एकांत में कान ऐंठने, उठक-बैठक करने, चाँटे लगाने, मुर्गा बनने, भोजन में कटौती करने जैसे शारीरिक दंड दिए जा सकते हैं। अगले दिन उन पिछले दिन वाली भूलों को न होने देने के लिए प्रातःकाल में ही निश्चय कर लिया जाये, दिन भर सतर्कता रखी जाए और रात को भूलों का लेखा-जोखा लेकर प्रायश्चित किया जाए तो यह प्रक्रिया थोड़े ही दिनों में हमारी विचार शक्ति को परिष्कृत कर देगी। विवेक, औचित्य, तर्क, प्रमाण वस्तुस्थिति का निष्पक्ष भाव से पता लगाने का क्रम यदि चलता रहे, तो बहुत सी भ्राँतियाँ सहज ही दूर हो सकती हैं और सुसंतुलित विचारणा के आधार पर शांति, समृद्धि, प्रगति और महानता की दशा में तेजी से बढ़ा जा सकता है।

प्रश्न

१. हमारा सीखा जाना और सिखाया जाना किस तरह निरर्थक है ?
२. हमको अपना महत्त्व समझना था, पर हमने किन चीजों का महत्त्व समझा ?
३. हम किन चीजों के प्राप्त होने से सुविधा अनुभव करते हैं ?
४. हम हमारे में ही उपस्थित किन चीजों का महत्त्व भूल गए हैं ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

५. सिद्ध कीजिए कि आप सबसे महत्त्वपूर्ण है ?
६. जो कुछ संसार में है, उसकी अनुभूति हम अपने ही मानदंड से करते हैं ? उदाहरण से समझाइए ?
७. संसार में बिना किसी से टकराए किस प्रकार मनुष्य अपना गुजारा कर सकता है ?
८. बीमारियाँ कैसे आती हैं ? तथा उनसे निपटने का रास्ता क्या है ?
९. विद्वानों की पंक्ति में किस प्रकार बैठा जा सकता है ?
१०. हमें अपना महत्त्व ज्ञात करने के लिए क्या करना चाहिए ?
११. मनुष्य का विकास किस बात पर निर्भर है ?
१२. विचार धन से भी बड़ी शक्ति है—सिद्ध करो ?
१३. कर्तृत्व की प्रेरणा कहाँ से आती है ?
१४. मनुष्य शरीर का जादू किसे कहते हैं, क्यों ?
१५. "विचार" शक्ति का आध्यात्मिकता से क्या संबंध है ?
१६. विचारों की परख किस तरह की जाए और उन्हें कैसे सुधारा जाए ?
१७. आत्मालोचन क्यों आवश्यक है ?
१८. बुरे विचारों से किस तरह बचा जा सकता है ?
१९. विचारों के उत्पादन का स्त्रोत क्या है ?
२०. विचारों की भूल का प्रायश्चित-परिमार्जन कैसे किया जाए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आलस्य त्यागें और समय का सदुपयोग करें

जीवन के सदुपयोग की समस्या, हमारी सबसे बड़ी, महत्त्वपूर्ण और सबसे सारगर्भित समस्या है। दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता का तकाजा है कि उसे सुलझाया जाए। उसे उलझी हुई छोड़कर बालक्रीड़ा में दिन गुजारते रहना इतनी बड़ी भूल है कि जिसके लिए चिरकाल तक असीम पश्चाताप करने के अतिरिक्त और उपचार न रह जाएगा।

दक्षिण अफ्रीका में एक आंदोलन के सिलसिले में एक सत्याग्रही जोहान्स वर्ग की जेल में बंद कर दिया गया। जेल में जो काम दिया जाता, अन्य साथी तो धींगा मुश्ती करते, पर वह वहाँ भी पूरा परिश्रम करते। कोई काम न मिलता तो वे पुस्तकें ही पढ़ा करते। एक बार गवर्नर का मुआयना हुआ, उनसे पूछा—आपको कष्ट तो नहीं है, पर यहाँ पूरी तरह काम नहीं मिलता—हैरान गवर्नर ने पूछा—यहाँ दूसरे लोग काम से जी चुराते हैं, तब भी आप काम क्यों करना चाहते हैं ? उन्होंने उत्तर दिया—इसलिए कि कहीं मेरी जीवनी शक्ति नष्ट न हो जाए ? गवर्नर बड़ा प्रभावित हुआ। यह व्यक्ति गाँधी जी थे।

शरीर और परिवार के निर्वाह भर के लिए ही अपने पास शक्ति सामर्थ्य हो सो बात नही है वरन् बारीकी से सोचा जाए तो प्रतीत होगा कि उसके अतिरिक्त भी हमारे पास कितना समय, धन एवं बल शेष रह ही जाता है जिसे चाहें तो आत्मिक प्रयोजन की पूर्ति के लिए, ईश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए, जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नियोजित कर सकते हैं। बाधा इतनी ही है, कि अज्ञान के आवरण ने हमें इस बुरी तरह जकड़ रखा है कि इंद्रियों की वासना, मन की तृष्णा एवं कुटुंबियों की अवाँछनीय मोह ममता के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं। औचित्य का तकाजा यह है कि हम निर्वाह और सामाजिक कर्त्तव्य का पालन करने में जितनी शक्ति शरीर और परिवार के लिए लगाएँ उन्हें उचित प्रगाति करते रहने लायक बनाए रहें और शेष सामर्थ्य को जीवनोद्देश्य के लिए लगाएँ। जीवन को शरीर और आत्मा का सम्मिलित व्यवसाय माना जाना चाहिए और दोनों को उसका समान लाभ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलना चाहिए। शरीर और उसका परिवार तो उपार्जन का सारा लाभ उठाता रहे और आत्मा के हाथ कुछ भी न लगे तो इसे अनीति ही कहा जाएगा। विवेकशीलता इसमें है, कि दोनों के हित का ध्यान रखा जाए। शरीर की लालसाओं और आवश्यकताओं को पूरा किया जाए पर आत्मा की भूख, शांति और प्रगति को सर्वथा उपेक्षित न छोड़ दिया जाए। हमें अपने अंतःकरण में बैठे भगवान की आवाज सुननी चाहिए और उस निर्देश के लिए भी अपना कुछ कर्त्तव्य निर्धारित रखना चाहिए। ऐसा उभयपक्षी संतुलित जीवन ही सार्थक कहा जा सकता है। अन्यथा आत्मा के हितों को पददलित करते रहने और सारा मनोयोग काया-माया पर ही निछावर कर देने की रीति-नीति अन्ततः मूर्खतापूर्ण सिद्ध होगी और मँहगी पड़ेगी।

गरुड़ ने हंस से पूछा—बंधु ! राजा परीक्षित ने एक बार भागवत की कथा सुनी और स्वर्ग चले गए, पर आजकल तो लोग हजार बार सुनकर भी नरक में ही पड़े रहते हैं। हंस ने हँसकर कहा—भाई गरुड़ ! परीक्षित ने कथा सुनी ही नहीं थी, मन में बिठाई, आत्मा में उतार ली थी, इसलिए वे मुक्त हो गए, पर आज तो लोग मनोरंजन के लिए कथा सुनते हैं—आत्म-कल्याण की इच्छा से नहीं।

जीवन और मृत्यु को सहचर बनाकर चलने की भावना यदि मन में बनी रहे तो यह ध्यान बना रहेगा कि वर्तमान अवसर सदा ही बना रहेगा। जो सुविधा आज मिली है उसका अधिक से अधिक सदुपयोग किया जाए। इसका एक प्रयोग यह है, कि सवेरे आँख खुलते ही कुछ क्षण बिस्तर पर पड़े हुए यह विचारें कि आज हमारा नया जन्म हुआ है और रात को सोते समय तक समाप्त हो जाने वाला है, इसलिए उस एक दिन को जीवन मान कर उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग कर लिया जाए। हर दिन नया जन्म हर रात नई मौत, इस मंत्र को जपने की जरूरत नहीं, इसे हृदयंगम किया जाना चाहिए और इसी आधार पर दिनचर्या एवं मनोदिशा निर्धारित की जानी चाहिए।

इस क्रम से यदि नित्य हर नया दिन नया जन्म, हर रात नई मौत की भावना करते हुए दिन बिताए जाएँ तो जीवनोद्देश्य के लिए आशाजनक प्रगति होती चली जाएगी। (१)) दोष दुर्गुणों का निवारण और गुण, कर्म, स्वभाव में सत्प्रवृत्तियों का समावेश (२) कुत्साओं और कुंठाओं में डूबे हुए मानव समाज का पिछड़ापन दूर करने वाले लोक मंगल प्रयत्नों में अधिकाधिक तत्परता, इन दो लक्ष्यों की ओर हम जितना ध्यान देंगे, उतनी ही जीवन की सार्थकता अनुभव होती चली जाएगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नौशेखाँ ने एक वृद्ध से पूछा—आपकी आयु क्या होगी ? "पाँच वर्ष" वृद्ध ने उत्तर दिया। नौशेखाँ ने समझा बूढ़े को मजाक सूझ रही है, सो उसने थोड़ा नाराज होकर कहा—बाल पक गए, शरीर हिल रहा है और आप अपने को पाँच वर्ष का बता रहे हैं। वृद्ध ने कहा—महाराज ! पिछली जिंदगी, तो मैंने यों ही बेसमझी में बिता दी, पिछले पाँच वर्ष से ही जीवन में नियमितता आई है, इसलिए मैं पाँच वर्ष का ही तो हुआ। नौशेखाँ इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ और उस दिन से युक्तिपूर्वक जीवन जीने लगा।

आलस्य और दुर्भाग्य एक ही वस्तु के नाम हैं। जो आलसी हैं, न श्रम का महत्त्व समझता है, न समय का मूल्य, ऐसे मनुष्य को कोई सफलता नहीं मिल सकती। सौभाग्य का पुरुस्कार उनके लिए सुरक्षित है, जो उसका मूल्य चुकाने को तत्पर हैं। यह मूल्य कठोर श्रम के रूप में चुकाया जाता है। समय ही भगवान की दी हुई संपदा है। हमारी हर श्वाँस बड़ी मूल्यवान है। यदि प्रस्तुत क्षणों का ठीक तरह उपयोग करते रहा जाए तो बूँद-बूँद से घट भरने की तरह अगणित सफलताएँ और समृद्धियाँ अनायास ही इकट्ठी होने लगेंगी, पर यदि समय को आलस्य में व्यर्थ गँवाते रहा गया तो फूटे बर्तन में से बूँद-बूँद टपकने वाले दूध की जैसी दुर्गति होगी। हम सुख-सुविधाओं और संपदाओं से वंचित होते चले जाएँगे और केवल दरिद्रता और दुर्भाग्य भरा पश्चाताप हाथ रह जाएगा। विजयलक्ष्मी केवल पुरुषार्थी का वरण करती है। आलसी का भविष्य तो दुर्भाग्य का रोना रोने के लिए है।

जिन्हें अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने में दिलचस्पी हो, जिन्हें कुछ महत्त्वपूर्ण सफलताएँ पानी हों, उन्हें कठोर परिश्रम करने की आदत डालनी चाहिए और समय के एक-एक क्षण को व्यस्त रखने के लिए तत्पर रहना चाहिए। प्रगतिशील राष्ट्रों के नागरिक घोर परिश्रमी होते हैं। जिन समाजों ने अपना वर्चस्व प्रतिपादित किया है, उनका जातीय गुण कठोर श्रम करने में रस लेना रहा है। जिन व्यक्तियों ने उत्कर्ष किया है, उन्होंने अपना एक-एक क्षण कड़ी मेहनत के साथ गुजारा है।

जापान की एक अमरीकी फर्म के मालिक ने जापानियों को खुश करने के लिए सप्ताह में एक दिन की छुट्टी बढ़ा दी। इस पर जापानियों ने सत्याग्रह कर दिया। मालिक बड़ा हैरान हुआ, उसने सत्याग्रह प्रमुखों से पूछा—भाई ! क्या बात है ? क्यों सत्याग्रह कर रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो ?" एक युवक बोला—"एक दिन की छुट्टी बढ़ाकर आप हमारी परिश्रम की आदत बिगाड़ना चाहते हैं और हम पर अपव्यय, मटरगस्ती की बुराइयाँ लादना चाहते हैं।" आखिर में एक दिन की छुट्टी का आदेश फर्म मालिक को वापस ही लेना पड़ा।

संसार में अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने अनेक महान सफलताएँ संपादित की हैं। उनमें मूलतः कोई योजना एवं प्रतिभा न थी। सामान्य मनुष्यों जैसा ही शरीर और मन उनका भी था, पर एक गुण उन्होंने अपने में उत्पन्न किया, श्रम में रस लेना और निरंतर मेहनत में संलग्न रहना। बस इस एक गुण ने ही उनकी प्रतिभा को निखारा, अनेक सद्गुण पैदा किये और विद्या, बुद्धि, धन, स्वास्थ्य, सहयोग एवं सुविधा-साधनों से उन्हें भरा-पूरा बना दिया। जिस काम को हम मेहनत, लगन और दिलचस्पी के साथ हाथ में लेते हैं, वह चमकने लगता है। जिसे बेगार भुगतने की तरह आधे मन से करते हैं, वह बिगड़ता और घटिया होता है। यही प्रगति का रहस्य है। जो आगे बढ़ना चाहता हो, ऊँचा उठना चाहता हो, उसे यह गुरु-मंत्र गाँठ बाँध लेना चाहिए कि "निरंतर कठोर श्रम करने में रस लिया जाए और एक क्षण भी व्यर्थ बर्बाद न किया जाए।"

आराम की ऐसी जिंदगी जिसमें कुछ काम न करना पड़े केवल निर्जीव, निरुद्देश्य और निकम्मे लोगों को रुचिकर हो सकती है। वे ही उसे सौभाग्य गिन सकते हैं। प्रगतिशील महत्त्वकाँक्षी लोगों की दृष्टि में तो यह एक मानसिक रुग्णता मात्र है, जिसके कारण व्यक्ति का भाग्य, भविष्य, बल और वर्चस्व निरंतर घटता ही जाता है। अपने देश का दुर्भाग्य श्रम के प्रति उपेक्षा करने की दुष्प्रवृत्ति के साथ आरंभ हुआ है और वह तब तक बना ही रहेगा जब तक कि हम प्रगतिशील लोगों की तरह परिश्रम के प्रति प्रगाढ़ आस्था उत्पन्न न करेंगे।

अपने यहाँ लड़कियाँ वे सुखी मानी जाती हैं, जिन्हें हाथ से कुछ काम न करना पड़े। नौकर नौकरानी सब काम किया करें और उन्हें आराम के दिन गुजारने का अवसर मिले। ऐसी महिलाएँ सदा शारीरिक और मानसिक दृष्टि से रुग्ण ही बनी रहेंगी। प्रसव के समय उन्हें बहुत कष्ट सहना पड़ेगा। आये दिन जुकाम, बदहजमी, सिर-दर्द आदि दूसरी किस्म की बीमारियाँ घेरे रहेंगी। डाक्टरों के मंहगे बिल चुकाने पड़ेंगे और इन्जेक्शनों के दर्द-दंड सहन करने पड़ेंगे। श्रमशील महिलाएँ निरोग रहती और स्वस्थ एवं दीर्घजीवी संतानें उत्पन्न करती हैं। आरामतलबी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भ्रमवश सौभाग्य भले ही मान लिया जाए, अंततः वह गरीब मजदूरों के पल्ले पड़ने वाले असुविधाओं से भी मँहगी पड़ती है।

यूनान के महापुरुष डायोथिनीज का नौकर बिना सूचना दिए कहीं भाग गया। तब वे अपने घर की झाड़ू-बुहारी से लेकर कपड़े धोने का काम स्वयं करने लगे। एक दिन एक मित्र ने कहा—आप इतना कष्ट क्यों उठा रहे हैं, नौकर को ढुँढ़वा मँगाइए। डायोथिनीज हँसकर बोले—भाई मेरा नौकर मेरें बिना रहता है और मैं उसके बिना न रह पाऊँ, यह शर्म की बात है न ? मुझे दासानुदास बनना स्वीकार नहीं।

अपने यहाँ रईस, अमीर, संत, महंत, विद्वान, कलाकार अक्सर शारीरिक श्रम से बचना चाहते हैं, फलतः वे रुग्ण बने रहते हैं और प्रस्तुत प्रतिभा से जो अपना और दूसरों का हित साधन कर सकते थे, नहीं कर पाते। धोबी, मोची, राज, मजूर, चमार, कुम्हार, श्रमजीवी वर्ग को अपने यहाँ नीच समझा जाता है। मेहनत करने वाले नीच, आरामतलब ऊँच। इस मान्यता ने हमारे समाज में हरामखोरी को प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप हम दरिद्र होते चले गए। दूसरी ओर रूस, ब्रिटेन, जापान और अमेरिका आदि समृद्ध देशों के नागरिकों में कठोर श्रम में भारी अभिरुचि लेने की प्रवृत्ति को देखते हैं तो सहज ही यह पता चल जाता है कि उनकी समृद्धियों और सफलताओं का कारण क्या है ? हालैंड, डेनमार्क, युगोस्लाविया आदि कितने ही देशों की समृद्धि वहाँ के महिला वर्ग की श्रमशीलता पर ही निर्भर है। हमें भी यदि वर्तमान अज्ञान और दरिद्रता के दुःखदायी चंगुल से छूटना हो तो देश के हर नागरिक में कठोर श्रम करने की, आलस्य से घृणा करने की, और समय का एक भी क्षण व्यर्थ न गँवाने की—प्रवृत्ति उत्पन्न करनी चाहिए।

चार्ल्स डिकन्स को निबंध लिखने का शौक था। वे उन्हें लिखते और फाड़ देते। इसी बीच उन्हें कर्ज न चुका सकने के कारण जेल हो गई। जेल में सब सो जाते, तब वे चुपचाप लिखते। लिखने का अभ्यास उन्होंने नहीं छोड़ा। एक दिन किसी ने इनका निबंध पढ़ा तो वह बहुत अच्छा लगा, उसे एक पत्रिका में छपने भेज दिया। संपादक ने लेखक का नाम अज्ञात होने पर भी उस कलम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। फलतः डिकन्स का हौसला बढ़ गया। अब वे प्रकाश में आ गए और विपुल धन तथा यश अर्जित कर दिखा दिया। समय का सदुपयोग कितनी कीमती वस्तु है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"खाली मस्तिष्क शैतान की दुकान" की कहावत सोलह आने सच है। जो फालतू बैठा रहेगा उसके मस्तिष्क में अनावश्यक और अवाँछनीय बातें घूमती रहेंगी और कुछ न कुछ अनुचित, अनुपयुक्त करने तथा उद्विग्न, संतप्त रहने की विपत्तियाँ मोल लेगा। जो व्यस्त हैं, उसे बेकार की बातें सोचने की फुरसत नहीं। गहरी नींद भी उसी को आती है, कुसंग और दुर्व्यसनों से भी वही बचा रहता है। जो मेहनत से कमाता है, उसे फिजूलखर्ची भी नहीं सूझती। इस प्रकार परिश्रमी व्यक्ति अनेक दोष-दुर्गणों से बच जाता है।

विदेशों में लोग अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर दो घंटा रोज रात्रि पाठशालाओं में पढ़ने जाते रहते हैं। मामूली श्रमिक और छोटी स्थिति के लोग यह क्रम चलाते रहने पर दस-बीस वर्ष में एम० ए० आदि की उच्च परीक्षाएँ पास कर लेते हैं। जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान एण्डरसन ने एक घंटा रोज अन्यान्य भाषा सीखने के लिए निर्धारित किया, और वे तीस वर्ष में संसार की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं के विद्वान बन गए। अपने देश में संत विनोवा भावे २३ भाषाओं के विद्वान कहे जाते हैं। यह ज्ञान उन्होंने अपने व्यस्त कार्यक्रम में से थोड़ा सा समय उपर्युक्त ज्ञान संपादन के लिए नियमित रूप से लगा कर ही उपलब्ध कर लिया। यह रास्ता हर किसी के लिए भी खुला पड़ा है।

व्यापार में हानि, उद्योग में घाटा, मुकद्मे में हार और लगातार चार-पाँच चुनावों के बाद भी जब अब्राहम लिंकन फिर सीनेट के चुनाव में खड़े हुए, तो एक व्यक्ति ने पूछा—जब आपको कोई सफलता नहीं मिलती, तो क्यों परेशान होते हैं। लिंकन बोले—जब समय नहीं थकता, तो हम अपने प्रयत्न से क्यों थकें। लिंकन चुनाव तो वह भी हार गए, पर एक दिन उन्हें अमरीका का राष्ट्रपति बनने का सौभाग्य मिल ही गया।

आलस्य और प्रमाद में हम बहुत समय गँवाते हैं। जो काम जितनी देर में हो सकता है, सुस्ती और आधे मन से करने पर वह उससे दूने चौगुने समय में होता है। मुस्तैद और फुर्तीला मनुष्य एक घंटे में दाल रोटी बना खाकर निश्चित हो सकता, पर आलसी ढीला और मंदचर व्यक्ति उसी काम को अव्यवस्थित ढंग से करते रहने पर आधा दिन गुजार देगा। लोग ऐसे ही ऊँघते, सुस्ताते जैसे-तैसे करते धरते, छोटे-छोटे थोड़े से कामों में अपना सारा समय बर्बाद कर लेते है। जब कि मुस्तैद और समय का मूल्य समझने वाले व्यक्ति उतने से समय में दस गुने काम निपटा कर रख देते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिथिलता से समय सिकुड़ता और मुस्तैदी से फैलता है, रबड़ खींचने से लंबी हो जाती है और छोड़ने से सिकुड़ जाती है। इसी प्रकार ढीले पाले मन और शरीर को लेकर काम करने से बहुत थोड़ा ही परिणाम निकलता है, पर मन और शरीर को एक जुट करके उत्साह के साथ तत्परता दिखाई जाए, तो थोड़े समय में कितना अधिक काम कितनी खूबसूरती के साथ संपन्न होता है उसका चमत्कार कहीं भी देखा जा सकता है।

एक लड़के को पढ़ने को बहुत कहा जाता, पर वह ध्यान ही नहीं देता किंतु एक दिन अकस्मात दुर्घटना हो गई उसमें एक टाँग टूट गई। अब इस लड़के के प्रति कोई सहानुभूति व्यक्त करने आता, तो वह उससे जल्दी ही छुटकारा लेकर पढ़ने में लगा रहता। फिर उसने लेखनी उठाई, तो विश्व-विख्यात साहित्यकार एच० जी० वेल्स के नाम से विख्यात हुआ।

सामान्यतः रोटी कमाने के लिए आठ घंटे, सोने के लिए सात घंटे, नित्य कर्म के लिए २ घण्टे माने जाएँ तो कुल मिलाकर १७ घंटे हुए। २४ घंटे में से ७ घंटे फिर भी बचते हैं, जो लगभग एक पूरे काम के दिन के बराबर होते हैं। व्यक्ति चाहे तो इन ७ घंटों को किसी भी अभिरुचि के विषय में लगाकर आशातीत सफलता प्राप्त कर सकता है। दो-तीन घंटे नियमित व्यायाम में लगाने वाले कुछ ही दिन में पहलवान बन जाते हैं। दो-तीन घंटा रोज स्वाध्याय करने वाले अपने विषय में कुछ ही वर्षों में निष्णात हो जाते हैं। स्कूली परीक्षाएँ पास करते जाने के लिए सामान्य बुद्धि की व्यक्ति के तीन घंटे का परिश्रम काफी है। रोजी-रोटी कमाते हुए उतना समय आसानी से निकाला जा सकता है। शर्त इतनी है कि किसी विषय में सच्ची रुचि हो और समय को नियमित रूप से लगाने का दृढ़ संकल्प कर लिया गया हो।

लोक सेवा, आत्मिक आकाँक्षाओं की तृप्ति के लिए, जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए, कुछ समय लगाया जाना आवश्यक है। यह भी यदि कोई चाहे तो इसी बचे हुए सात घंटे के समय में से आसानी के साथ लगा सकता है। पिछले स्वाधीनता संग्राम के नेताओं तथा कार्यकर्ताओं में से अधिकांश ऐसे थे जो अपनी रोजी-रोटी भी कमाते थे और उस आंदोलन में बढ़-चढ़ का हाथ बँटाते थे। अभी भी युग-निर्माण आंदोलन के अनेक कार्यकर्ता अत्यधिक व्यस्त कार्यक्रम में से बहुत सारा समय निकालकर उतना काम कर डालते हैं जितना कि पूरे आठ घंटे काम करने वाला कर्मचारी भी नहीं कर सकता। यह केवल लगन और मनोयोग का चमत्कार है। समय सबके पास २४ घंटे होता है, पर जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके सदुपयोग का महत्त्व समझते हैं और थोड़े से भी समय की बर्बादी को अपनी भारी क्षति समझते हैं, उनके लिए उतने ही समय में आश्चर्यजनक मात्रा में काम कर सकना संभव होता है।

एक राजा एक साधु के पास जाकर बोला—महाराज ! किसी काम के लिए उपयुक्त समय कौन-सा है ? यह कैसे जाना जाए ? साधु क्यारी गोड़ते रहे बोले कुछ नहीं। राजा ने दूसरे दिन भी वहीं प्रश्न किया। साधु फिर भी कुछ न बोलकर पौधे लगाते रहे। शाम को फिर राजा साधु के पास जाकर बोले—महाराज ! आपने तो प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। पौधों को पानी लगाते हुए साधु बोले—पहले भी उत्तर दिया और अभी भी दे रहा हूँ। तुम समझते नहीं तो क्या करूँ ? राजा ने समझा-जो काम सामने है, उसे अभी पूरा करना सबसे अच्छा अवसर है।

फुरसत न मिलने की बात का सिर्फ इतना ही तात्पर्य है कि उस कार्य में दिलचस्पी कम है अथवा हल्के दर्जे का बेकार काम माना गया है। जिस काम को हम महत्त्वपूर्ण समझते हैं उसे अन्य कामों से आगे की पंक्ति में रखते हैं और उसके लिए पर्याप्त समय आसानी से निकल आता है। थकान भी उन्हीं कार्यों में आती है जिन्हें बेकार समझकर किया जाता है। किसान १४ घंटे काम करता है, सो भी एक दिन नहीं जीवन भर। पान और दूध की दुकान वाले १४ घंटे दुकान खोले बैठे रहते हैं सो भी एक दिन नहीं जीवन भर, पर न उन्हें थकान आती है न ऊब, कारण उनकी दिलचस्पी भर है। यदि हम जीवनोत्कर्ष के महत्त्वपूर्ण कार्यों में दिलचस्पी पैदा करें, तो उसके लिए समय की कमी न रहेगी। नियमितता और व्यवस्था से भरी दिनचर्या बनाकर कोई भी व्यक्ति समय का सदुपयोग कर सकता है।

प्रश्न

१. जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या क्या है ?
२. जीवन लक्ष्य की प्राप्ति में प्रमुख बाधा क्या है ?
३. जीवन को क्या माना जाना चाहिए ? विवेकशीलता का तकाजा क्या है ?
४. किस जीवन को सार्थक माना जा सकेगा ?
५. आध्यात्मिक प्रगति के कौन-कौन से पक्ष हैं ?
६. दिनचर्या बनाने व डायरी लिखने की आवश्यकता क्यों है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

७. ऋद्धि-सिद्धियाँ एवं सफलतायें पाने का रहस्य क्या है ?
८. प्रगतिका सोपान क्या है ?
९. स्वयं को सुधारने में किस प्रकार के प्रयोग करने चाहिए ?
१०. जीवन की सार्थकता कैसे अनुभव की जा सकती है ?
११. मानव जीवन की महान संभावनाएँ किस में छिपी हैं ?
१२. विजय लक्ष्मी की प्राप्ति के उपाय बताइए ?
१३. सफलता की कुंजी क्या है ?
१४. उज्ज्वल भविष्य कैसे बन सकता है ?
१५. मानव का सबसे बड़ा शत्रु कौन है ?
१६. महान बनने का सर्वश्रेष्ठ साधन क्या है ?
१७. प्रगति का रहस्य क्या है ?
१८. निरन्तर प्रगति एवं उन्नति का "गुरु मंत्र" क्या है ?
१९. सिद्ध कीजिए कि आलसी हरामखोर और परिश्रमी प्रतिष्ठावान होता है।
२०. समृद्ध एवं समुन्नत बनने का रहस्य क्या है ?
२१. मनुष्य जीवन की सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु क्या है ?
२२. हर क्षेत्र में सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचने का रहस्य क्या है ?
२३. जीवन में एकीकरण एवं केंद्रीयकरण की आवश्यकता क्यों है ?
२४. थोड़े समय में अभीष्ट प्रगति करने का मूल मंत्र क्या है ?
२५. एण्डरसन ने संसार की सभी भाषाएँ कैसे सीखीं ?
२६. क्या कारण है कि लोग जीवन में महान बन जाते हैं ?
२७. नियमित एवं निरंतर काम करने से क्या लाभ है ?
२८. आदर्श दिनचर्या बनाइए ?
२९. लगन एवं मनोयोग से ही बड़े लाभ हैं ? सिद्ध करें।
३०. फुरसत न मिलने का बहाना बे बुनियाद कैसे है ? सिद्ध करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अवरोध से अधीर न हों

हमारी इच्छानुसार सारी परिस्थितियाँ बनती चलें और हर आदमी हमारी मनमर्जी का बनकर रहे यह असंभव है। धूप-छाँह की तरह—दिन और रात की तरह, हमारा जीवनरूपी वस्त्र सुविधा और असुविधा के, अनुकूलता और प्रतिकूलता, सफलता और असफलता के ताने-बाने से बुना हुआ है। सरसता और शोभा, प्रगति और स्पर्धा यहाँ इसी कारण है कि संसार में विशेषताएँ बहुत हैं। यदि यहाँ केवल सुविधाएँ, सफलताएँ, अनुकूलताएँ ही बनाई गई होतीं और असुविधा, असफलता एवं प्रतिकूलता का किसी को सामना न करना पड़ता, तो यह संसार बड़ा नीरस हो जाता। केवल मिठाई ही खाने को मिले, नमक, मिर्च, खटाई आदि कोई स्वाद चखने को न मिले, तो भोजन का सारा आनंद ही चला जाए। भगवान को अपना संसार सरस बनाना है, अतः उसमें प्रतिस्पर्धा, पुरुषार्थ, सूझ-बूझ एवं संतुलन को विकसित करने की ऐसी गुंजायश रखी है कि हर किसी को कुछ करने और कुछ सोचने की आवश्यकता अनुभव होती रहे। प्रगति का मार्ग संघर्ष ही तो है। संघर्ष परिस्थितियों से किया जाता है। यदि प्रतिकूलता न हो तो संघर्ष किससे किया जाए ? सूझ-बूझ, संतुलन एवं समाधान के लिये प्रतिभा कैसे विकसित हो ? इस आंतरिक विकास के बिना अपूर्णता से संघर्ष करते हुए पूर्णता का लक्ष्य कैसे पूरा हो ? उलझनों को सुलझाने के बहाने मनुष्य अपने बुद्धि-कौशल को बढ़ाने संसार की वस्तुस्थिति को समझने, धैर्य और साहस का परिचय देने एवं परिस्थिति के अनुरूप अपने को लचकदार बनाने एवं व्यक्तित्व को प्रखर एवं ज्योतिर्मय बनाने में समर्थ होती हैं। चाकू शान के पत्थर पर घिसे बिना न तो तेज होता है न चमकता है। कठिनाइयों, अभावों, प्रतिकूलताओं, और संघर्षों का सृजन इसीलिए हुआ है कि उससे टकराकर मनुष्य अपनी क्षमता और प्रतिभा का विकास करते हुए आत्म-बल और मनस्विता की महान विभूतियाँ अधिकाधिक मात्रा में संग्रह करता रहे।

पांडव अज्ञातवास कर रहे थे, एक दिन उन्हें बेहद प्यास लगी, पानी के लिए नकुल को भेजा गया। नकुल एक सरोवर के पास पहुँचे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसमें एक यक्ष रहता था। यक्ष वहाँ जो भी पहुँचता उसी से कुछ प्रश्न पूछता। जो प्रश्नों का उत्तर नहीं देता वह पानी नहीं पी सकता था।

यक्ष ने नकुल से भी प्रश्न किया, पर नकुल बेहद प्यासे थे, वे अधीर हो उठे और जैसे ही पानी पीने के लिए झुके शापवश अचेत होकर गिर पड़े। यही दशा सहदेव, भीम और अर्जुन की भी हुई। अंत में युधिष्ठिर गए और शांतिपूर्वक यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिया, स्वयं भी पानी पिया, भाइयों को पिलाया और द्रौपदी के लिए भी जल ले आए।

देखा यह जाता है कि कितने ही व्यक्ति अपनी आकाँक्षा पूरी न होने, तनिक सा व्यवधान आने पर बुरी तरह दुःखी होने लगते हैं। लगता है उन्हीं पर कोई बज्र गिरा हो। परीक्षा में फेल होने पर, मामूली-सा गृह कलह होने पर, व्यापार में घाटा आने पर, प्रतिस्पर्धा में पुरुस्कृत न होने पर अधीर हो जाते हैं और उस असंतुलित स्थिति में घर छोड़कर निकल भागने, आत्म-हत्या करने तक की सोंचने लगे हैं छुई-मुई असफलताएँ इतना निराश कर देती हैं कि वे फिर कुछ बड़ा काम करने की हिम्मत ही हार बैठते हैं। छुईमुई का पौधा किसी के उँगली छूने मात्र से मुरझा जाता है, दुर्बल मनःस्थिति के मनुष्य अवरोध का एक हलका झटका लगने मात्र से अपना उत्साह खो बैठते हैं और फिर ऐसे खिन्न रहने लगते हैं मानो इसका सब कुछ डूब गया हो।

कई व्यक्ति भविष्य की कठिनाइयों, विपत्तियों की आशंकाएँ करके चिंतित बने रहते हैं। मन में केवल कुकल्पनाएँ ही उठती रहती हैं। लगता रहता है मानो अब विपत्ति आई, अब मुसीबत में फँसे। कर्मक्षेत्र में प्रवेश करने वाला कभी अनुकूलता का लाभ लेता है और कभी प्रतिकूलता का सामना करता है। लाभ मिलने पर हर्षोन्मत होकर उछलने वाले और हानि होने पर सिर धुन-धुनकर रोने वाले लोग दयनीय हैं। प्रकृति उन्हीं को जीवित रखती है जो अवरोधों का सामना करने में समर्थ है। गर्मी का सामना न कर सकने वाली घास अल्पायु होती है, और सर्दी का सामना न कर सकने वाले मक्खी-मच्छर बेमौत मरते हैं। जिन्हें केवल सफलता, केवल लाभ, केवल अनुकूलता ही चाहिए वे संघर्षशील संसार में अपनी समर्थता एवं दृढ़ता सिद्ध नहीं कर सकते और हवा के एक ही झोंके में इधर से उधर उड़ जाते हैं।

जो भी शिष्य आता यही विश्वास दिलाता—भगवन् ! धर्म की स्थापना और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष में हम कहीं भी पीछे नहीं हटेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवजी को उतने से संतोष नहीं हुआ। परीक्षा के लिए वे शिष्यों के सामने ही अकारण पार्वती जी को भला-बुरा कहने लगे, पर शिष्यों में से एक ने भी उनका प्रतिरोध नहीं किया। तब शिष्यों के मध्य खड़े परशुरामजी आगे बढ़े और शिवजी के सिर पर फरसा चला ही तो दिया।

अन्य शिष्य परशुराम जी को भला-बुरा कहने लगे, तो शिवजी बोले—बस करो ! देख ली तुम्हारी निष्ठा, जो हिम्मत और सच्चाई परशुराम ने दिखाई, तुममें से उसका एक को भी तो साहस नहीं हुआ।

चिंता, भय, निराशा, आशंका एवं अधीरता की मानसिक दुर्बलताएँ हमारा इतना अहित करती हैं जितना सौ शत्रु मिलकर नहीं कर सकते। दुर्बल मन सदा अंधकारमय भविष्य और संभावित विपत्तियों की ही कुकल्पना करता रहता है और इस प्रकार की अशुभ विचारणाएँ मनुष्य को घबरा देने के लिए पर्याप्त हैं। आधी शक्ति आशंकाएँ खा जाती हैं। चिंता एक प्रकार की ठंडी आग है जो मनुष्य को भीतर ही भीतर जलाती रहती है। आधी से अधिक आशंकाएँ निर्मूल होती है। साहसी व्यक्ति हिम्मत से काम लेते हैं, और सोचते हैं, जो होगा सो देखा जाएगा। समय पर आगत कठिनाई का मुकाबला कर लेंगे। उसका कोई हल ढूँढ़ लेंगे। ऐसी हिम्मत वालों को यदाकदा ही संभावित आशंकाओं से जूझना पड़ता है। यदि कोई अवरोध आ खड़ा भी हुआ तो उसे शांत चित्त, व्युत्पन्न मति एवं मानसिक सूझ-बूझ से हल कर लेते हैं। धैर्यवान और साहसी मनुष्य मानसिक शक्ति के उस अपव्यय से बच जाते हैं, जो सफलता का पथ प्रशस्त करने में महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं।

गोपाल कृष्ण गोखले को गणित में सबसे अधिक नंबर पाने के लिए इनाम दिया गया। इनाम पाकर उन्हें प्रसन्न होना चाहिए था, पर वे रोने लगे और इनाम वापस करने लगे तो अध्यापक ने पूछा—गोखले ! रो क्यों रहे हो ? गोखले ने एक लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा—यह इनाम इन्हें मिलना चाहिए। मैंने तो सवाल इनसे नकल किए। अध्यापक ने इनाम उन्हीं को सौंपते हुए कहा—अब यही इनाम तुम्हारी सच्चाई के लिए दिया जा रहा है।

पेड़ की जड़ें निरंतर बढ़ती हैं। रास्ते में कोई पत्थर आ जाता है और वे उसे तोड़कर पार नहीं कर सकतीं तो दूसरी ओर मुड़ जाती हैं, अपना रास्ता दूसरा बना लेती हैं। यह मुड़ने और बदलने की कला जिन्हें मालूम है वे लचकदार तरीका अपनाते हैं और अपने लिए दूसरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रास्ता तलाश कर लेते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को अपने जीवन में १८ बार तिलमिला देने वाली असफलताएँ मिलीं। कोई कमजोर तबियत का आदमी रहा होता तो टूट गया होता। निराश होकर हिम्मत खो बैठा होता, पर उन्होंने हर अवरोध के बाद दूनी-चौगुनी हिम्मत से काम लिया और अपनी रीति-नीति में जो परिवर्तन आवश्यक था सो तुरंत कर लिया। एक व्यक्ति एक कार्य में आज असफल हुआ है तो वह सदा सब कार्यों में असफल ही नहीं होता रहेगा। दूसरे काम में उसकी प्रतिभा बड़े-बड़े चमत्कार दिखा सकती है। एक बार सफलता न मिली तो कई बार प्रयत्न किया जा सकता है। राजा ब्रूसों १३ बार लड़ाई में हारा किंतु उसने हिम्मत नहीं छोड़ी, चौदहवीं बार वह सफल हुआ। हर व्यक्ति के लिए मनोबल बढ़ाने का यही रास्ता है कि अवरोध या असफलता के आगे सिर न झुकाए, हिम्मत न हारे, वरन् दूने उत्साह और उल्लास के साथ आगे बढ़ें और उन त्रुटियों को दूर करें जिनके कारण पिछली बार सफलता न मिल सकीं।

शोक-संताप में व्यथित हो बैठना व्यर्थ है। इस संसार का यही क्रम है कि एक की हानि दूसरे का लाभ बनती रही है। एक तभी जीतेगा जब कोई दूसरा हारे। हार-जीत की आँख-मिचौनी यहाँ अनादि काल से चलती रही है। ताश की बाजी की तरह जो उसमें झुब्ध नहीं होते केवल आनंद भर लेते हैं ऐसे खिलाड़ी की मनोवृत्ति रखने वाले लोग हँसते और हँसाते हुए आनंद और संतोष का जीवन जी सकते हैं।

गड़रिये ने सभी भेड़ों को तो बाड़े में बंद कर दिया, पर जिस बच्ची भेड़ को वह कन्धे पर उठा कर लाया था, उसे नहलाया, धुलाया, और हरी घास खाने को दी। पास की चौपाल में शिष्यों सहित ईसामसीह बैठे थे। उन्होंने पूछा—तात ! तुमने और भेड़ों को तो बंद कर दिया, इसी बच्चे से इतना प्यार क्यों ? गड़रिया बोला—महाराज ! यह रोज भटक जाता है, इसे इसलिए इतना प्यार देता हूँ ताकि वह फिर न भटक जाए।

ईसामसीह ने शिष्यों की ओर मुड़कर कहा—तात ! प्यार के अभाव में ही लोग भटकते हैं और भटके हुए लोग प्यार से सीधे रास्ते पर आते हैं, यह तुम इस गड़रिये से सीखो।

हमें सफलता की बड़ी-बड़ी आशाएँ रखनी चाहिए और मनोरथों की पूर्ति के बड़े-बड़े सपने देखने चाहिए पर साथ ही इसके लिए तैयार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहना चाहिए कि बुरी से बुरी परिस्थितियों का सामना करना पड़े। दिन और रात का—सर्दी और गर्मी का अपना-अपना आनंद है। सफलता और असफलता भी अपनी-अपनी विशेषताएँ और विभूतियों से संपन्न हैं। सफलताएँ जहाँ हमारा उत्साह बढ़ाती हैं और प्रगति के लिए सुविधाएँ उत्पन्न करती हैं वहाँ असफलताएँ हमारे धैर्य, साहस, संतुलन, पौरुष और विवेक को चुनौती देकर हमारा आत्म बल बढ़ाती है, जो किसी भी साधारण सफलता की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होती हैं।

भय हमारी स्थिरता और प्रगति में सबसे बड़ा बाधक है। कितने ही काम ऐसे हैं जिन्हें बहुत आसानी से किया जा सकता है, पर भावी कठिनाइयों, असुविधाओं और अवरोधों की मिथ्या कल्पना करके हम आगे कदम बढ़ाने की हिम्मत ही नहीं करते और उस लाभ से अकारण ही वंचित रह जाते हैं जो सहज ही उठाया जा सकता था।

आंतरिक दुर्बलता का बड़ा प्रमाण मनुष्य की भीरुता है और कायर मनुष्य उनसे अकारण डरता है। जिन बातों का हँसते खेलते सामना किया जा सकता है या सहा जा सकता है उनकी भयावह कल्पना गढ़कर डरपोक व्यक्ति राई को पहाड़ बना देता है और भी फिर उस स्वनिर्मित भूत से डर-डर कर प्राण सुखाता चला जाता है। भीरुता एक मानसिक रोग है और वह इतना कष्टकारक है कि ज्वर, दस्त, खाँसी, दमा आदि की अपेक्षा शरीर को कहीं अधिक क्षति पहुँचाता है। मन तो उसके कारण हर घड़ी उद्विग्न रहता है। ध्यान से देखा जाए तो आशंका राई रत्ती भर होती है और यदि वह आशंका मूर्तिमान हो जाए तो उससे उतनी विपत्ति नहीं आती जितनी कि कल्पना की गई थी।

रवीन्द्रनाथ टेगोर एक परीक्षा में कम नंबरों से पास हुए। दूसरी परीक्षा के लिए उन्होंने जी तोड़ श्रम किया और परीक्षा में अच्छे नंबर पाए। शिक्षक को संदेह हुआ कि श्री टेगोर ने कहीं नकल तो नहीं की। इस पर टेगौर ने कहा—श्रीमान् ! मेरी योग्यता अविश्वस्त रह जाए, यह मैं हरगिज नहीं चाहता। उन्होंने फिर से परीक्षा दी और अपनी योग्यता प्रमाणित कर दिखाई।

हमें शारीरिक रुग्णता और दुर्बलता की तरह ही मानसिक दुर्बलता से बचना चाहिए। काया कष्ट अपने अंग की पीड़ा को देखकर समझा जाता है। मानसिक अस्वस्थता की परख इस आधार पर करनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए कि हमें कहीं कायरता और भीरुता ने तो नहीं आ घेरा है। भविष्य की अशुभ कल्पनाएँ करके कहीं अपना चित्त विक्षुब्ध या उद्विग्न तो नहीं बना रहता। यदि ऐसा हो, तो हमें अपने आपकी भर्त्सना करनी चाहिए और उन बहादुरों के साथ तुलना करनी चाहिए जिन्होंने भयंकर विपत्तियाँ सामने आ खड़ी होने पर भी संतुलन नहीं खोया और साहस पूर्वक सामना करके अन्धकार को प्रकाश में बदल दिया।

प्रश्न

१. क्या आप बता सकते हैं कि ईश्वर ने सुविधा के साथ असुविधा और संतोष के साथ असंतोष को क्यों बनाया है ?
२. केवल सुविधा, संतोष और अनुकूलता ही यदि बनाए गए होते, तो उससे हमारी क्या हानि होती ?
३. प्रगति का मार्ग संघर्ष होता है ? सिद्ध कीजिए।
४. यदि हम किसी महान कार्य को कर रहे हैं और उस कार्य में कोई रुकावट आ जाए तो हमें क्या करना चाहिए ?
५. जिन्हें केवल सफलता, केवल लाभ, केवल अनुकूलता ही चाहिए क्या वे इस संघर्षशील संसार में अपने को दृढ़ बनाए रह सकते हैं ?
६. चिंतित व्यक्ति और साहसी व्यक्ति में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए।
७. क्या आप कोई ऐसा उदाहरण बता सकते हैं कि किसी के सामने कई बार अवरोध आए हों, पर वह आखिर में बराबर जीता हो।
८. इस संसार में संतोष और आनंद का जीवन कौन व्यतीत कर सकते हैं ?
९. "सफलता की बड़ी आशाएँ रखना" किस प्रकार हमारे लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवेशग्रस्त न हों

शरीर में बुखार आने पर उसका तापमान बढ़ जाता है और कई तरह की विकृतियाँ-गड़बड़ियाँ पैदा हो जाती हैं। देह जलती है, प्यास लगती है, सिर दर्द होता है, पैर भड़कते हैं, नींद नहीं आती, भूख नहीं लगती, बेचैनी होती है आदि कितने ही कष्ट कारक लक्षण होने से रोगी को बुखार के कारण बहुत असुविधा होती है। कमजोरी बहुत आ जाती है, कुछ काम करते नहीं बन पड़ता, सोचना और बोलना भी ठीक तरह संभव नहीं होता। इस कमजोरी और शारीरिक अस्त-व्यस्तता की क्षति-पूर्ति काफी समय लेकर आती है। थोड़े दिन का बुखार भी देह को तोड़-मोड़ कर रख जाता है।

शरीर की तरह मन, मस्तिष्क को भी बुखार आता और वह शरीरगत उस बुखार व्यथा की अपेक्षा अधिक हानिकारक सिद्ध होता है। इस संतान का नाम है—"आवेश" तनिक-सी बात पर उत्तेजित हो जाना और मानसिक संतुलन खो बैठना, आवेश में भरा जाना, मस्तिष्क को बुखार चढ़ जाना ही कहा जाएगा। मनुष्य का जीवन क्रम और संसार का क्रिया-कलाप कुछ ऐसे ही ढंग का है कि इसमें हर बात अपनी इच्छानुकूल नहीं हो सकती। दूसरे लोग वही करें जो हम चाहते हैं, वे अपने स्वभाव और संस्कार को हमारी मन-मर्जी के अनुरूप तत्काल बदल लें, यह आशा करना अनुचित है।

जो उपरोक्त वास्तविकता को नहीं समझते वे तनिक-सी प्रतिकूलता आने पर, मर्जी से भिन्न किसी का व्यवहार देखकर आग-बबूला हो उठते हैं, आवेश में आ जाते हैं और मानसिक संतुलन खोकर इतने विक्षुब्ध हो जाते हैं कि अपने को—संबंधित व्यक्तियों तथा समीपवर्ती वातावरण को अस्त-व्यस्त बनाकर ही रहते हैं।

भगवान बुद्ध एक ऐसे गाँव में पहुँचे जहाँ अधिकांश प्रतिक्रियावादी ब्राह्मण रहते थे। एक आदमी को पता चला, तो वह बुद्ध के पास पहुँचा और उन्हें गालियाँ बकने लगा। बुद्ध दूसरे लोगों से बात करते रहे। बड़ी देर तक गाली बककर वह ब्राह्मण चुप हो गया तो बुद्ध ने पूछा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महोदय ! आप किसी को कुछ देना चाहे और वह न ले तो क्या आप हर वस्तु फेंक देंगे। ब्राह्मण बोला नहीं—तब बुद्ध भगवान शांति और निश्चिंतता से बोले—तो फिर मैं आपकी गालियाँ स्वीकार नहीं करता।

आवेश एक प्रकार का मस्तिष्कीय बुखार है। इसे मानसिक दुर्बलता भी कह सकते हैं। उत्तेजना सारे आंतरिक ढाँचे को लड़-खड़ाकर रख देती है। क्रोध का आवेश जब चढ़ता है, तब मनुष्य आधा पागल जैसा हो जाता है। इनके हावभाव, चेष्टाएँ, मुखमुद्राएँ ऐसी हो जाती हैं, जैसे वह आपे से बाहर हो। न सोचने लायक बात सोचता है और न बोलने लायक वाणी बोलता है, कटुता, व्यंग, तिरस्कार, अहंकर, अशिष्टता आदि न जाने कितने विष उसमें घुले रहते हैं। दूसरों का राई भर दोष पर्वत जैसा दीखता है, बहुत बार तो उस आवेश ग्रस्त स्थिति में इतनी कुकल्पनाएँ और आशंकाएँ उठती हैं कि दूसरा बुरे से बुरा दीखने लगता है और प्रतीत होता है मानो उसने जान-बूझकर द्वेषवश हानि पहुँचाने या नीचा दिखाने के लिए ही सब कुछ किया है। मस्तिष्क उत्तेजना में सही बात सोच नहीं पाता, वस्तुस्थिति समझने और वास्तविकता जानने की बुद्धि ही नहीं रहती। अस्तु, सामने वाला दोषी ही नहीं शत्रु भी दीखता है और जिस प्रकार किसी पर आक्रमण किया जाता है, उसी तरह गतिविधियाँ बन जाती हैं। इससे सामने वाले को भी प्रत्युत्तर और प्रतिशोध में खड़ा होना पड़ता है। बात बढ़ती है और कई बार तनिक-सी बात पर इतना बड़ा विग्रह खड़ा हो जाता है कि उसकी क्षति-पूर्ति कर सकना कठिन हो जाता है। मित्र शत्रु बन जाते हैं और जहाँ से सहयोग की आशा थी, वहाँ से विरोध और अवरोध प्राप्त होने लगता है इन परिस्थितियों में कई बार ऐसा कटु व्यवहार बन पड़ता है, जिसका घाव आजन्म नहीं भरता और अपने पराए हो जाते हैं।

एक व्यक्ति महावीर स्वामी के पास आया और परीक्षा के तौर पर उन्हें अपशब्द कहने लगा ताकि उनको क्रोध आ जाए। जितनी देर वह अपशब्द कहता रहा, जितेंद्र चुप रहे, जैसे ही वह चुप हुआ उन्होंने कहा—अवुस ! आओ, पहले भोजन कर लें, ताकि आपका चित्त हल्का हो जाए।

आवेश में दुर्व्यवहार करके दूसरों को जितनी क्षति पहुँचाई जाती है, उससे कहीं अधिक हानि अपनी करता है। इसी प्रकार आवेशग्रस्त क्रोध में दूसरों को जितनी चोट पहुँचाता है, उससे कहीं अधिक हानि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी कर लेता है। शरीर विष से भर जाता है और अगणित मस्तिष्कीय तथा नाड़ी संस्थान के रोग उठ खड़े होते हैं। एक घंटे के क्रोध में एक दिन के तेज बुखार से अधिक शक्ति नष्ट होती है। क्रोधी व्यक्ति कभी पनपता नहीं। उसकी जीवन शक्ति आवेश की आग में ही जलती, भुनती रहती है और ठीक तरह सोच सकने की क्षमता दिन-प्रति-दिन कम होने लगने से वह अर्ध-विक्षिप्त एवं सनकी जैसी मनोदशा में जा पहुँचता है।

उचित यह है कि हम संतुलित स्वभाव रखना सीखें। यदि किसी का व्यवहार अप्रिय है तो तलाश करें कि उसमें उसका कितना दोष था। कई बार परिस्थितियाँ, मजबूरियाँ एवं वस्तुस्थिति समझने की भूल के कारण लोग ऐसी गलतियाँ कर बैठते हैं, जिनसे पीछे तो पछताते हैं, पर समय पर वैसी कल्पना नहीं होती। मनुष्य जहाँ श्रेष्ठ हैं, वहाँ त्रुटियों और दुर्बलताओं से भी भरा है। पूर्ण निर्दोष, परम सज्जन एवं निभ्रांत व्यक्ति आज तक इस संसार में पैदा नहीं हुआ। आगे कभी हो सकेगा इसकी संभावना कम ही है। इस वास्तविकता को समझते हुए यदि हमें इसी संसार में रहना है तो काम चलाऊ समझौता की नीति अपना कर ही चलना होगा। अप्रिय व्यवहार जिनका लगता हो उनसे शांति और प्रेम पूर्वक वस्तुस्थिति पूछनी चाहिए और जो कारण रहा हो इसकी हानि समझाकर उसे उसके लिए तैयार करना चाहिए कि भविष्य में वैसी गलती न करे। यदि हमें ही समझने में भूल हुई है और कुछ का कुछ समझ लिया है तो अपनी भूल तुरंत स्वीकार करने और सुधारने को तैयार रहना चाहिए। सज्जनता की पहिचान संतुलन से की जाती है। दूरदर्शी, विवेकवान व्यक्ति की पहिचान यह है कि वह तर्क और विवेक से काम लेता है। अप्रिय प्रसंगों के कारण बारीकी से ढूँढ़ता है और उनके समाधान का शांत चित्त से उपाय निकालता है। हर रोग की दवा है और हर अप्रिय प्रसंग का समाधान है। सज्जन समाधान ढूँढ़ते हैं और उसे निकालकर रहते हैं। वे जानते हैं कि क्रोध और आवेश से, लड़ाई-झगड़े से, कटु वचन और अशिष्टता से कोई प्रयोजन पूरा नहीं होता—उलटी उलझनें बढ़ती हैं।

रावण दुर्वचन बोल रहा था, तब तक राम चुपचाप खड़े रहे। विभीषण ने कहा—भगवन् ! आप शत्रुओं पर प्रहार क्यों नहीं करते ? राम बोले—क्षत्रिय मृतकों पर शस्त्र प्रहार नहीं करते। लेकिन रावण तो जीवित है—विभीषण बोले। इस पर राम ने उत्तर दिया—आवेश ग्रस्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य और मृतक में कोई अंतर नहीं क्योंकि उस समय भी मनुष्य मृत्यु के समान ही ज्ञान शून्य हो जाता है।

जिस व्यक्ति के दुर्व्यवहार से या भूल से हमें चोट पहुँचती है उसके संबंध में यही सोचना चाहिए कि यह अपनी भूल सुधार कर भविष्य में हमारे अनुकूल हो जाए। इसके लिए क्रोध या दुर्व्यवहार करना व्यर्थ है। आतंक और आक्रमण से रोष और विक्षोभ से संभव है सामने वाला कुछ समय के लिए चुप हो जाए या डरकर सहमत हो जाना स्वीकार करले पर यह केवल उतनी बाह्य प्रक्रिया मात्र ही होगी। भीतर से रोष की प्रतिक्रिया निश्चित रूप से प्रतिकूल ही होगी। प्रताड़ना और तिरस्कार को वह घायल साँप की तरह चोट को भीतर ही छिपाए रहेगा और जब अवसर मिलेगा उस दुर्व्यवहार का बदला लेगा। सुधार के लिए सज्जनतापूर्ण सद्व्यवहार ही कारगर उपाय है। क्रोध का उद्देश्य यदि भूल करने वाले को सुधारना और क्षति की पूर्ति करना हो तो समझ लेना चाहिए कि यह तरीका गलत है। जो बात हम चाहते हैं, वह तो गलती करने वाले को अनुकूल बनाकर ही पूरी हो सकती है और उसके लिए जो भी उपाय कारगर होंगे, वे निश्चित रूप से क्रोध के अतिरिक्त ही कोई होंगे।

मोहम्मद साहब युद्ध में एक योद्धा से भिड़े थे। उसे पटककर वे उसका सिर काटना ही चाहते थे कि उसने गाली दे दी। मोहम्मद साहब तलवार को म्यान में रखकर खड़े हो गए। उनके एक सिपाही ने पूछा—आपने उसे मारा क्यों नहीं ? इस पर मोहम्मद साहब बोले—इसने गाली दी, तब मुझे क्रोध आ गया, उस समय अपने आवेश को ही मारना आवश्यक हो गया क्योंकि वह अपना घोर शत्रु है।

शारीरिक स्वास्थ्य की तरह हमें मानसिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए। अन्यथा मानसिक रुग्णता हमारे लिए रोगी शरीर से भी अधिक घातक सिद्ध होगी। मनोविकारों में सर्वप्रथम है क्रोध। भय सबसे बुरे किस्म का रोग है। चोरी, छल, बेईमानी, व्यभिचार, आदि से दूसरों को अधिक हानि होती है। अपनी पीछे भले ही होती रहे पर तत्काल तो कुछ लाभ ही होता है किंतु क्रोध से सारी की सारी हानि अपनी ही है। लाभ रत्ती भर भी नहीं। खून अपना सूखा, मस्तिष्क अपना खराब हुआ, स्वास्थ्य गिरा, शत्रुता बढ़ी और जो चाहते थे, उससे ठीक उल्टी प्रतिक्रिया हुई। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए हर विवेकवान व्यक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का कर्त्तव्य है कि आत्मनिरीक्षण करके हम यह देखें कि अपना मानसिक संतुलन सही रहता है या नहीं। लोग बुरे हैं, गलती करते हैं, तो उनके दंड के लिए प्रेम और सहानुभूति के साथ उनकी कठिनाई समझनी चाहिए और सदाशयता एवं सज्जनता के साथ यह बताना चाहिए कि क्या न करके क्या किया जाना चाहिए था। अपना संतुलन बनाए रहकर शांति-चित्त सौम्य मुद्रा हितैषी, मित्र के रूप में यदि कुछ परमार्थ किया जाएगा तो गलती करने वाले अपने को बहुत कुछ सुधार लेंगे और यदि अपनी ही भूल से दूसरों की गलती मान ली गई है तो विवेक उसे भी सुधार देगा और क्रोध का कोई कारण शेष न रह जाएगा।

प्रश्न

१. शरीर में बुखार आने पर क्या-क्या लक्षण उत्पन्न होते हैं ? तथा उनसे क्या हानियाँ होती हैं ?
२. मस्तिष्क को बुखार आ गया ऐसा हम कब कह सकते हैं ?
३. आवेशित होने के कारण क्या हैं ?
४. आवेशित होने से हम में क्या परिवर्तन हो जाते हैं ? तथा इससे क्या हानियाँ होती हैं ?
५. क्या आवेशित व्यक्ति स्वतः अपने आप को भी हानि पहुँचाता है ? यदि हाँ तो किस प्रकार ?
६. हमें अपना स्वभाव सन्तुलित बनाए रखने के लिए क्या-क्या उपाय करने चाहिए ?
७. दूरदर्शी और विवेकवान व्यक्ति की पहचान क्या है ?
८. सामने वाले व्यक्ति से हमें क्रोध न करके किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए।
९. क्रोध करने से हमें शारीरिक कठिनाइयाँ क्यों होती हैं ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छात्र अपना भविष्य निर्माण आप करें

प्रत्येक छात्र को यह अनुभव करना चाहिए कि वह एक ऐसी अवधि में होकर गुजर रहा है जो उसके भाग्य और भविष्य का निर्माण करने की निर्णायक भूमिका अदा करेगी। मनुष्य शरीर की कोई महत्ता नहीं, वह तो पशु-पक्षियों से भी अनेक बातों में पिछड़ा हुआ है। व्यक्ति की सारी गरिमा उसके गुण, कर्म, स्वभाव पर निर्भर है। क्या बाह्य—क्या आंतरिक दोनों ही क्षेत्रों की प्रगति इस बात पर निर्भर है कि किसी का व्यक्तित्व किस स्तर का है। धन, विद्या, सम्मान पद, स्वास्थ्य, मित्रता जैसी विभूतियाँ किसी को अनायास ही नहीं मिल जातीं। उसके लिए उपयुक्त साधन और तरीके प्रयुक्त करने पड़ते हैं और यह कर सकना उसी के लिए संभव है जिसने अपना व्यक्तित्व गुण, कर्म, स्वभाव सही ढंग से ढाला और विनिर्मित किया है। सफलताओं की इच्छा सभी करते हैं पर इन्हें पा सकना हर किसी के लिए नहीं केवल गुणवान व्यक्तियों के लिए ही संभव होता है।

एक लड़का सड़क के लैंप के सहारे बैठा पढ़ रहा था। एक परिचित पास से गुजरे और बोले—ऐसी भी क्या पढ़ाई, इससे अच्छा तो कोई नौकरी कर लो, इतना कष्ट उठाकर पढ़ने से क्या लाभ ? विद्यार्थी बोला—महोदय ! आप नहीं जानते यह मेरी साधना, मेरी कसौटी का समय है। कठिनाई हैं तो क्या बौद्धिक क्षमताएँ अब न बढ़ाई गई तो फिर ऐसा अवसर कब मिलेगा। इस तरह का उत्तर देने वाले महान् शिक्षा शास्त्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर थे।

जोश अधिक और होश कम रहने के कारण उठती उम्र में किसी भी आकर्षण की ओर खिंच जाना सरल होता है। कहना न होगा कि अवांछनीय प्रवृत्तियों में आकर्षण और मनोरंजन अधिक है। पानी का स्वभाव नीचे की ओर गिरना है, मनोवृत्तियाँ भी पानी की तरह ही अधोगामी बनने के लिए सहज ही तैयार हो जाती हैं और फिर जीवन भर पिंड नहीं छोड़तीं। कहना न होगा कि दुर्गुणी व्यक्ति अपने लिए और संबंधित लोगों के लिए शोक संताप भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता हुआ अभिशाप जैसा नारकीय जीवन ही जी सकता है। इन्हीं दिनों यदि श्रेष्ठ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वातावरण का संपर्क बना रहे और सद्भावनाओं एवं सत्प्रवृत्तियों का अभ्यास किया जाता रहे तो उसका प्रभाव सारे जीवन भर बना रहेगा और फलस्वरूप सुखशांति की संभावनाएँ सदैव साकार होती रहेंगी।

कर्नवाल परगने का ग्राम पेन्जान्स, एक लड़का पढ़ना चाहता था, पर उसे डाक्टर के यहाँ नौकरी करनी पड़ी। उसके पिता ने कहा—बेटा आदमी पढ़ना चाहे तो हर घर स्कूल है। लड़का वहीं पढ़ने लगा। बचे समय का सदुपयोग वह स्कूल की किताबों के अतिरिक्त डाक्टरी पढ़ने में करने लगा और १८ वर्ष की आयु में उसने वनस्पति, भूगर्भ, सर्जरी तथा रसायन शास्त्र के एम० ए० से अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया। बाद में सर हम्फीडैवी के नाम से यही अध्यवसायी बालक महान् वैज्ञानिक के रूप में विख्यात हुआ।

मित्रों का आकर्षण यों सदा ही रहता है पर किशोरावस्था में उसके प्रति खिंचाव अपनी चरम सीमा पर रहता है। मित्रता बुरी नहीं—अच्छे साथी मिलें तो विकास एवं प्रसन्नता की वृद्धि में सहायता ही मिलती है। पर दुर्भाग्य से आज आवारा और दुर्गुणी लड़के ही मित्रता के जाल में फँसाकर अच्छे लड़कों को अपने जैसा बना लेने का जाल फैलाते हैं। जो स्वयं पढ़ते लिखते नहीं, खुराफातों में घूमते हैं, उन्हें अपनी आवारागर्दी के लिए साथियों की जरूरत पड़ती है। ये चालाक लड़के मीठी बात करके सब्ज बांग दिखाकर भोले लड़कों को फँसाते हैं और धीरे-धीरे उन्हें आवारागर्दी के अनेक हथकंडे सिखाकर ऐसा बना देते हैं जो शिक्षा से वंचित रह जाएँ, स्वास्थ्य खो दें, स्वभाव बिगाड़ लें और सम्मान तथा विश्वास गँवा बैठें। किसी का भविष्य अंधकारमय बनाने के लिए इतनी बातें काफी हैं इसलिए हर समझदार छात्र का कर्त्तव्य है कि मित्रता करने और दोस्तों के साथ फिरने से पूर्व हजार बार सोचें कि कहीं उसे आवारागर्दी की ओर तो घसीटा नहीं जा रहा है। यों आज की परिस्थिति में अधिक उपयुक्त यही है कि बिना गहरी दोस्ती के काम चलाया जाए और हर साथी से सामान्य शिष्टाचार और मेल-जोल उस सीमा तक रखा जाए जिससे समय की बर्बादी और किसी खतरे की आशंका न हो।

रतलाम के महाविद्यालय में एम० ए० कक्षा खुलवाने की बात आई। पैसा कौन दे। सभी छात्रों ने निश्चय कर "बूट पालिश" का काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करना प्रारंभ किया और कुछ ही दिन में एम० ए० की कक्षा खुलने योग्य धन की प्राप्ति हो गई।

स्वास्थ्य संरक्षण के लिए यही समय सबसे अधिक उपयुक्त है। आहार-विहार का—सोने-जागने का—यदि ठीक ध्यान रखा जाए तो तंदुरुस्ती ऐसी बन जाएगी जो जीवन भर साथ दे। इस संदर्भ में कामुकता के खतरे को पूरी तरह ध्यान में रखा जाना चाहिए। गंदे फिल्म, गंदे गाने, गंदे उपन्यास, गंदे चित्र तथा गंदे विचार चित्त को उसी तरह उद्विग्न कर देते हैं और उन घिनौने कार्यों की प्रेरणा देते हैं जिससे शरीर और मस्तिष्क खोखला हो जाए और जवानी में बुढ़ापा आ घेरे। कच्ची उम्र में इस तरह का घुन लग जाने से देह जिंदगी भर के लिए रोगों का शिकार बन जाती है और गृहस्थ जीवन भार बन जाता है, इसलिए इन दिनों ब्रह्मचर्य और सद्विचारों के बारे में पूरी सतर्कता रखी जाए और अश्लील परिस्थिति से ऐसे बचा जाए जैसे साँप, बिच्छु, आग या जहर से बचा जाता है।

पिता इतना गरीब था कि बच्चे की फीस चुकाना भी मुश्किल और लड़का इतना लगनशील और परिश्रमी कि स्कूल में पढ़ने के साथ उसने क्लर्क की नौकरी भी कर ली। स्टेनोग्राफर और मुनीम का भी काम उसने किया, कामर्स पढ़ी और प्रति माह सात रुपए बचाया भी। टोरंटो (कनाडा) के नाई परिवार में जन्मा टाक्सन नामक यही लड़का अपनी इस लगन, दृढ़ निश्चय और परिश्रम के कारण एक सौ अट्ठाईस समाचार पत्रों व पत्रिकाओं, १५ रेडियो व टेलीविजन स्टेशनों, १५० व्यापारिक तकनीकी पत्रिकाओं, दो प्रकाशन संस्थाओं, दो यात्रा एजेन्सियों का मालिक बना।

अवज्ञा, उच्छृंखलता, अशिष्टता और अनुशासन हीनता जैसे दुर्गुण, साहसिकता की भयंकर विकृतियाँ जिनके कारण दूसरों को चोट ही नहीं पहुँचती अपना स्वभाव भी ऐसा निकृष्ट बन जाता है जिससे कोई सृजनात्मक कार्य नहीं बन सकता। साहस अच्छा गुण है, अनीति का प्रतिरोध करने की हिम्मत भी होनी चाहिए। यह साहसिकता उपयुक्त मर्यादाओं एवं नागरिक कर्त्तव्यों के उल्लंघन में लग गई, तो यह अशिष्ट, असज्जन, अशालीन, आतंकवादी आचरण अपने संपर्क में लोगों का कुछ भी भला न कर सकेगा। भलाई सृजनात्मक, सज्जनोचित सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने में है। विकास की सम्भावनाएँ सज्जनोचित प्रवृत्तियों में सन्निहित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। उद्दंड मनुष्य किसी को डरा भर सकते हैं। प्रेममय सहयोग पाने में उन्हें वंचित ही रहना पड़ता है और अंततः वह कमजोरी इन्हें सदा असफल और ओछा मनुष्य ही बनाए रखती है। प्रगति के स्वप्न देखने वाले हर दूरदर्शी युवक को शालीनता की सज्जनोचित आदतें ही अपने में पड़ने और बढ़ने देने के लिए सतर्क रहना चाहिए।

एरिट्रायस की धार्मिक विषयों में रुचि थी, अतएव उसके आग्रह पर पिता ने उसे जीनो की पाठशाला भेज दिया। एरिट्रायस बहुत दिनों में घर लौटे, तो पिता ने पूछा—बेटा ! वहाँ से क्या सीखकर आए हो ? पुत्र ने उत्तर दिया—बाद में ज्ञात हो जाएगा। एक दिन पिता किसी बात पर रुष्ट हो गया, उसने युवा पुत्र की बुरी तरह पिटाई की फिर भी पुत्र ने कुछ प्रतिवाद नहीं किया और न उत्तर दिया। पिटने के बाद वह फिर शांत चित्त अपने काम से लग गया। न आत्महत्या की धमकी दी न घर से भागा। यह देखकर पिता का हृदय भर आया, वह पुत्र से माँफी माँगने लगा, तो पुत्र ने कहा—पिताजी ! यह तो मेरी परीक्षा थी कि मुझे मेरे गुरु ने जो नैतिकता, सदाचार, सहिष्णुता और ध्येय निष्ठा सिखाई उसका पालन भी कर सकता हूँ या नहीं। पिता का हृदय ऐसे शिक्षण के प्रति कृतज्ञता से भर गया।

शिक्षा का ऊँचा स्तर ही व्यक्ति की भौतिक प्रगति का इन दिनों प्रमुख आधार है। अशिक्षित या स्वल्प शिक्षित व्यक्ति शारीरिक श्रम भर से थोड़ी आजीविका कमा सकता है। ऊँचे पद और कार्य कर सकने की योग्यता तो ऊँची शिक्षा के आधार पर ही मिलती है। व्यक्तिगत अर्थ लाभ या सम्मान प्राप्ति के लिए अथवा लोक-मंगल के लिए, कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकने के लिए ऊँची शिक्षा आवश्यक है। विचारशक्ति और व्यक्तित्व के निखार की दृष्टि से भी शिक्षा के महत्त्व और महात्म्य को ठीक तरह समझा जाए तो उसके लिए अधिक तत्परता, मेहनत एवं एकाग्रता कुछ कठिन न रह जाएगी और यह स्पष्ट है कि परिश्रमी एवं दिलचस्पी लेने वाले मंद बुद्धि लड़के अस्तव्यस्त तीव्र बुद्धि लड़कों में बाजीमार ले जाते हैं।

संस्कृत का उद्भट विद्वान् वरदराज कभी विद्यालय का सबसे बुद्धू लड़का था। बहुत पढ़ने पर भी उसे कुछ याद न होता। दुःखी होकर वह घर से भाग गया। रात एक सराय में बिताई। वहाँ उसने देखा—एक टूटे पंखों वाला पतंगा दीवार पर चढ़ता और गिर जाता है। बीस बार असफल रहने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाद इक्कीसवीं बार वह दीवार पर चढ़ गया। इस दृश्य से वरदराज को एक नई हिम्मत मिली। वह घर लौटा और फिर पढ़ने में जुट गया। इस बार उसकी असफलता सफलता में बदल गई।

घर के कामों में बड़ों का हाथ बँटाना, आत्म निर्भरता विकसित करने के लिए अपने बहुत से काम स्वयं निपटा लेना, कम खर्च में काम चलाना, समय का विभाजन करके नियत दिनचर्या के अनुरूप चलना, समय तनिक भी बर्बाद न होने देना, आवेश और चिड़चिड़ेपन से बचकर शांत सन्तुलित मस्तिष्क बनाए रहना, सत्साहित्य के स्वाध्याय की आदत डालना, कठोर परिश्रम की आदत डालना और हँसमुख शिष्ट एवं विनम्र रहना, युवावस्था को अलंकृत करने वाले सद्गुण हैं। उस स्तर की शालीनता, सज्जनता का उपार्जन अभ्यास आदि नवयुवक करने लगें तो उनके भीतर अनेक ऐसी विशेषतायें उगती चली आएँगी जिनके द्वारा उनका भविष्य स्वर्णिम और शानदार बन सके।

प्रश्न

१. व्यक्ति की गरिमा किस बात पर निर्भर है ?
२. सफलता प्राप्त करने के उपाय क्या हैं ?
३. व्यक्तित्व ढालने का उपयुक्त समय कौन-सा है व क्यों ?
४. उठती उम्र में किसी भी आकर्षण की ओर खिंच जाना सरल क्यों होता है ?
५. मित्रता का स्वर्णिम सूत्र क्या है ?
६. विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन क्यों आवश्यक है ?
७. आतंकवादी असुर प्रवृत्ति किसे कहते हैं ?
८. भौतिक प्रगति का प्रमुख आधार क्या है ?
९. युवावस्था को अलंकृत करने वाले सद्गुण कौन-कौन से हैं ?
१०. युवकों को अपना स्वर्णिम एवं शानदार भविष्य बनाने के लिए क्या करना चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुविकसित परिवार के लिए सुव्यवस्था

परिवार यदि विसंगठित, अनियंत्रित हो तो उसमें निरंतर क्लेश कलह ही बना रहेगा और जी चाहेगा कि छोटी इकाई बनाकर अलग रहा जाए, पर यदि उसमें सद्भावना और आत्मीयता का पुट उचित मात्रा में मौजूद है, व्यवस्थापूर्वक सारा क्रम चलता है तो उस कुटुंब में स्वर्ग जैसी अनुभूति होगी। भारत जैसे देश में जहाँ बालकों और वृद्धों को घर के कमाऊ लोगों पर ही निर्भर रहना पड़ता है अधिकांश को कृषि, गृह उद्योग के माध्यम से आजीविका मिल-जुल कर ही चलानी पड़ती है तथा पारस्परिक सेवा सहायता के अच्छे साधन तुरंत उपलब्ध करना संभव नहीं, वहाँ संयुक्त परिवार की आवश्यकता बनी ही रहेगी। इंग्लैंड, अमेरिका की बात जाने दें, जहाँ सरकार वृद्धों को बेकारी की पेंशन देती है, शिक्षा, चिकित्सा, प्रसूति आदि की सुविधा हर नागरिक को उपलब्ध है। वहाँ पारस्परिक निर्भरता उतनी न रहने में आजीविका साधन सर्वत्र उपलब्ध रहने से संयुक्त परिवार की आवश्यकता नहीं रहती और वयस्क व्यक्ति विवाह होते ही अपना अलग परिवार बना लेते हैं, पर यहाँ की आर्थिक दुर्बलता और भावनात्मक स्थिति मोह ममता की दिशा में बढ़ी-चढ़ी रहने से संयुक्त परिवार ही उत्तम रहेंगे।

यदि हमें बड़े परिवार रखने ही हैं तो उनका ढाँचा ऐसा क्यों न बनाया जाए, जिससे सभी को उचित सम्मान, उचित अधिकार प्राप्त हो और उचित कर्त्तव्य पालन की आवश्यकता हर सदस्य अनुभव करे। इस ओर उपेक्षा बरती गई है तथा समयानुकूल आचार संहिता बनाने पर ध्यान नहीं दिया गया है। यही कारण है कि एक घर में एक साथ रहने वाले परिवार के बीच वैसा स्नेह सौजन्य, सद्भाव सहयोग और संगठन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं दीखता जैसा होना चाहिए। साल भर से तो अधिक कौटुंबिकता का आनंद नहीं लिया जा सकता।

माली ने देखा घास काफी उग गई, तो भी उसने उपेक्षा की दूसरे दिन घास बड़ी हो गई, पर फिर भी उसने ध्यान नहीं दिया। फूलों के पौधों की बाढ़ मारी गई। बगीचे में काँटे दार झाड़-झंखाड़ का अंबार लग गया। माली बड़ा पछताया और सोचने लगा—पहले से ही सावधानी रखता, काँट-छाँट करता रहता, तो ऐसा बढ़िया बगीचा नष्ट क्यों होता ?

घर की एक व्यवस्था पद्धति होनी चाहिए जिसके अंतर्गत बड़ों को उचित सम्मान, श्रद्धा व सुविधा देने का सभी छोटे लोग समुचित ध्यान रखें। उनके अनुभवों से लाभ उठाने और पिछली सेवाओं के लिए कृतज्ञ रहने की भावना विद्यमान रहे। समय-समय पर उनके पास परामर्श आदि के लिए जाते रहें और उनमें से जो उचित एवं आवश्यक हो उन्हें पालन भी करते रहा जाए तो वृद्धों को संतोष रह सकता है। जिनकी शारीरिक स्थिति अधिक अशक्त हो गई है उन्हें भोजन, स्नान, स्वच्छता, चिकित्सा आदि की सुविधा देने तथा शरीर यात्रा में आवश्यक सहायता करने की व्यवस्था रखने की आवश्यकता है। इतना सहारा बड़ों-वृद्धों को कुटुम्बियों से मिलना ही चाहिए। वृद्धों को भी घर के समझदार लोगों की विवेक बुद्धि विकसित करने में सहायता तो देनी चाहिये, पर बहुत नियन्त्रण नहीं करना चाहिए। जमाना तेजी से बदला है और देखते-देखते पुराने ढर्रे और नई व्यवस्था में बहुत भारी अंतर आ गया है। नई रोशनी के लोग नए ढंग से सोचते हैं और आधुनिक रीति-नीति का जीवन यापन करना चाहते हैं। चूँकि वे बातें पुराने जमाने में नहीं होती थीं। इसलिए बुजुर्गों को वह अनावश्यक और अनुचित लग सकती हैं। इसलिए वे उनका आवश्यकता से अधिक विरोध, प्रतिरोध करते पाए जाते हैं। इसकी प्रतिक्रिया अवज्ञा के रूप में सामने आती हैं क्योंकि वृद्धों की बुद्धिमत्ता उस बात में है कि वे अपने अनुभव परामर्श का लाभ भी नई पीढ़ी को देते रहें और इतनी ढील भी छोड़ें कि उन्हें अपनी रुचि का रहन-सहन अपनाने की छूट रहे। हाँ स्वतंत्रता को उच्छृंखलता और अनैतिकता की सीमा तक नहीं पहुँचने दिया जाए।

कमाऊ लोगों पर इस बात की भारी जिम्मेदारी है कि वे अपने द्वारा उपार्जित धन को पूरे परिवार की धरोहर समझें और अपने लिए अनावश्यक खर्च के लिए चाह न करें। उस पैसे से घर की नई पौध को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा, स्वास्थ्य, विनोद, अनुभव और संस्कार मिलने का समुचित अवसर मिले। इसके लिए खर्च की अपेक्षा रहेगी ही, यदि कमाऊ लोग अधिक उड़ाने खाने लगें तो उस छोटी पौध के विकास में कटौती करनी पड़ेगी। बच्चों को जन्म देने वाले माता-पिता से लेकर घर के कमाऊ लोगों तक हर सदस्य का कर्त्तव्य है कि अविकसित छोटी पौध को समुन्नत बनाने में कुछ उठा न रखें यह तभी संभव है जब कि वे अपनी निजी आवश्यकताएँ उतनी ही रखें जितनी अनिवार्य है तभी कुछ बचत और उसका लाभ मिल सकना मध्यम श्रेणी के लोगों के लिए संभव है।

बड़े भाइयों को छोटे भाई-बहिनों का एक प्रकार से अभिभावक या पिता ही माना जाना चाहिए। उनका कर्त्तव्य है कि अलग-अलग रहकर अपनी कमाई खुद और पत्नी को खिलाने भर की ओछी बात न सोचें, वरन् पिता ने जिस आत्मीयता और खर्च उठाकर उन्हें पाला पोसा समर्थ किया है इसका पितृऋण अपने छोटे भाई-बहिनों की सहायता करके चुका दें। घर में अच्छी परम्पराएँ स्थिर रखना न केवल वर्तमान लोगों की सुविधा के लिए आवश्यक है, वरन् अगली पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के लिए भी पारिवारिक वातावरण में शालीनता, सज्जनता और व्यवस्था का समुचित पुट रहना चाहिए। शिष्टाचार, मधुर भाषण, समय-समय पर विचार विनिमय, मनोविनोद, एक दूसरे की सुविधा-असुविधा पूछते रहना, रुग्णता या अन्य कठिनाइयों में सहानुभूति सहायता व्यक्त करना, सबकी सलाह से घर खर्च का बजट बनाना और वर्तमान तथा भावी व्यवस्था का ढाँचा सब की सलाह से खड़ा करना आदि उचित परम्पराएँ बनी रहें तो परस्पर स्नेह, सद्भाव और संगठन की स्थिति बनी रह सकती है और आज के गृह संचालक जब वृद्ध होंगे तब उनके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। बड़प्पन के नाम पर न कोई निठल्ला बैठे और न मनमानी चलाए। इसी प्रकार छोटे होने के नाते किसी को सामर्थ्य से अधिक श्रम और तिरस्कार के कोल्हू में न पेला जाए तभी असंतोष भड़कने से रुक सकता है।

एक आदमी ने एक महात्मा से शिकायत की—भगवन् ! यह लड़का गुड़ बहुत खाता है। कहने से मानता ही नहीं। साधु ने धीरे से उसकी पत्नी से पूछा—क्यों जी ! आपके पति तो गुड़ न खाते होंगे। पत्नी बोली—महाराज ! ये तो लड़के से भी ज्यादा खाते हैं। साधु अब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन सज्जन की ओर देखकर बोले—बंधु कहने से नहीं अब पहले तुम ही गुड़ खाना छोड़ो, तुम्हारे न खाने से ही लड़का गुड़ खाना छोड़ेगा।

घर को सुन्दर, स्वच्छ, सुव्यवस्थित बनाने में बच्चा-बच्चा योगदान देने लगे और अनुशासन, नियमितता का हर एक को समुचित ध्यान रहे, ऐसा ढर्रा पड़ना चाहिए। स्थिति के अनुरूप जेब खर्च करने की छूट रहे। पैसे-पैसे के लिए मुहताज घर का कोई सदस्य नहीं रहना चाहिए। क्रोध, आवेश, उत्तेजना, अवज्ञा या उच्छृंखलता के बीज जहाँ भी जिसमें भी पनपें उसे आरंभ से ही रोके जाने, सुधारे सँभाले जाने का ध्यान पूरे परिवार को रहे, अनुचित गतिविधियाँ किसी की भी क्यों न हों, कोई भी उनका परोक्ष समर्थन न करे और न उपेक्षा बरते। सब मिलकर ऐसे विष बीज यदि आरंभ में ही उखाड़ फेंकने के लिए सतर्क रहें और प्यार, न्याय, तर्क एवं दबाव से ऐसी विकृतियों का समाधान करते रहें तो घर में कुसंस्कारिता पनपने न पाएगी और सुसंस्कृत परिवार की संरचना एवं संघटना संभव हो सकेगी।

कुरीतियों और अंध परंपराओं में बहुत सा पैसा और समय खर्च हो जाता है। बड़े-बूढे इन बातों पर प्रायः जोर देते हैं। इस संबंध में हमें विवेकवान होना चाहिए और निरर्थक रूढ़ियों को हटाने-घटाने में थोड़ा विरोध सहना पड़ता हो तो भी सहना चाहिए। क्योंकि वे बुराइयाँ परिवार का अविवेक और दारिद्रय ही बढ़ा सकती हैं। एक से दूसरा अनुकरण करता है जो वह ढर्रा दूसरे परिवार में भी चल पड़ता है जिससे अंततः सारे समाज और देश को हानि पहुँचती है।

श्री जगदीशचंद्र बोस कलकत्ता यूनिवर्सिटी में विज्ञान पढ़ाते थे। अंग्रेज अध्यापक जो उनके समकक्ष थे उन्हें अधिक वेतन मिलता था, यह देखकर उन्होंने कहा—जब तक मेरा वेतन उतना नहीं होगा, तब तक वेतन ही नहीं लूँगा। इससे उन्हें आर्थिक तंगी हुई। वे प्रतिदिन हुगली नदी पार करके यूनिवर्सिटी जाते थे। अब तो नाव के पैसे भी चुकाना मुश्किल था। इनकी पत्नी अबला बसु ने अपनी अँगूठी बेचकर एक छोटी किश्ती खरीद ली और जब तक अंग्रेजों ने उनकी बात न मान ली, अबला बसु खुद ही पति को हुगली के पार नाव खेकर ले जातीं और लाती रहीं।

नित्य परिवार गोष्ठी के रूप में विचारोत्तेजक लेख या संस्मरण, कथा प्रसंग या समाचार सुनाने और उनकी समीक्षा करने की परिपाटी आवश्यक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रूप से चलती रहनी चाहिए। शिक्षित लोग सत्साहित्य के चुने हुए प्रसंग रात्रि के समय थोड़ा समय निर्धारित करके नियमित रूप से सुनाया करें तो इस प्रशिक्षण से परिवार के भावनात्मक विकास और अनुभव में भारी वृद्धि हो सकती है और उसका आशाजनक लाभ मिल सकता है।

प्रश्न

१. परिवार के विघटन से क्या हानियाँ हैं ?
२. भारतवर्ष में संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली क्यों आवश्यक है ?
३. बड़े परिवारों में सुव्यवस्था कैसे रखी जाए ?
४. छोटों के बड़ों के प्रति तथा बड़ों के छोटों के प्रति कर्त्तव्य लिखो ?
५. उपार्जन करने वाले लोग कौन से दायित्व अनिवार्य रूप से निवाहें ?
६. बच्चों में पारिवारिक व्यवस्था के कौन से संस्कार डाले जाएँ ?
७. घरेलू व्यवस्था में क्या सावधानियाँ आवश्यक हैं ?
८. संतान सीमित होना क्यों आवश्यक है ?
९. कुरीतियों और अंध-परंपराओं की हानियाँ बताओ ?
१०. परिवार के भावनात्मक विकास तथा अनुभव में वृद्धि के लिए क्या करें ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संयुक्त परिवार प्रणाली श्रेयस्कर

कुछ दिन पहले अनुभव हीनता के जोश और आवेश में यह प्रतिपादन शुरू किया गया था कि संयुक्त परिवार प्रणाली को तोड़ा जाए और उसके स्थान पर पति-पत्नी मात्र के छोटे परिवार बसाए जाएँ।

इस बढ़ती हुई अलगाव की प्रवृत्ति के बारे में हमें कई पहलुओं से उसके गुण-दोषों पर विचार करना होगा। प्रथम पाश्चात्य देशों, जहाँ से यह प्रवृत्ति आरंभ हुई, उनके सामने प्रस्तुत हुए प्रतिफलों को देखना पड़ेगा। आरंभ में पति-पत्नी को, अधिक खर्च करने और कम काम करने की सुविधा जरूर मिल जाती है और नए लड़के इसमें अपना लाभ देखकर प्रसन्न होते हैं, पर कुछ ही दिनों में अपनी भूल प्रतीत होने लगती है। पत्नी गर्भवती होती है, शरीर में कितने ही तरह के विकार उठ खड़े होते हैं, काम कम और आराम अधिक करने की इच्छा होती है, उस समय किसी सहायक की जरूरत पड़ती है, पर एकाकी गृहस्थ में तो सब कुछ स्वयं ही करना पड़ेगा। प्रसव काल में कष्ट बहुत होता है। उस समय भी गहरी सहानुभूति वाला कुटुंबी आवश्यक लगता है। प्रसूति काल में लंघन के रोगी की तरह चारपाई पकड़ लेनी पड़ती है और हर घड़ी सहायता की इच्छा रहती है। बच्चा एक पूरे गृहस्थ के बराबर काम लेकर आता है। हर घड़ी उसकी निगरानी, सफाई व सेवा की जरूरत पड़ती है। अस्वस्थ होने पर वह रोता-चिल्लाता बहुत है। कई बार तो नींद हराम कर देता है। उसे संभालते हुए घर के दूसरे भोजन बनाने आदि का काम जो समय पर पूरा होना चाहते हैं—मुश्किल पड़ते हैं। बच्चे बढ़ते जाते, समस्याएँ भी बढ़ती जाती हैं। संयुक्त कुटुंब में यह सब पता भी नहीं चलता। कोई कुछ कर जाता है, कोई कुछ संभाल लेता है। अकेली बेचारी स्त्री क्या-क्या करे ? पति अपने ही गोरखधंधे में लगे रहते हैं, सहायता करना तो दूर, अपनी ही फरमाइशें पूरी न होने और गृह व्यवस्था में कमी आने से उलटे झल्लाए रहने लगते हैं। उस समय नव वधू को समझ आती है कि सुविधा की दृष्टि से संयुक्त परिवार प्रथा ही अच्छी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हारी-बीमारी, असमर्थता, दुर्घटना, लड़ाई-झगड़ा आदि अवसरों पर संयुक्त कुटुंब का लाभ प्रतीत होता है, जब एक की विपत्ति में दूसरे सब उठ खड़े होते हैं और अपने-अपने ढंग से सहायता करके बोझ हलका करते हैं। विवाह-शादियों में एक बारगी बहुत खर्च करना पड़ता है। एक व्यक्ति के लिए उतनी बचत कठिन पड़ती है, पर कुटुंब की मिली-जुली पूँजी और आर्थिक स्थिति में वह पहिया भी लुढ़कता रहता है और खर्चीली शादियाँ भी उसी ढर्रे में होती चली जाती हैं। विधवा को आर्थिक संकट और विधुरों को गृह व्यवस्था की कठिनाई नहीं पड़ती, वे भी उसी साँचे में समा जाते हैं और निर्वाह क्रम किसी प्रकार चलता ही रहता है। परित्यक्ताएँ और पति विमुक्त महिलाएँ अपने बच्चों समेत मैके चली जाती हैं और परिवार का भी गुजारा उसी श्रृंखला में बँधकर होने लगता है। ऐसी महिलाएँ एकाकी अपना भार स्वयं नहीं उठा पातीं और यदि एकाकी भाई है तो इतना बोझ उठाना उसके लिए भी कठिन पड़ता है। संयुक्त परिवार प्रणाली ही है, जिसमें अयोग्य, असमर्थ, पागल, दुर्गुणी भी खप जाते हैं। एकाकी होते तो उन्हें भीख मिलना, जीवित रहना भी कठिन पड़ता।

एक किसान के चारों बेटों में झगड़ा हो गया। चारों बँटवारे की जिद करने लगे। पिता ने एक लकड़ी को इशारा करते हुए कहा—तुम लोग इसे उठाओ। सभी लड़कों ने उसे उठा लिया। फिर उसने लकड़ी का बोझ रखकर कहा—अब इसे एक-एक करके उठाओ, तो कोई लड़का नहीं उठा पाया। फिर उसने कहा—सब मिलकर उठाओ। इस बार पहले की तरह ही लकड़ी का गट्ठा तत्काल उठ गया, साथ ही लड़कों को संयुक्त शक्ति का पता चल गया, अतएव उन्होंने बँटवारे का आग्रह छोड़ दिया।

संयुक्त परिवार प्रथा में सब सदस्यों का उपार्जन एक जगह इकट्ठा होता है और उस सम्मिलित पूँजी में बड़े व्यवसाय आसानी से आरम्भ हो जाते हैं। नौकर मंहगे पड़ते हैं, ईमानदार भी नहीं होते, दिन-रात जुटे भी नहीं रहते, अधिक लाभ में उनकी दिलचस्पी भी नहीं होती, इसलिए नौकरों की अपेक्षा घर के आदमी सदा अधिक लाभदायक सिद्ध होते हैं। घर की पूँजी और घर का श्रम जुट जाए तो किसी भी व्यवसाय में लाभ होगा। किसान के लिए तो यह जीवन मरण का प्रश्न है। उसके पास घर, खेत और पशुओं के इतने अधिक काम रहते हैं कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनमें छोटे बच्चे और बूढ़े असमर्थ भी बहुत सहायता कर सकते हैं। सबके मिले हुए श्रम से ही कृषि और पशु पालन लाभदायक रहता है अन्यथा नौकर रखकर मामूली किसान रोटी भी नहीं पा सकता।

वृद्धावस्था का जीवन शान और शान्ति से संयुक्त कुटुम्ब में ही संभव है। जरा जीर्ण शरीर जब अपना बोझ आप नहीं ढो पाता और रुग्णता साथी बन जाती है, तब कुटुंबियों की सेवा, सहायता अपेक्षित रहती है। अपनी निज की कमाई या बचत न होने पर आवश्यक खर्च भी बेटे-पोते ही उठाते हैं। हारी-बीमारी में उन्हीं की सहायता मिलती है। शारीरिक और मानसिक दृष्टि से दुर्बल बने व्यक्ति की आमतौर से उपेक्षा ही होती है, पर संयुक्त परिवार में मान, इज्जत ज्यों की त्यों बनी रहती है वरन् और अधिक बढ़ जाती है। बिना पूछे कोई बड़ा काम नहीं होता इससे वृद्ध का गर्व-गौरव एवं सम्मान भी अक्षुण्ण बना रहता है।

अपने गरीब और कृषि प्रधान देश के लिए संयुक्त परिवार प्रणाली एक वरदान है। उसके अनेक लाभ हैं। आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास की दृष्टि से भी उसका महत्त्व है। पिता-माता की सेवा, भाई-बहिनों की सहायता, कुटुंबियों की समस्याएँ अपनी समझने और उन्हें सुलझाने में संलग्न रहकर व्यक्ति अपनी स्वार्थपरता को घटाता और उदारता को बढ़ाता ही है। जिसकी ममता का दायरा जितना बड़ा है, उसे उतना ही श्रेष्ठ कहा जाएगा। स्वार्थ को शरीर से बढ़ाकर कुटुंबियों तक विस्तृत करना—"वसुधैव कुटुंबकम्" की महानता अपनाने का एक प्रारम्भिक ही सही पर महत्त्वपूर्ण कदम है। अपनी देह और बीबी तक की बात सोचने वाला व्यक्ति कृपण ही कहा जाएगा और उसे चढ़ती उम्र में कुछ सुविधाएँ पा लेने के अतिरिक्त शेष जीवन में इस संकीर्णता का दण्ड ही भोगना पड़ेगा।

गोपाल कृष्ण गोखले बाल्यावस्था में बहुत गरीब थे, पर उनकी पढ़ने की इच्छा थी। अतः उनकी एक भाभी (गोविंद राव की पत्नी) ने अपने आभूषण बेच दिए और फीस भर दी। गोपाल कृष्ण बोले—भाभी जी ! आपने यह क्या किया ? वे बोलीं—यदि हम एक-दूसरे के प्रति त्याग का भाव न रखें, तो संयुक्त कुटुंब का क्या अर्थ ? घर के सभी खर्चों में कमी करके भी गोपाल कृष्ण गोखले को पढ़ाया गया। गोखले अपने भाई साहब व भाभी के प्रति देव तुल्य श्रद्धा रखते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज संयुक्त कुटुंब इसलिए अनुपयोगी और मनोमालिन्य के केन्द्र बनते और बिखरते चले जाते हैं कि उनमें कर्त्तव्यों और अधिकारों का विभाजन ठीक तरह नहीं हो पाता। कुछ लोग बड़प्पन के नाम पर मौज करते हैं, कुछ को छोटे पद के कारण कोल्हू के बैल की तरह पिसना पड़ता है। जिनके हाथ में पूँजी या सत्ता है, वे मनमाना उपयोग करते हैं और शेष को जरा-जरा सी बात के लिए मुख ताकना और विवश रहना पड़ता है। परस्पर सौजन्य, शिष्टाचार, स्नेह, सद्भाव, सम्मान और सहयोग की भावनायें कम पड़ने से भी असंतोष, रोष और मनोमालिन्य रहने लगता है। इन कारणों को दूर करने के लिए परिवार के हर सदस्य का प्रशिक्षण किया जाना चाहिए। एक आचार संहिता रहनी चाहिए, जिसके आधार पर हर छोटे-बड़े को अपने कर्त्तव्यों का पूरा ध्यान हो और हर कोई अधिकार पाने की उपेक्षा करके कर्त्तव्य पालन के लिए अधिक तत्परता पूर्वक संलग्न रहे।

स्कूल के दरवाजे से लौटते देखकर साथी ने पूछा—क्यों लौटे जा रहे हो। किशोर ने उत्तर दिया—अरे भाई ! आज मैं अपने माता-पिता के पैर छूना भूल गया। कहकर वह तेजी से घर की ओर बढ़ा। साथी ने याद दिलाई-देर हो जाने से स्कूल में दंड मिलेगा। उस बच्चे का उत्तर था—अपने माता-पिता के आशीर्वाद की तुलना में स्कूल का दंड बिल्कुल नगण्य है।

परिवार को एक सहकारी समिति मानकर इस प्रकार गठित किया जाना चाहिए कि हर किसी को अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए स्वेच्छापूर्वक विवश होना पड़े। एक दूसरे के लिए असीम प्यार रखें और अपनी अपेक्षा अन्यों की सुविधा को प्राथमिकता देते रहें। आवेश और कटुता की, दुर्भाव और तिरस्कार की, आलस्य और अकर्मण्यता की, अहंकार और दबाव की क्षुद्रताएँ यदि निरस्त की जा सकें तो बिखरते परिवारों को पुनः संयुक्त रहने के लिए सहमत किया जा सकता है। सुव्यवस्थित आचार संहिता पर निर्धारित हमारी संयुक्त परिवार प्रणाली अपने देश के लिए तो उपयोगी सिद्ध होगी ही साथ ही समस्त संसार को इस परंपरा को अपनाने के लिए आकर्षित करेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. संयुक्त परिवार प्रणाली समाप्त क्यों होती जा रही है ?
२. संयुक्त परिवार प्रणाली की उपादेयता पर प्रकाश डालें ?
३. संयुक्त परिवार प्रणाली सहकारी व्यवस्था है ? सिद्ध कीजिए।
४. कृषि, पशुपालन एवं उद्योग धन्धों में संयुक्त परिवार को अधिक लाभ क्यों होता है ?
५. वृद्ध का मान-सम्मान एवं गौरव संयुक्त परिवार में सुरक्षित है, प्रमाणित कीजिए।
६. वसुधैव कुटुंबकम् से क्या समझते हो ?
७. संयुक्त कुटुंब के कतिपय दोष बताइए ?
८. संयुक्त परिवार की आचार संहिता का आधार क्या हो ?
९. संयुक्त परिवार की परंपरा को कैसे जीवित रखा जाय ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दांपत्य जीवन

दो भिन्न स्थानों, भिन्न परिवारों, भिन्न वातावरणों में पैदा हुए और पले नर-नारी भिन्न प्रकृति और भिन्न आकृति के होते हुए भी समग्र एकता के सूत्र में बँधकर विवाह का प्रयोजन पूरा करते हैं। विवाह का वास्तविक उद्देश्य है दो आत्माओं की प्रथकता समाप्त करके एक-दूसरे के लिए समर्पण। इस समन्वय और समर्पण से एक ऐसी सम्मिलित सत्ता का विकास होता है जो प्रथकत्व के बाह्य लक्षण बनाए रहते हुए भी आंतरिक एकता के रूप में परिणित हो सके।

च्यवन समाधि में लीन थे, उनकी आँखें किसी कीड़े की तरह चमक रही थीं। शरीर में दीमकों ने बॉबी लगा ली थी। सुकन्या अपने पिता के साथ वन विहार के लिए आई हुई थी। उसने खेलवश ऋषि की आँखें फोड़ दीं। पीछे पता चलने पर उसे बड़ा पश्चाताप हुआ। उसने प्रायश्चित स्वरूप वृद्ध ऋषि से विवाह का निश्चय किया, यह बात महाराज को मालूम पड़ी तो उन्होंने सुकन्या से ऐसा करने को मना किया लेकिन सुकन्या ने च्यवन से ही शादी की और दिखा दिया कि विवाह का उद्देश्य शारीरिक सुख ही नहीं, आत्माओं के विकास में सहयोग देना है। उसकी इस साधना से अश्विनीकुमार बहुत प्रभावित हुए उन्होंने च्यवन की आँखें भी अच्छी कर दीं और बुढ़ापा भी दूर कर दिया।

आध्यात्मिक प्रगति का आधार है प्रेम। जिसके अंतःकरण में जितना अधिक, जितना निर्मल प्रेम उफनता है वह उतना ही बड़ा संत है। भक्ति का अर्थ है प्रेम भावना। भक्त का अर्थ है प्रेमी। भगवान से प्रेम करने की साधना हमारे जीवन को प्रेम भावना से ओत-प्रोत करने के लिए है। प्रेम को परमेश्वर कहा जाता है। मनुष्य के अंतःकरण में भगवान की अनुभूति उफनती हुई प्रेम भावनाओं के रूप में ही होती है। इस आध्यात्मिक महत्ता का अभ्यास दांपत्य-जीवन की प्रयोगशाला में किया जाता है। एक-दूसरे के प्रति अनन्य आत्मीयता, श्रद्धा, सौजन्य, समता और वफादारी का आरोपण कर इतना अनुराग उत्पन्न करते हैं कि साथी यदि दोष-दुर्गुणों से भरा हुआ, अयोग्य या अकिंचन हो तो भी वह संसार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का सबसे बड़ा सुन्दर रूपवान, गुणवान, योग्य एवं सज्जन प्रतीत होने लगता है। आत्मीयता ऐसी ही वस्तु है, जिस पर भी आरोपित की जाती है उसे परम प्रिय बना देती है। पति-पत्नी में भी मनुष्योचित दुर्बलताएँ एवं त्रुटियाँ रहती हैं, पर यदि विवाह के उद्देश्य को समझकर परस्पर आत्मीयता, समर्पण, एकता और ममता का आरोपण कर लिया गया है तो उन त्रुटियों के रहते हुए भी—न सुधरते हुए भी गृहस्थ जीवन की नाव आनंदपूर्वक आगे बढ़ चलती है। वैसे होता यह है कि अपने लिए कुछ नहीं—साथी के लिए सब कुछ की बात सोचने वाला पक्ष अपनी त्रुटियों को सहज ही सुधार लेता है ताकि उसके कारण साथी को किसी प्रकार की असुविधा आदि का सामना न करना पड़े।

गांधारी विवाह कर आई तब पता चला कि पति धृतराष्ट्र अंधे हैं। एक बार वरण कर लिया तो फिर पति की अनुकूलता ही श्रेयस्कर है। गांधारी ने प्रतिज्ञा करके अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली और आजीवन कभी भी पट्टी नहीं खोली। उनकी इस पतिव्रत तपश्चर्या का ही फल था कि जब उन्होंने अपने पुत्र दुर्योधन को पट्टी खोलकर देखा तो उसका सारा शरीर वज्र का हो गया।

योग का अर्थ है, जोड़। दो आत्माओं को जोड़ देना भी एक योग साधना है। राजयोग, हठयोग, जपयोग, लययोग, प्राणयोग आदि की तरह गृहस्थयोग भी एक उच्चकोटि की साधना है। जिसका प्रतिफल पहले ही दिन से मिलना आरम्भ हो जाता है। अन्य साधनाए कालांतर में फल देती हैं, पर इस गृहस्थयोग की साधना से आरंभ के दिन से ही प्रतिफल मिलना आरंभ हो जाता है। एकाकीपन में जो सूनापन, नीरसता और अनिश्चतता है बात की बात में दूर हो जाती है। मिला तो एक ही साथी है पर लगता है कि उस साथी के गुण, कर्म और परिजन सभी अपनी सहायता करने वाली सेना के रूप में अपने साथी बन चले। इस अनुभूति में दांपत्य-जीवन के दोनों पक्ष अपने को बहुत समर्थ मानते हैं और साथी के स्नेह, सौजन्य की अमृतमयी अनुभूति से हर घड़ी सरसता अनुभव करते रहते हैं। गंगा और यमुना के मिलने का संगम तीर्थराज बन जाता है। दो आत्माओं का आंतरिक मिलन—विवाह एक वैयक्तिक तीर्थराज है जिसमें स्नान करते हुए पुण्य प्रक्रिया का अनुभव पति-पत्नी दोनों को ही निरंतर होता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाह-दिवस मनाने का निश्चय हुआ, पत्नी मेरी ने सोचा-पति की घड़ी की चैन खराब हो गई है, उस दिन उपहार में चैन दूँगी और पति ने निश्चय किया पत्नी के बालों को सँवारने के लिए बढ़िया कंघा नहीं है, कंघा चाहिए, पर पास में पैसे दोनों में से किसी के नहीं थे, अब क्या हो ? पति बाजार गया और घड़ी बेचकर हाथी-दाँत का कंघा खरीद लिया। मेरी गई तो उसने अपने बाल कटवा दिए और पति की घड़ी के लिए चैन खरीद ली। दोनों घर आए और अपना-अपना उपहार देने लगे तो न चैन के लिए घड़ी थी, न कंघे के लिए बाल। एक क्षण दोनों चुप रहे, पर परस्पर प्रगाढ़ प्रेम की बात स्मरण करते ही दोनों मुस्करा उठे।

विवाह के उपर्युक्त परम प्रयोजन को समझने और चरितार्थ करने वाले जोड़े अपने छोटे-छोटे घरौंदों में गरीबी का जीवन जीते हुए भी स्वर्ग जैसी शांति, प्रसन्नता, प्रफुल्लता, संतुष्टि, सरसता और सुविधा का आनंद लेते हैं। उन्हें साथी के रूप में शिक्षा, गुण अथवा योग्यता की चर्चा अनावश्यक लगती है क्योंकि सच्चा प्रेम इन सबके अभाव में भी साथी को देवता जैसा बना देता है। प्रेम भरे अनुरोध से वह या तो सहचर की त्रुटियों को सुधार लेता है, अथवा अपनी सहिष्णुता से उन्हें दर गुजर करके भी काम चला लेता है। जहाँ स्नेह और सद्भावना की समुचित मात्रा विद्यमान हो वहाँ क्लेश-कलह का कोई कारण शेष नहीं रह जाता है। मिलन का प्रतिफल आनंद ही होना चाहिये। गृहस्थयोग की साधना से जो अनेक ऋद्धि-सिद्धियाँ मिलती है उनमें से सतगुणी सुयोग्य सन्तान और सुव्यवस्थित परिवार के प्रतिफल भी हैं। जिन पति-पत्नी में हार्दिक प्रेम और अटूट विश्वास होगा उनकी संतानें कभी कुपात्र नहीं निकलेंगी। प्रेम का पोषण जिन्होंने अपनी माता की प्रगाढ़ आत्मीयता में से उपलब्ध किया है उन बालकों में अनायास ही असंख्य सद्गुण विकसित रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने छोटे या बड़े परिवार की स्नेह, सौजन्य की श्रृंखला में बँधे रहकर कुटुंब के हर सदस्य को सुखी एवं विकासोन्मुख होने का अवसर देते हैं।

कबीर अपने दरवाजे पर बैठे ग्राम-वासियों को उपदेश दे रहे थे। तभी एक युवक ने पूछा—महाराज ! यह तो बताइये कि विवाह करना ठीक होता है या नहीं। कबीर एक क्षण चुप रहे फिर अपनी पत्नी को आवाज देकर बुलाया और कहा—देख ! यहाँ बड़ा अंधकार फैला हुआ है, दीपक जलाकर तो ले आ। धर्मपत्नी घर में गई और दीपक जलाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ले आई। युवक हँसकर बोला—महाराज ! आप तो विलक्षण हैं ही आपकी पत्नी भी खूब हैं। आप दिन को रात बताते हैं, तो पत्नी ने दीपक जलाकर आपकी बात का समर्थन भी कर दिया। क्या खूब नाटक रहा ?

कबीर हँसकर बोले—नाटक नहीं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर था। जो युवक-युवती एक-दूसरे पर इतना प्रगाढ़ विश्वास रख सकें, उन्हें ही विवाह करना चाहिए।

आज लोगों ने विवाह के उच्च उद्देश्य एवं आदर्श को ही भुला दिया। अब काम क्रीड़ा की पशुता का एक उद्घोषित प्रमाण पत्र विवाह रह गया है। वासना और विलासिता की दृष्टि से जोड़े मिलाए जाते हैं। लड़के रूपवती और उत्तेजित लड़कियाँ ढूँढते हैं ताकि वासना का अधिक आकर्षण एवं उपयोग प्राप्त हो सके। लड़कियाँ उपर्युक्त तथ्य के अतिरिक्त अर्थ उपार्जन के अधिक चौड़े स्रोत भी ढूँढ़ती हैं ताकि उन्हें विलासिता और आरामतलबी की अधिक सुविधा मिल सके। लड़के और लड़की का रूप-लावण्य आज प्रधानता पूर्वक देखे जाते हैं। सोचा जाता है कि यह उपलब्धियाँ मिल जाएँ तो विवाह सार्थक माना जाएगा, पर यह भुला दिया जाता है कि विवाह की सफलता का आधार साथी की मनोभूमि, संस्कृति एवं आदर्शवादिता ही है। काम-कौतुक के लिए, उपभोग के लिए विवाह नहीं किए जाते, उनका प्रयोजन आध्यात्मिक है। जहाँ इस दृष्टिकोण से विवाह संपन्न होगा वहाँ गृहस्थ जीवन का आनंद मिलेगा अन्यथा काम-कौतुक के क्षणों को छोड़कर शेष समय उनमें अविश्वास और असंतोष ही बना रहेगा। सच्ची सहानुभूति, ममता और एकता के बिना, पास रहते हुए भी दूरवर्ती अपरिचितों की तरह वे गृहस्थ की लाश ढो रहे होंगे।

पूर्व जन्म के किसी कुकृत्य के कारण, कौशिकी को जो पति मिला वह कुष्ठ का रोगी हो गया। कौशिकी ने फिर भी उसकी सेवा में रत्ती भर अंतर न आने दिया। एक दिन वह अपने पति को कंधे पर बैठाये अंधेरे में गंगा स्नान के लिए ले जा रही थी, उनका पैर साधना लीन ऋषि माण्डव्य के शरीर से टकरा गया। ऋषि ने कुपित होकर शाप दे दिया—इसकी सूर्योदय होते ही मृत्यु हो जाएगी, किंतु कौशिकी ने अपने पतिव्रत के बल से सूर्य को भी रोक कर जग में यश पाया। बाद में अनुसुइया के आग्रह पर उसने तब सूर्योदय होने दिया जब उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पति को जराजीर्ण देह समाप्त होकर दिव्य देह पाने का वरदान मिल गया।

विवाह एक आध्यात्मिक साधना है। विवाह एक प्रेम बल्लरी का आत्मोत्सर्ग की उच्च भावनाओं द्वारा किया जाने वाला अभिसिंचन है। यह सज्जनों और शूरवीरों का काम है। कामी, दुष्ट, छली और विश्वासघाती लोग विवाह की पवित्र संस्था को बदनाम करने से दूर रहें और एकाकी जीवन जिएँ यही अच्छा है। जिनका विवाह हो चुका है या जिन्हें करना है उन्हें हजार बार सोच लेना चाहिए कि साथी के ऊपर समता, सद्भावना एवं आत्मीयता हमें उड़ेलनी है। उसकी प्रवृत्ति, मित्रता को निबाहना है। अभीष्ट अनुकूलता उत्पन्न न भी हो सकी तो सहिष्णुता अपनाकर दर गुजर करनी है। दूसरी ओर से समुचित प्रत्युत्तर न मिले तो अपनी ओर से आजीवन ऐसा व्यवहार करते रहना है जिससे विवाह साधना के पुनीत आदर्श को कलंकित होने का अवसर न मिले।

इस दिशा में पति का कर्त्तव्य चौगुना-सौगुना है क्योंकि परिस्थितियों ने आज उसे अधिक सार्थकता एवं सुविधा प्रदान की है। रंग-रूप की बात मस्तिष्क से निकाल देना चाहिए। चमड़ी के आकर्षण खिंचाव विशुद्ध रूप से व्यभिचार हैं इन्हें भले ही वह अविवाहित हो या विवाहित जीवन में भी कभी न अपनाया जाए। गुणों के आकर्षण पर रीझना चाहिए। विवाह करने से पूर्व साथी के बारे में हजार बार विचार करें, पर यदि उसे अपना लिया तो हजार दोष दुर्गुण रहते हुए भी उसे छाती से बाँधकर रखना चाहिये और अपनी ओर से कर्त्तव्य पालन के अंतिम छोर तक जाना चाहिए। भारतीय धर्म में देवसाक्षी देकर दूसरे का हाथ इस शर्त पर पकड़ा जाता है कि वह अयोग्य, असमर्थ, रुग्ण अथवा दुर्गुणी हो तो भी उसे परिपूर्ण निष्ठा के साथ निबाहा जाएगा। विवाह पूर्व के चारित्रिक दोषों के बारे में सोच-विचार करना निरर्थक है। जिस दिन से अपना विवाह हुआ उसी दिन से पतिव्रत और पत्नीव्रत आरम्भ हो जाता है। उदारता और क्षमा का जितना अधिक प्रयोग परस्पर किया जा सके उतनी ही गृहस्थ जीवन की सफलता सम्भव हो सकेगी।

किसी साधारण बात पर रुष्ट होकर महाराज प्रसिचेत ने अपनी पत्नी का परित्याग कर दिया। उनके इस अहंकारपूर्ण कृत्य से दुःखी होकर राज पुरोहित ने उनका साथ छोड़ दिया। धीरे-धीरे बात प्रजा के कानों में पहुँची। लोग स्पष्ट कहने लगे जो व्यक्ति अपने स्वजन सम्बन्धी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की रक्षा नहीं कर सकता, वह प्रजा की क्या रक्षा करेगा ? लोग राजाज्ञाओं का उल्लंघन करने लगे। इस स्थिति में पड़ौसी राजा ने प्रसिचेत पर आक्रमण कर दिया।

प्रसिचेत सेना लेकर मुकाबले के लिए चल पड़े। मार्ग में महर्षि उद्दालक का आश्रम पड़ता था। वे महर्षि से मिलने को रुके, पहले तो महर्षि ने शासकोचित स्वागत की तैयारी की, पर तभी उन्हें पता चला कि महाराज ने अपनी पत्नी का परित्याग कर दिया है तो उन्होंने स्वागत की सारी तैयारी स्थगित कर दी और उनसे एक साधारण नागरिक की तरह मिले।

राजा ने इसका कारण पूछा तो महर्षि ने कहा—राजन् ! पत्नी का परित्याग करना अधर्म है और धर्म से पतित कोई भी क्यों न हो, उसकी मान-मर्यादा वैसे ही नष्ट हो जाती है, जैसे आपकी। राजा ने भूल समझी और पत्नी को फिर बुला लिया और उससे उनकी शासन व्यवस्था भी सँभल गई।

छोटे घर-घरानों को स्वर्ग का वातावरण निर्मित करने की एक प्रयोगशाला बनाकर रखा जाना चाहिये। पतिव्रत धर्म एवं पत्नीव्रत धर्म के अंतर्गत दोनों के ऊपर जिन कर्त्तव्यों का, उत्तरदायित्वों का भार आता है उसे अति-उत्साहपूर्वक वहन किया जाना चाहिए और प्रयत्न यह होना चाहिए कि साथी की तुलना में अपनी भूमिका अधिक ऊँची बनी रहे। भारतीय नारियों की पतिव्रत-साधना एक ऐतिहासिक तथा मनोवैज्ञानिक तथ्य है। उनमें ६० प्रतिशत अपना भाग ईमानदारी से पूरा करती है। अशिक्षा, अनुभवहीनता एवं संकुचित वातावरण में आबद्ध रहने के कारण उनके कर्त्तव्य और व्यवहार में कुछ दोष रहने स्वाभाविक हैं। इन्हीं कारणों को निवारण करके बदला जा सकता है, पर उनकी ईमानदारी, वफादारी असंदिग्ध है। यों १० प्रतिशत में पुरुषों के उत्पन्न किए मूल दोष भी हो सकते हैं, पर उनमें से अधिकांश की सज्जनता असंदिग्ध है। पतिव्रत धर्म ही स्वर्ग मोक्ष की साधना है, पति को परमेश्वर मानना चाहिए, उसके प्रति वफादारी, उदारता और सेवा भावना बरतनी चाहिए, इन उपदेशों को बहुत दिन से सुना जाता रहा है। महिला वर्ग ने उसका पालन इतनी खूबी के साथ किया है कि इस इतिहास से संसार चमत्कृत है। आज भी भारत के गये गुजरे गृहस्थ को देखकर पाश्चात्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभ्यताभिमानी यही सोचते हैं कि आदर्श परिवार बसाने की प्रक्रिया भारत से सीखनी होगी। इस गौरव में नारी की ही भूमिका प्रधान है।

सावित्री ने सत्यवान को निश्चित रूप से वरण कर लिया। यह समाचार सुनते ही देवर्षि नारद सावित्री के पिता अश्वपति के पास पहुँचे और बताया कि सत्यवान की जन्मकुण्डली के अनुसार उसकी आयु अब एक वर्ष ही शेष रही है। अश्वपति ने सावित्री को बुलाकर यह संबंध ठुकरा देने को कहा, इस पर सावित्री ने कहा—नेकी और ईमानदारी का जीवन एक वर्ष ही हो तो काफी है, पर मैं किसी अयोग्य व्यक्ति से विवाह नहीं करूँगी।

सावित्री ने सत्यवान से ही विवाह किया और कठोर पतिव्रत धर्म के प्रभाव से यमराज को भी अपने पति की आयु बढ़ाने को बाध्य कर दिया।

जो आशाएँ हम पत्नी से करते हैं उसका प्रशिक्षण पति को अपने व्यवहार एवं सद्गुणों से करना चाहिये। कोई नहीं चाहता कि हमारी पत्नी दुराचारिणी, फिजूलखर्च, दुराव रखने वाली, असहिष्णु, आवेशग्रस्त, कटुभाषी जैसी दुर्गुणयुक्त हो। इसलिए उसका कर्त्तव्य है कि पत्नी के आगे इन्हीं अपनी विशेषताओं का ध्यान रखे। बीमारी, सन्तान न होने, मंदबुद्धि अथवा व्यवहार ज्ञान की न्यूनता के कारण पत्नी को छोड़ देने, अपमानित करने अथवा सताने की बात सोचना भी पत्नीव्रत धर्म के महान आदर्श के प्रतिकूल है। शंकर जी सर्पों को शरीर में लपेटे रहते थे। चंदन वृक्ष पर भी साँप, बिच्छू लिपटे रहते हैं। एक सज्जन पति का भी कर्त्तव्य है कि पत्नी में इस प्रकार की कमियाँ हों तो भी अपनी ओर से कर्त्तव्य पालन में रत्ती भर भी न्यूनता न आने देकर स्नेह, सद्भावना, सेवा और उदारता का ही व्यवहार करें। पतिव्रत धर्म नारी समाज में बहुत कर जिन्दा है। अब पुरुष का काम है कि पत्नीव्रत की आदर्शवादिता को अपनाए और गृहस्थ जीवन की उत्कृष्टता से घर को स्वर्ग बनाए और संसार को एक महत्तम मार्गदर्शन प्रस्तुत करे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. आध्यात्मिक प्रगति का आधार क्या है ?
२. सिद्ध कीजिए कि दांपत्य जीवन आध्यात्मिकता की प्रयोगशाला है।
३. अपनी त्रुटियों को सहज ही कौन सुधार लेता है ?
४. योग का अर्थ क्या है ? योग कितने प्रकार के होते हैं ?
५. क्लेश एवं कलह मिटाने का क्या उपाय है ?
६. संतानें किन लोगों की कुपात्र नहीं होतीं ?
७. विवाह की सफलता का आधार क्या है ?
८. पाणिग्रहण की महत्ता क्या है ?
९. दांपत्य जीवन में स्वर्ग उतारने की व्यावहारिक योजना बताइए।
१०. छोटे घरों में स्वर्ग का वातावरण कैसे बनाया जा सकता है ?
११. पत्नीव्रत की आवश्यकता पतिव्रत से अधिक क्यों है ?
१२. पतिव्रत का महान आदर्श क्या है ?
१३. गृहस्थी को सुखी बनाने में पति का दायित्व अधिक क्यों है ?
१४. गृहस्थ जीवन का मूल आधार क्या है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नियोजित परिवार और सुसंस्कृत संतान

कोई समय था जब देश की जनसंख्या बहुत थोड़ी थी, विस्तृत वन भरे पड़े थे। पशु पालन और कृषि के लिए मनचाही जमीन उपलब्ध थी। तब अर्थव्यवस्था और सुरक्षा के लिए परिवार के सदस्यों की संख्या बहुत बड़ी होना उपयोगी था। जंगली जानवरों और दस्युओं से निपटने में भी वे ही समर्थ रहते थे, जिनका परिवार बड़ा था। उन दिनों पुत्र का जन्म, संतान की वृद्धि एक दैवी कृपा मानी जाती थी।

एक साधु के पास बैठे एक जिज्ञासु ने पूछा—महात्मन् ! शास्त्रों में बहु संतान का आर्शीवाद दिया जाता है, आप क्यों कहते हैं कि संतान कम होनी चाहिए। साधु ने आकाश की ओर देखा, चन्द्रमा निकलने में थोड़ी देर थी। उन्होंने पूछा—आकाश में क्या है ? असंख्य तारे। वह सज्जन बोले—अभी चंद्रमा निकलेगा तब, तब तो महाराज चंद्रमा के सामने सभी नक्षत्र प्रभावहीन हो जाएँगे। बस यही उत्तर है तुम्हारी बात का, समर्थ हो तो एक ही संतान हजार के बराबर होती है।

इन दिनों देश की जनसंख्या खतरे के बिंदु तक बढ़ गई है। हर मनुष्य के हिस्से में इतनी कम भूमि आती है, जिससे पर्याप्त अन्न उत्पादन के लिए सिर तोड़ परिश्रम करने पर भी विदेशों से कर्ज उधार तथा बदले में अति आवश्यक वस्तुएँ देकर किसी प्रकार पेट पालना संभव होता है। अनाज की मँहगाई आकाश को छू रही है। दूध, घी देवताओं को दुर्लभ हो रहा है। चाय और डालडा से इन पदार्थों की स्मृति जिंदा है। जिस क्रम से आबादी बढ़ रही है, उसे देखते हुए अगले दिनों अन्न की कमी, मँहगाई, दूध-घी की दुर्लभता बढ़ेगी। मनुष्यों के लिए ही जब निवास व अन्न कठिन हो जाएगा तो बेचारे पशु कहाँ रहेंगे—कैसे जिएँगे ?

पचास वर्ष पूर्व और आज की परिस्थिति में इस जनसंख्या की वृद्धि ने जमीन, आसमान जितना अंतर उत्पन्न कर दिया। यह क्रम, चक्रवृद्धि क्रम से बढ़ रहा है। अस्तु अगले दिनों यह विपन्नता और भी अधिक बढ़ेगी। उद्योग-धंधे, व्यापार, शिक्षा, सवारी आदि के साधन कितने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ायें जाएँ—आबादी जिस तेजी से बढ़ रही है, उसे देखते हुए वे कम ही पड़ते चले जाएँगे और दरिद्रता से लेकर अव्यवस्था तक असंख्य समस्याएँ बढ़ती और उलझती चली जाएँगी। निवास, बेरोजगारी, चिकित्सा की गुत्थियाँ अब भी पेचीदा हो रही हैं, अगले दिनों तो वे न सुलझने की की स्थिति में जा पहुँचेगी।

संतान की संख्या बढ़ाना आज की परिस्थितियों में अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में विपत्तियों को सीधा आमंत्रण देना है। मँहगाई और अपर्याप्त जीविका के कारण बच्चों के निवास, खेल-कूद के लिए स्थान कम मिलता है, उन्हें पौष्टिक भोजन नहीं मिल पाता। मँहगी शिक्षा और चिकित्सा के कारण न उनकी समय के अनुरूप ऊँची पढ़ाई की व्यवस्था बन पाती है और न चिकित्सा का समुचित प्रबन्ध होता है। ऐसी दशा में कौन आशा करेगा कि इन ढेरों बच्चों का समुचित विकास एवं पोषण एक औसत दर्जे का आदमी कर सकता है। उँगलियों पर गिने जाने वाले अमीरों की बात दूसरी है, सर्व साधारण के लिए तो यह भार जितना बढ़ेगा उतना ही असह्य बनेगा। समय कम और बच्चे अधिक होने पर उनकी ओर समुचित ध्यान भी तो नहीं दिया जा सकता। उनका स्वभाव, संस्कार, स्वास्थ्य सुविकसित करने के लिए अभिभावकों को पूरा ध्यान देना, समय और श्रम लगाना तथा पर्याप्त खर्च करना चाहिए, पर यह अधिक बालकों में सम्भव नहीं। इसलिए वे बेचारे जंगली घास-फूँस की तरह बढ़ते—अपनी मौत मरते, जीते और संस्कारी, कुसंस्कारी बनते रहते हैं। ऐसे बालक सारे परिवार के लिए—समस्त समाज के लिए एक सिर-दर्द ही रहते हैं। कुमार्गगामी या अस्वस्थ हो गए, तब तो उन्हें एक विपत्ति एवं अभिशाप ही कहा जाएगा।

रुक्मिणी को संतान की इच्छा हुई। अपनी इच्छा उन्होंने भगवान् कृष्ण से व्यक्त की, तो उन्होंने कहा—यदि ऐसी बात है तो चलो हम कल ही हिमालय तपश्चर्या के लिए चलेंगे। तप की बात सुनकर रुक्मिणी ठिठकी तो कृष्ण ने कहा—प्रिये ! किसी आत्मा को संसार में लाने का अधिकार तभी मिल सकता है, जब उसे संस्कारवान् बनाने की क्षमता भी हो। रुक्मिणी ने वस्तुस्थिति को समझ लिया और तप के लिए हिमालय चल दीं। तप के प्रभाव से उन्हें प्रद्युम्न जैसे वीर बालक की माता होने का सौभाग्य मिला।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतान संख्या को बढ़ाना अपनी पत्नी के साथ प्रत्यक्ष अत्याचार है। बच्चे को नौ महीने पेट में रखना, उसका शरीर अपने रक्त-माँस से बनाना, प्रसव पीड़ा, दूध पिलाना और अधूरी नींद ले पाना माता के लिए एक असाधारण भार है। उसकी पूर्ति के लिए उसे बहुमूल्य पौष्टिक भोजन, विश्राम तथा कई तरह की सुविधाएँ चाहिए। ये न मिलें और एक के बाद, दूसरे बच्चे जल्दी-जल्दी पैदा होते चले जाएँ तो निश्चित रूप से उस माता का स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा। अपने देश की चौथाई स्त्रियों का स्वास्थ्य इसी कारण खराब है, उन्हें अनेक तरह के भीतरी रोग घेरे रहते हैं। जवानी दो चार वर्ष के भीतर चली जाती है और उन्हें देखते-देखते बुढ़ापा आ घेरता है। प्रसव काल में अगणित स्त्रियाँ मरती हैं। दुर्बल शरीरों के लिए यह भार आखिर क्या परिणाम उत्पन्न कर सकता है ? यह स्पष्टतः एक हत्या-काण्डों की श्रृंखला है। जो जिस वजन को उठाने में असमर्थ है उसके ऊपर लादते ही चले जाएँ तो आखिर बेचारे को मरना ही पड़ेगा। हम कहने भर को ही अपनी पत्नी से दिखावटी प्यार करते हैं, व्यवहार हमारा कसाई जैसा होता है। प्रजनन के भार से 'कराहती हुई—बेमौत मरती हुई—अनेक रोगों से ग्रस्त महिलाओं की अगणित आत्मायें अपने पतियों के नृशंस अत्याचारों की शिकार होती हैं। भले ही कोई इस तथ्य की उपेक्षा करे, पर सचाई तो अंततः सचाई ही रहेगी। दुर्बल माताएँ चिड़चिड़ी, दुर्गुणी और रुग्ण संतान ही उत्पन्न करेंगी। उससे किसी परिवार को प्रसन्नता अनुभव करने का नहीं, विपत्ति का ही मुख देखना पड़ेगा। अच्छा हो हम समझ से काम लें और प्रस्तुत परिस्थितियों को देखते हुए संतान की संख्या वृद्धि का संकट मोल लेने से पहले हजार बार उस जिम्मेदारी के संबंध में विचार करें। यदि अपनी पत्नी की शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति इसके लिए हर दृष्टि से उपयुक्त है तो आगे बढ़ें अन्यथा कदम रोक लेने में ही दूरदर्शिता है।

गांधारी ने कहा—मुझे संक्रान्ति पर पूजन के लिए हाथी चाहिए। कौरव महीनों इधर-उधर घूमे, जो भी हाथी मिला किसी को छोटा, किसी को कमजोर, किसी के पूँछ न होने का दोष लगाते रहे। मकर सक्रांति आ गई, पर एक भी हाथी वे न ढूँढ़ पाए।

कुंती ने अर्जुन को बुलाया और कहा—बेटा पूजन के लिए हाथी चाहिए और अभी चाहिए। अर्जुन ने बाणों की बौछार लगाकर धरती और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन्द्रलोक को एक कर दिया। इन्द्र ने देखा कि आज मकर संक्रान्ति है, तो उन्होंने ऐरावत हाथी भेज दिया। गांधारी और कुंती दोनों ने ही पूजन किया। पूजन करते हुए गांधारी ने कुंती से पूछा—बहन ! मैंने तो अपने सौ बैटों से एक माह पूर्व ही हाथी लाने को कहा था, पर आपने अर्जुन से आज ही कहा। कुंती हँसी और बोली—बहन ! संख्या में वे पाँच हैं तो क्या ? मुझे अपने बच्चों की समर्थता पर पूरा भरोसा है।

अच्छा हो लड़के और लड़कियों के विवाह बड़ी आयु में किए जाएँ। अच्छा हो वानप्रस्थ की परंपरा फिर चले और चालीस वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति प्रजनन क्रिया से मुँह मोड़ लें। अच्छा हो जिनके बच्चे नहीं होते उनकी सब लोग मिल-जुलकर प्रशंसा करें और उनके सौभाग्य को सराहें। अच्छा हो पहला बच्चा देर से उत्पन्न करें और तीन बच्चों के बाद उस प्रक्रिया को बन्द कर दिया जाए। जिस तरह भी हो हमें जनसंख्या वृद्धि को निरुत्साहित ही करना चाहिए।

अपना देश मूढ़ मान्यताओं के जंजालों में जकड़ा हुआ है। इसमें लोग पाँच हजार वर्ष पुराने ढर्रे पर ही अभी भी सोचने के आदी हैं। विवाह होते ही संतान की शीघ्रता पड़ती है। जिसने बच्चा पैदा कर लिया, उसने किला जीत लिया, जो उससे बचा रहा वह अभागा और अभावग्रस्त समझा गया। असंख्य नर-नारी इसी मूढ़ विचार-धारा में प्रवाहित होकर संतान के अभाव में रोते, कलपते पाए जाते हैं। संतान न होने पर पति-पत्नी अधिक स्वस्थ रह सकते हैं। शिशु पालन से बचे हुए समय और धन को समाज सेवा की ज्ञान-यज्ञ जैसी अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं में व्यय कर सकते हैं और अपना लोक-परलोक हर दृष्टि से शानदार बना सकते हैं। बेटे से वंश चलने और पिंड मिलने वाली बात दिल्लगीबाजी जितना ही महत्त्व रखती है। पिण्ड अपने ही सत्कर्मों का मिलता है, बेटे का उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं। वंश अपने यश का चलता है अन्यथा ३—४ पीढ़ी के बाद तो अपने ही अंश-वंश के लोग नाम भूल जाते हैं, फिर आगे उसके चलने की क्या आशा है ?

कपिल मुनि जिस रास्ते से गुरुकुल जाते थे, उसमें एक विधवा का घर पड़ता। विधवा की निर्धनता से दुःखी होकर वे एक दिन उसके पास जाकर बोले—तुम चाहो, तो आर्थिक सहायता का प्रबंध करा दूँ। विधवा ने कहा—मुनिवर ! आपने भूल की, मेरे पास तो एक अत्यन्त अमूल्य रत्न हैं। मुनि ने चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई, कुछ दीखा नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे पूछ बैठे—क्या वह अमूल्य रत्न मुझे नहीं दिखाएँगी। अभी यह बात हो ही रही थी कि उसका पुत्र पढ़कर लौटा, उसने माँ के पैर छूकर कहा—माँ ! आज भी मैंने अपना पाठ ठीक तरह पढ़ा, लाओ कुल्हाड़ी अब लकड़ियाँ ले आऊँ। कपिल बच्चे के संस्कारों से प्रभावित हुए। उन्होंने कहा—सचमुच संस्कारवान पुत्र और रत्न में कोई अन्तर नहीं।

अभिभावक को शांति और प्रसन्नता उन्हीं बालकों से मिल सकती है जो सज्जन प्रकृति के, सन्मार्गगामी और सुव्यवस्थित हों अन्यथा बड़े होने पर वे माँ बाप की सहायता करना तो दूर उन्हें तरह-तरह से त्रास देते हैं। बड़े बच्चे अपने निमित्त घर की अधिकांश पूँजी खर्च करा लेते हैं। बाप इंतजार देखता है वह कुछ कमाकर अपने छोटे भाई-बहिनों की सहायता करेगा, पर वह कमाने योग्य होते ही बीबी को लेकर अलग हो जाते हैं। खोखली आर्थिक स्थिति का दण्ड शेष छोटे बच्चों को सहना पड़ता है। कुसंस्कारी बच्चे माँ-बाप से हमेशा खर्च ही कराते हैं, उन्हें सताते और अपमानित करते हैं तथा आए दिन ऐसी घटनाएँ उत्पन्न करते रहते हैं जिनसे अभिभावकों को समाज में अपने उन कपूतों की करतूतों पर लज्जा से सिर झुकाकर चलना पड़े।

इन सब आपत्तियों से बचने के लिए संतानोत्पादन से पूर्व माता-पिता को बार-बार विचार करना चाहिए और यदि अपने को इस उत्तरदायित्व को वहन करने योग्य पाएँ तो प्रजनन से बहुत पूर्व अपने शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक धरातल एवं पारिवारिक वातावरण को उतना उत्कृष्ट बनाने में जुट जाएँ कि जन्मने वाले बालक हर दृष्टि से परिष्कृत एवं सुसंस्कृत ही सिद्ध हों। गीली मिट्टी को जिस ठप्पे में दबाया जाता है उसी शकल के खिलौने में वह बदल जाती है। अभिभावक एक प्रकार के ठप्पे हैं उन्हीं की नकल प्रतिच्छवि बालक बनते चले जाते हैं। यदि बालकों को सुख शांति से जी सकने वाले और अपने संबंधियों को प्रसन्न संतुष्ट रख सकने वाले, सुसंस्कृत बनाने का मन हो तो उसका एक ही उपाय है कि माता-पिता अपने को पहले से ही वैसा बनाने और सारे परिवार को उसी साँचे में ढालने के लिए प्राण-प्रण से चेष्टा करने लग जाएँ।

एक स्त्री ने सुकरात के पास जाकर पूछा—महाराज ! अपने पुत्र को पढ़ाना कब से प्रारम्भ करूँ ? सुकरात ने पूछा—कितने वर्ष का हुआ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है बालक ? स्त्री बोली—पाँच वर्ष का। तब तो आपने छः वर्ष की देर कर दी। बच्चे की पढ़ाई तो गर्भ में आने से पहले ही करनी चाहिए।

प्रश्न

१. प्राचीनकाल में संतान की संख्या वृद्धि पर जोर क्यों दिया जाता था ?
२. आजकल परिवार नियोजन कर संतान की संख्या कम करने की आवश्यकता क्यों है ?
३. आज के बालक समाज के लिए समस्या क्यों बनते जा रहे हैं ?
४. अपने देश में स्त्रियों के निरंतर गिरते जाने वाले स्वास्थ्य का मूल कारण क्या है ?
५. विवाह की आयु में वृद्धि क्यों आवश्यक है ?
६. वानप्रस्थ आश्रम का पुनः प्रारंभ किसलिए जरूरी है ?
७. जनसंख्या कम करने के व्यावहारिक उपाय क्या हैं ?
८. सिद्ध कीजिए कि आधुनिक युग में संतान वृद्धि की कामना एक मूढ़ मान्यता है ?
९. अभिभावक को शांति व प्रसन्नता कैसे मिल सकती है ?
१०. बच्चों को सुसंस्कृत बनाने के लिए माता-पिता क्या करें ?
११. कहते हैं कुसंस्कारी बालक देना राष्ट्रीय अपराध है क्यों ?
१२. राष्ट्र समृद्ध और यशस्वी कैसे बनता है ?
१३. प्रजनन की जिम्मेदारी के निर्वाह के लिए कौन-सी तैयारियाँ आवश्यक हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बालकों का भविष्य निर्माण और उन्हें स्वावलंबी बनाना

बच्चा कुछ जन्मजात भले-बुरे संस्कार लेकर अवश्य आता है, पर उनका विकसित अथवा नष्ट होना बहुत कुछ परिस्थितियों पर निर्भर रहता है। अभिभावकों की मनोभूमि और घर की परिस्थितियों पर प्रायः बच्चों का मानसिक विकास निर्भर रहता है। कुछ विरले ही बालक ऐसे अपवाद देखे जाते हैं जो परिवार की परिस्थितियों से भिन्न प्रकार का व्यक्तित्व निर्माण कर सके हों।

यह एक रहस्यमय तथ्य है कि बालक गर्भ में आने के दिन से ही सीखना आरम्भ करता है और पाँच वर्ष का होने तक अपनी मनोभूमि के निर्माण का कार्य तीन चौथाई पूरा कर लेता है। इस अवधि में बालक बहुत संवेदनशील रहता है। किशोर एवं युवा होने पर स्कूली पढ़ाई, व्यावसायिक ज्ञान, कला-कौशल, लोक व्यवहार, खेल-कूद आदि की शिक्षा प्राप्त की जाती है, क्योंकि इन कार्यों के उपयुक्त मस्तिष्कीय विकास बड़ी आयु में ही होता है, किंतु स्वभाव, संस्कार, चरित्र, आस्थाएँ जिस आयु में सीखी जाती हैं वह गर्भ में प्रवेश करने वाले दिन से लेकर पाँच वर्ष तक ही है। उस अवधि में अचेतन मस्तिष्क बहुत संवेदनशील रहता है और निकटवर्ती वातावरण से जो कुछ सोचा या किया जाता है उसका बहुत ही स्पष्ट चित्र अपनी अंतःभूमिका पर उतरता जाता है। यों यह प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है, पर उसका बहुत बड़ा अंश शैशव काल में ही पूरा हो चुकता है। इसलिए अभिभावकों को यदि अपने बच्चे संस्कारवान और सद्गुणी बनाने हों तो वातावरण ऐसा बनाने का पूरा ध्यान देना चाहिए जिससे उन्हें सुसंस्कृत बनाने का उपयुक्त आधार मिल सके।

पाण्डव मन मारे बैठे थे। कौरवों ने चक्रव्यूह का निमन्त्रण भेजा था। उसे भेदन करना केवल अर्जुन ही जानते थे, जो उस समय उपस्थित न थे। तब अभिमन्यु ने आगे बढ़कर कहा—मेरे पिता ने मुझे गर्भ में ही चक्रव्यूह भेदन बता दिया था, पर वे जब बाहर निकलने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विधि बताने लगे तो माँ को नींद आ गई, इसलिए निकलने की विधि नहीं जानता। इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि बड़े-बड़े महारथियों को परास्त कर चौदह वर्षीय अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदन करने में सफलता पाई।

बच्चे स्कूल कालेज में तो केवल भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल आदि पढ़ते हैं। अब वहाँ प्राचीन-काल के स्कूलों जैसा वातावरण कहाँ है जहाँ बालक सुसंस्कार भी प्राप्त करें। बच्चे का शिक्षण उपदेशों पर नहीं अनुकरण पर निर्भर है। उनका अविकसित मस्तिष्क लम्बे चौड़े उपदेशों या कठोर निर्देशों के समझने में असमर्थ रहता है, पर जो कुछ हो रहा है उसे समझने और अपनाने में उसका अंतःकरण पूर्ण समर्थ होता है इसलिए उन्हें जो कुछ सिखाया जाना हो उसका प्रत्यक्ष रूप सामने प्रस्तुत करना चाहिए। आज के स्कूल, अध्यापक बच्चों को एक बहुत छोटी सीमा तक ही सुधार सकते हैं क्योंकि वहाँ न वातावरण है न चरित्र। बालकों के स्वभाव एवं चरित्र का निर्माण तो घर की पाठशाला से ही संभव है। इसलिए प्रयत्नपूर्वक यह चेष्टा की जानी चाहिए कि घर का वातावरण बहुत ही निर्मल, शांतिमय, सदाचारी एवं सज्जनतापूर्ण हो। घर के सब लोग परस्पर मधुर संभाषण करें—प्रेमपूर्वक रहें और एक-दूसरे की भरपूर सहायता करने को उदारता पूर्वक तत्पर रहें तो बिना किसी प्रशिक्षण, उपदेश के ही बालक उन सद्गुणों को ग्रहण करते चले जाएँगे और बड़े होने पर वैसे ही बनेंगे जैसा कि उन्हें बचपन में अभिभावकों द्वारा सिखाया एवं बनाया गया था।

मनुष्य यदि संतान उत्पन्न करता है तो स्वभावतः उसकी यह जिम्मेदारी भी होती है कि उनके पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, विवाह और आजीविका की व्यवस्था जुटाने का भी प्रबन्ध करें। सृष्टि के सभी जीवों में यह प्रचलन है कि संतान जब तक अपने पैरों पर खड़ी होकर अपना निर्वाह स्वयं न करने लगे तब तक उसकी सहायता करते हैं। मनुष्य के लिए यह उचित है कि बालकपन और किशोरावस्था में बच्चों के भरण-पोषण की—भोजन वस्त्र की—शिक्षा, चिकित्सा की व्यवस्था करें और उन्हें शीरीरिक, मानसिक दृष्टि से इस योग्य बनाएँ कि वे भावी जीवन में स्वावलंबी जीवनयापन कर सकें। पौष्टिक आहार, उचित शिक्षा, सरल मनोरंजन, सही संगति के साधन जुटाना अभिभावकों का काम है और यह भी उन्हीं की जिम्मेदारी है कि उनके गुण-कर्म स्वभाव को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुसंस्कृत बनाने के लिए ऐसा वातावरण एवं साधन उपस्थित करें जिसमें उन्हें सभ्य, सुसंस्कारी एवं सज्जन बनने की दिशा मिल जाए। यदि कोई अभिभावक इन कर्त्तव्यों को पूरा नहीं करता है तो उसे कर्त्तव्य पालन में प्रमाद करने का दोषी कहा जाएगा। लाड़-प्यार के आवेश में यदि बच्चों को आलसी, विलासी, चटोरा, अहंकारी, उद्दण्ड एंव दुर्गुणी बनाया गया है तो भी उन अहितकर और अनावश्यक लाड़ दिखाने वाले अभिभावकों को बच्चों के साथ अन्याय करने वाला ही कहा जाएगा। जन्म देने के बाद निस्संदेह बालकों को सुशिक्षित बनाने के लिए किशोरावस्था के अंत और यौवन के प्रवेश तक आवश्यक साधन सुविधाएँ उत्पन्न करना हर माता-पिता और अभिभावक वर्ग के व्यक्ति का ऐसा कर्त्तव्य है जिसका पालन किया ही जाना चाहिए।

बेटी-बेटे ने शरारत की, एक फल वाले के फल कीचड़ में गिरा दिए। माँ ने फल वाले के पैसे तो चुका दिए, पर लड़के को तीन माह तक नाश्ते के पैसे न मिले। इस कड़ाई का ही फल था कि यही बच्चा आगे चलकर नैपोलियन बोनापार्ट बना।

विदेशों में जहाँ शासकीय और सामाजिक व्यवस्था ठीक है वहाँ उतने से ही काम चल जाता है, पर अपने देश में वे दोनों ही व्यवस्थाएँ काफी गड़बड़ हैं, इसलिए यहाँ के अभिभावकों की दो और भी जिम्मेदारी बढ़ जाती हैं कि बच्चों को काम-धंधे में लगाएँ और उन्हें उपार्जन कर सकने योग्य बनाने में सहायता प्रदान करें तथा उपर्युक्त साथी ढूँढ़कर उनके विवाह की व्यवस्था करें।

अब लोभ और मोह की दुष्प्रवृत्तियों ने अभिभावकों और संतान के संबंधों को विकृत बनाकर सारा सामाजिक ढाँचा ही लड़खड़ा दिया है। बच्चों के स्वावलंबी हो जाने के बाद भी अभिभावक अपनी संकीर्णता और मोहवृत्ति के बंधनों से बुरी तरह जकड़े रहते हैं और उस ढलती आयु में जिस पर विशुद्ध रूप से समाज का हक था, पोतियों को खिलाने रहने और घर-कुटुंब पर अनावश्यक मोह अधिकार दिखाकर एक अनावश्यक भार बने रहते हैं। इतना ही नहीं जो कुछ संतान के स्वावलंबी बनाने के अतिरिक्त पूँजी बची थी उसे भी उन्हीं लोगों को दे जाते थे, जब कि उस धन पर विशुद्ध रूप से समाज का हक है और वह उसी की ऋणता के लिए खर्च किया जाना चाहिए था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बच्चे ने पिता से शिकायत की, कि पिताजी मेरे सभी मित्रों को उनके पिता अभी भी पैसा देते हैं और उनके लिए भविष्य के लिए भी इकट्ठा करते हैं। आप तो भविष्य के लिए तो जमा करना दूर अभी से मुझसे मेहनत कराते हैं। पिता बोला—बेटा ! मैं यह नहीं चाहता कि तू भी दूसरे लोगों की तरह मुफ्त का धन पाकर शराबी, जुआरी और व्यभिचारी बने, बिना परिश्रम की कमाई ऐसे ही पाप कराती है। पिता की इस कड़ाई का ही फल था कि यह लड़का इंग्लैण्ड का धन-कुबेर एलियस स्टो बना।

सन्तान के प्रति इस क्षुद्रता और संकीर्णता भरे अनावश्यक मोह ने भारतीय समाज को भारी हानि पहुँचाई है। जो पैसा और समय समाज के उत्थान और सुख संस्थान में खर्च होना चाहिए था यदि वह हराम की कमाई के रूप में स्वावलंबी बच्चों को मिलता है तो उससे वे व्यसनी, आलसी, फिजूल खर्च और दुर्गुणी ही बनेंगे। आदमी उसी पैसे को ठीक और उचित तरीके से खर्च कर सकता है जो उसने कठिन परिश्रम के साथ पसीना बहाकर कमाया है। जो पैसा मुफ्त में मिलेगा उससे व्यक्ति की विलासिता ही नहीं दुर्बुद्धि भी बढ़ेगी। इसलिए जीवन भर ब्याज-भाड़े की कमाई खाने और चैन की वंशी बजाने की बात सोचकर जो लोग संतान के लिए ही अपनी कमाई उत्तराधिकार में छोड़ जाने की बात सोचते हैं वे संतान के साथ, अपनी आत्मा के साथ और समाज के साथ विशुद्ध रूप से एक अन्याय ही करते हैं और तीनों अदालतों में अपराधी सिद्ध होते हैं। यह एक बहुत ही भोंड़ा, फूहड़ और निकृष्ट संकीर्णता भरा व्यामोह है कि अभिभावक स्वावलंबी संतान को ही अपना श्रम, समय, मन और धन ऐसे अर्पित करें मानो वे ही भगवान हों।

प्राचीनकाल में संतान अभिभावकों के भरण-पोषण और शिक्षा-दीक्षा भर के ऋण को चुकाना ही बहुत भारी समझते थे अस्तु उनके उत्तराधिकार में छोड़े धन को अग्राह्य मानते थे। आमतौर से ऐसा वयोवृद्ध लोग अपने जीते ही दान-पुण्य में—सत्कर्मों में—खर्च कर जाते थे। मरने के बाद जो बच जाता था तो सन्तान उसे मृतक श्राद्ध में—स्वर्गीय आत्मा को पुण्य फल प्रदान करने वाले लोकोपयोगी कार्यों में लगा देते थे। वे उसमें से एक पाई भी अपने लिए रखते नहीं थे। जो उन पर ऋण चढ़ा है वही क्या कम है जो अगले जन्म में गधा-घोड़ा बनकर इस मुफ्त के माल को एक अनावश्यक ऋण के रूप में सिर पर लादें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज की विचित्र स्थिति है। संतान से तरह-तरह के दुःख, तिरस्कार, उपेक्षा और प्रताड़ना सहते हुए भी निकृष्ट संकीर्णता के व्यामोह में जकड़ा हुआ वयोवृद्ध न देश की न धर्म की, न समाज की, न संस्कृति की आवश्यकता को समझता है, न आत्म-कल्याण, विश्व-कल्याण, और ईश्वरीय निर्देशों को ध्यान में रखता है जो कुछ पास है उसे केवल संतान को ही देने की बात सोचता है। संतान नहीं होती तो किसी की संतान गोद रखता है। सर्प की तरह पूँजी पर संकीर्णता की कुण्डली मारकर बैठा हुआ इतनी मोटी बात नहीं सोच पाता कि ढलती आयु के—स्वावलंबी संतान से बचे हुए समय और पैसे का सदुपयोग किन्हीं उत्तम कार्यों के लिए किया जा सकता है या नहीं।

एक सद्गृहस्थ के तीन लड़के थे। गृहस्थ यह नहीं चाहता था कि लड़कों को अनावश्यक धन देकर उनका भविष्य चौपट करे और उन्हें परावलंबी बनाए अतएव उसने सबसे बड़े लड़के को एक हजार बतौर ऋण देकर बी. ए. तक पढ़ाया, सर्विस में लग जाने पर उससे किश्तवार लेकर दूसरे को पढ़ाया और उससे भी एक हजार का ऋण पत्र लिखा लिया जो तीसरे लड़के की पढ़ाई के काम आया। तीसरा लड़का भी पढ़कर नौकरी पर लग गया तो उसको दिया एक हजार का ऋण लेकर अपनी वृद्धावस्था सुखपूर्वक काटी। लड़के भी बुराइयों से बच गए।

प्रश्न

१. अभिभावकों के प्रमुख कर्त्तव्य क्या हैं ?
२. बच्चों का विकास किन बातों पर निर्भर करता है ?
३. शिशु निर्माण के संबंध में रहस्य की बात क्या है ?
४. व्यक्ति की सुख शांति के लिए किन तत्वों की आवश्यकता है ?
५. बच्चों को संस्कारवान् बनाने के लिए माता-पिता को क्या करना चाहिए ?
६. गर्भवती के आस-पास कैसा वातावरण रहना चाहिए ?
७. शिशुजन्म के बाद माता-पिता को अपना आचरण कैसा रखना चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

८. बच्चों का सच्चा शिक्षण कहाँ होता है—वह किस पर निर्भर है ?

९. मनुष्य की अपनी संतान के प्रति क्या जिम्मेदारियाँ हैं ?

१०. अभिभावक अपनी सन्तान का पालन-पोषण किस प्रकार करें कि वह विलासी, चटोरी एवं अहंकारी न बने ?

११. अपने देश में विदेशों की अपेक्षा दो जिम्मेदारियाँ और क्या बढ़ जाती हैं ?

१२. संतान के पालन पोषण के अलावा मनुष्य के और क्या कर्त्तव्य हैं ?

१३. मनुष्य को संतान के स्वावलंबी होने के बाद अन्य क्या कर्त्तव्य करते रहना चाहिए ?

१४. स्वावलंबी संतान को अपनी बची-खुची संपत्ति देना किस प्रकार अपराध है ?

१५. प्राचीन काल में संतान किस तरह अपना कर्त्तव्य पूरा करती थीं ?

१६. आज का मानव किस प्रकार का व्यवहार कर रहा है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्यौहार और संस्कार की प्रेरणाप्रद पद्धति

पर्व, त्यौहारों का प्रचलन मात्र हर्षोत्सव मनाने के लिए विनिर्मित नहीं हुआ है, इनके पीछे समाज-निर्माण की एक अति महत्त्वपूर्ण प्रेरक प्रक्रिया सन्निहित है। किन्हीं पौराणिक कथानकों की स्मृति मात्र के लिए अथवा किसी देवता की पूजा मात्र के लिए पर्वों की समय तथा धन खर्च कराने वाली पद्धति प्रचलित नहीं है, वरन इनके पीछे मुख्य प्रयोजन यह है कि सामाजिक जीवन की हर समस्या को सुलझाने के लिए वर्ष में कई-कई दिन ऐसे रखे जाएँ जिन पर इकट्ठे होकर जनता को अपनी वर्तमान परिस्थितियों पर विचार करने और उनका हल खोजने का अवसर मिले।

हमारा प्रत्येक पर्व समाज की कुछ समस्याओं पर विचार करने और यदि वर्तमान में कुछ विकृतियाँ उत्पन्न हो गई हों तो उनका हल ढूँढ़ने की प्रेरणा देने आता है। प्राचीनकाल में हमारे त्यौहारों का यही स्वरूप था। पर्वों पर हर्षोल्लास मनाने के लिए स्थानीय जनता एक स्थान पर एकत्रित होती थी। पूजा-प्रार्थना के धार्मिक कर्मकाण्डों के साथ प्रत्येक वैयक्तिक एवं सामाजिक कार्य संपन्न हों यह अपनी प्राचीन परंपरा है। पर्वोत्सवों के समय पर भी वैसा होता था। धर्मकृत्यों के बाद मनीषी विद्वान उपस्थित जनता का उद्‌बोधन करके सामाजिक सत्प्रवृत्तियों को अक्षुण्य बनाये रखने का उद्‌बोधन करते थे। तत्कालीन सामाजिक गतिविधियों के संबंध में आत्म-निरीक्षण और परिष्कार परिमार्जन करने का सहज ही अवसर मिल जाता था। कोई विकृति आँख से ओझल नहीं हो पाती थी। उठते हुए विकारों का तत्काल समाधान निकाल लिया जाता था और सामाजिक प्रखरता में कोई त्रुटि न आने पाती थी। इस प्रकार पर्वोत्सव का मनाया जाना एक वरदान सिद्ध होता था और उस माध्यम से राष्ट्रीय एवं सामाजिक सुदृढ़ता निरंतर परिपुष्ट बनी रहती थी।

घर के सभी लोग गंगा दशहरे का व्रत कर रहे हैं। यह सुनकर महात्मा को कुछ संदेह हुआ। उन्होंने पूछा—"बेटा घर में आज बन क्या रहा है ? हलुआ, पूड़ी, पकोड़ी, पाग, कोफ्ता, साबूदाने की खीर बरफी और लड़का अभी आगे और बताता तभी महात्मा ने बीच में बात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काटकर कहा—बस, बस बेटा ! समझ गया, तुम्हारे घर त्यौहार का अर्थ क्या है ? ऐसे त्यौहार से बिना त्यौहार अच्छा, जिसमें लोग उल्टा शिक्षण ग्रहण कर रहे हों।

यों पर्व-त्यौहार अनेक हैं, पर उनमें से दस ऐसे हैं, जिन्हें प्रमुखता दी जानी चाहिए। इनमें से हर पर्व के पीछे कुछ महत्त्वपूर्ण संदेश एवं प्रयोजन जुड़े हुए हैं। यथा—(१) गुरू-पूर्णिमा—अनुशासन, मर्यादाओं का पालन। (२) श्रावणी—वृक्षारोपण, आत्म-निरीक्षण, भूलों का प्रायश्चित और सुधार, नैतिकता का व्रत धारण। (३) पितृ अमावस्या—बड़ों के प्रति श्रद्धा, सद्व्यवहार, कृतज्ञता, सत्पुरुषों और सत्परम्पराओं का अनुसरण। (४) विजयादशमी—स्वास्थ्य-रक्षा, संगठन, मनोबल, शक्ति संचय, अनीति के विरुद्ध संघर्ष। (५) दीपावली—ईमानदारी और परिश्रमपूर्वक उपार्जन, मितव्ययतापूर्वक धन का सदुपयोग। (६) गीता जयन्ती—धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्य परायणता, मानसिक सन्तुलन, दूरदर्शिता। (७) बसंत-पंचमी—शिक्षा, सद्ज्ञान, संगीत, साहित्य, कला, सुसज्जा। (८) शिवरात्रि—व्यापक सहयोग, समन्वय, नशा निवारण। (९) होली—देशभक्ति, स्वच्छता, समता, विस्तार। (१०) गायत्री जयन्ती—(गंगा-दशहरा)—विवेकशीलता, सद्भावना, आस्तिकता, सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन।

प्रस्तुत त्यौहारों के पीछे जो इतिहास जुड़े हुए हैं तथा जिन क्रिया-कृत्यों के साथ उन्हें मनाया जाता है, उन पर पैनी दृष्टि डालने से यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें मनाए जाने के पीछे किस प्रेरणा एवं प्रशिक्षण की भूमिका सन्निहित है। उस मूल प्रयोजन की रक्षा की जानी चाहिए, जिसके कारण इनका प्रचलन किया गया था। लकीर पीटने से काम न चलेगा। हमें उस प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित करना चाहिए और पर्वों को उसी प्रकार पुनः मनाना आरंभ करना चाहिए, जैसे कि वह पूर्वकाल में मनाए जाते थे। हर पर्व को मनाने की विधि और व्याख्या, पुस्तक के रूप में छापी जा चुकी हैं, पर संक्षिप्त में यह जान लेना आवश्यक है कि पर्व वाले दिन व्यक्तिगत रूप से घरों में जो भी क्रिया-कृत्य किया जाता हो, उसके अतिरिक्त सामूहिक रूप से ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए जिसमें अधिकाधिक जनता भाग ले, मिल-जुलकर धार्मिक कर्मकाण्ड संपन्न किया जाए और इसी सुसज्जित धर्म मंच से पर्व के साथ जुड़ी हुई प्रेरणा पर सुलझे हुए विचारों द्वारा प्रकाश डाला जाए। यदि उस संदर्भ में इन दिनों कुछ विकृतियाँ चल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ी हों तो उन्हें सुधारने के लिए लोगों से कहा और उस सुधार का व्यावहारिक मार्ग बताया जाए। इस प्रकार प्रेरक पद्धति से मनाए गए यह पर्व-त्यौहार लोक-शिक्षण की अति महत्त्वपूर्ण भूमिका संपादित कर सकते हैं। सामाजिक उत्कर्ष के लिए ऐसे लोक-शिक्षण की आज जितनी आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नहीं रही। इसलिए प्रबुद्ध व्यक्तियों को धर्म-मंच के माध्यम से भारतीय जनता का अभीष्ट मार्गदैर्शन करने के लिए उन पुण्य परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिए प्रबल प्रयत्न करना चाहिये।

एक अँग्रेज ने गाँधी जी से पूछा—आपके यहाँ इतने अधिक व्रत-त्यौहार मनाए जाते हैं फिर भी लोग सुखी क्यों नहीं हैं ? गाँधी जी ने कहा—लोग त्यौहार नहीं मनाते, लकीर पीटते हैं। हमारे पर्व और त्यौहारों में से अगर कोई एक भी अच्छी तरह मना ले, तो उसका जीवन धन्य हो जाये और समाज का भी बेड़ा पार हो जाए।

समाज-शिक्षण की जो आवश्यकता पर्वोत्सवों द्वारा ही पूरी हो सकती है वही परिवार प्रशिक्षण के लिए संस्कारों द्वारा संपन्न की जा सकती है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत भारतीय धर्मानुयायी अपने संस्कार कराते रहते हैं, ताकि उनकी संस्कारवान् परंपरा एवं सुसंस्कृत मनोभूमि को निरन्तर अक्षुण्य रखा जा सके। प्राचीन काल में सोलह संस्कार होते थे। अब उनमें से कितने ही असामयिक हो गए। 'गर्भाधान संस्कार' अब संभव नहीं रहा। इंसी प्रकार 'कर्णवेध' अनुपयोगी समझा जाने लगा। आज की स्थिति के अनुरूप दस संस्कार पर्याप्त हैं। समय-समय पर यदि उन्हें ठीक तरह मनाया जाने लगे तो उस व्यक्ति को तो सुसंस्कारी बनने का अवसर मिलेगा ही, घर-परिवार के सदस्यों तथा समारोह में उपस्थित लोगों को भी अपने कौटुंबिक कर्त्तव्यों की जानकारी एवं प्रेरणा मिलेगी। यह प्रशिक्षण पारिवारिक समस्याओं को सुलझाने तथा संयुक्त परिवार प्रणाली को उपयोगी बनाए रखने में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

संस्कारों में से प्रत्येक में बहुत कुछ शिक्षा एवं प्रेरणा भरी पड़ी है, यथा—(१) पुंसवन—गर्भवती स्त्री को उन दिनों की शारीरिक, मानसिक स्थिति ठीक रखने संबंधी शिक्षा तथा घर वालों को तत्संबंधी वातावरण उत्पन्न करने की प्रेरणा। (२) नामकरण—परिवार के बालक को सुसंस्कृत बनाने की विधि-व्यवस्था का शिक्षण। (३) अन्न प्राशन—बालक की आहार संबंधी सतर्कताओं की जानकारी। (४) मुण्डन में बौद्धिक एवं भावनात्मक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकास की शिक्षा। (५) विद्यारम्भ—शिक्षा की उपयोगिता, दिशा, प्रयोजन एवं उपलब्धि के आधार पर सिद्धान्तों की विवेचना और बालक के लिए उपयुक्त शिक्षा-योजना बनाकर देना। (६) यज्ञोपवीत—मानवता के मूलभूत आदर्शों, कर्त्तव्यों एवं आधारों को समझाने और पशुता से बचाने की दुष्प्रवृत्तियों से बचने की शिक्षा। (७) विवाह—विवाह के उद्देश्य, कर्त्तव्य एवं सफलता के सिद्धान्तों से पति-पत्नी को परिचित कराना। गृहस्थ के दायित्वों को निवाहने की परिस्थितियाँ उत्पन्न करने की दोनों परिवारों को शिक्षा देना। (८) वानप्रस्थ—बच्चों के समर्थ होने पर ढलती आयु लोक सेवा के लिए समर्पित करने की प्रतिज्ञा, उपार्जन का दायित्व घर के समर्थ नये सदस्यों पर छोड़कर स्वयं परमार्थ के कार्यों में लगना। (९) अंत्येष्टि—मृत शरीर का यज्ञ संस्कार। मानव जीवन के अमूल्य अवसर का सदुपयोग करने की उपस्थित लोगों को शिक्षा। (१०) मरणोत्तर संस्कार—मृत्यु के उपरान्त घर, परिवार की यज्ञ आदि से शुद्धि, दिवंगत आत्मा के सद्गुणों की शिक्षा, उसके छोड़े हुए उत्तरदायित्वों को पूरा करने की योजना एवं व्यवस्था।

इन संस्कारों का भी पर्वों की भाँति ही विस्तृत कर्मकांड और विधान है, जिनकी छोटी पुस्तिकायें युग-निर्माण योजना द्वारा, प्रस्तुत की गई हैं। उन्हें स्थानीय लोकाचार के अनुरूप बनाया जा सकता है। प्रमुखता कर्मकांड की नहीं, लोक-शिक्षण की है। यह उद्देश्य ध्यान में रखा जाए और उपस्थिति लोगों को उस अवसर से संबंधित समस्या को हल करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

सारे मुहल्ले-गाँव को इकट्ठा करके सामूहिक रूप से यदि पर्व मनाए जाने लगें और उसमें धर्म-श्रद्धा के आधार पर लोग इकट्ठे होने लगें, तो उस एकत्रीकरण में त्यौहार के छिपे हुए समाज-निर्माण के रहस्यों को चतुर वक्ता भली प्रकार समझा जा सकता है और सामाजिक कुरीतियों एवं विकृतियों के उन्मूलन तथा स्वस्थ परंपराओं की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण पृष्ठभूमि बना सकता है।

इसी प्रकार पारिवारिक धर्म गोष्ठियों का सिलसिला संस्कार मनाने की परंपरा पुनर्जीवित करके बड़ी आसानी से प्रचलित किया जा सकता है। घर, परिवार एवं पड़ौस के थोड़े लोग इकट्ठे हों तो भी उन्हें व्यक्ति-निर्माण एवं परिवार-निर्माण की रीति नीति से सहमत किया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. प्रमुख दस पर्वों के नाम बताइए ?
२. प्रत्येक पर्व की विशेषता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिए ?
३. प्रमुख १० संस्कारों के नाम बताइए ?
४. प्रत्येक संस्कार की उपादेयता पर प्रकाश डालिए ?
५. पर्व और त्यौहार मनाने के पीछे हमारा क्या प्रयोजन होता है ?
६. पर्वोत्सव एक वरदान है—सिद्ध कीजिए।
७. पर्व और त्यौहार समाज शिक्षण की आवश्यकता किस प्रकार पूरी कर सकते हैं ?
८. किस प्रकार कोई चतुर वक्ता कुरीतियों एवं विकृतियों का उन्मूलन करा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्मदिवस और विवाह दिवस मनायें

सभी अवतार सहस्र कलाओं वाले परब्रह्म के छोटे अंशधर हैं। सामान्य मनुष्यों की तुलना में वे अपने भीतर अधिक सद्‌गुण धारण किए होते हैं, इसलिए हम उनकी पूजा और यशगान करते हैं। वैसे हर मनुष्य एक कला का ईश्वरीय अवतार है। यदि वह अपने स्वरूप और महत्त्व को समझने लगे, अपनी आंतरिक स्थिति को अधिक प्रखर बनाने में लग जाए, तो उसी क्रम से अपनी कलाओं का अभिवर्धन करता हुआ ईश्वर बनने की पूर्णता प्राप्त करने की शिक्षा की दिशा में तेजी से उठ सकता है।

वस्तुतः हम अपने आपको भूल गए हैं। हाड़-माँस का बना चलता फिरता शरीर मात्र अपने आपको मानते हैं। अस्तु शरीर से संबंधित क्षेत्र में ही अपनी गतिविधियाँ सीमित रखते हैं। शरीर को भूख लगती है, उसे पूरा करने के लिए उपार्जन करना होता है। उपार्जन के साथ लोभ-लालच की बौद्धिक विकृतियाँ जुड़ जाने से उसकी बहुत लंबी श्रृंखला बन जाती है। इसी कमाई के फेर में जीवन का बहुत भाग नष्ट हो जाता है, यद्यपि यह कमाई पीछे वालों के लिए छोड़नी पड़ती है, अपने कुछ भी काम नहीं आती। शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, इनके अपने-अपने स्वाद हैं। इन स्वादों की लिप्सा मन को उद्वेलित किए रहती हैं। इन इन्द्रियों में एक अति प्रबल कामेन्द्रिय हैं। यह अपनी कामना पूर्ति के लिए मन को बुरी तरह उद्वेलित किए रहती हैं। इस ललक में हम विवाह तो करते ही हैं इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ उचित-अनुचित करते रहते हैं, उनकी प्रतिक्रियाओं के दबाव से मनुष्य कोल्हू के बैल से भी गई गुजरी स्थिति में जा पहुँचता है। निर्वाह भी आजकल सरल नहीं रहा। उसमें इतनी प्रतिस्पर्धा, द्वेष, दुर्भाव, छलकपट, अनीति, अत्याचार की मात्रा भर गई है कि उन विकृतियों से उत्पन्न विफलता भी अपने साथ जुड़ी रहती है। यही है आज के जीवन का स्वरूप। ऐसा ही हेय जीवन जीते हुए हम मौत के दिन पूरे करते हैं। रोते हुए खाली हाथ आए थे और ठीक उसी स्थिति में विदा होते हैं।

मनुष्य-जन्म पाना एक दुर्लभ सौभाग्य है। उसमें महान से महान् सम्भावनाएँ तथा शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। इसमें इतना अवसर है कि प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपलब्धियों का यदि सदुपयोग किया जा सके तो निकृष्ट परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ मनुष्य भी ऐसे कार्य कर सकता है जिससे उसे महामानव, नररत्न, पृथ्वी का देवता, देवदूत, साक्षात भगवान कहा जा सके। इस प्रकार की उत्कृष्ट गतिविधि को अपना सकना अति सरल और स्वाभाविक है। निकृष्ट जीवन जीने में जितनी चतुरता, खींचतान और कठिनाई आती है, उसका सौवाँ भाग भी जीव को ईश्वर की दिशा में चलते हुए नहीं आती। जीवन को धन्य बना सकने की योग्यता, क्षमता, बुद्धि और हिम्मत मनुष्य में पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। एक कला का ईश्वर अशक्त नहीं हो सकता। उसके पास बहुत कुछ है, पर जो है उसका सही उपयोग हम कर नहीं पाते, करना नहीं चाहते। इसी विडंबना को माया कहते हैं। माया के चंगुल में फँसा हुआ प्राणी कीड़े-मकोड़े की मौत मरता है, और यह अलभ्य अवसर यों ही विनष्ट हो जाता है।

मानव जीवन जैसा महत्त्वपूर्ण अवसर पशुओं जैसी शरीरचर्या में व्यतीत हो जाए तो उसे एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना ही कहा जा सकता है। वस्तुतः हम अपने स्वरूप को, कर्त्तव्य को, उद्देश्य को, भविष्य को बुरी तरह भूल गए हैं। शरीर की वासना और मन की तृष्णा पूरी करने के लिए ही निरंतर जुटे रहते हैं, आत्मा की आवश्यकताओं के बारे में सोचने की तो क्षण मात्र फुरसत नहीं मिलती। बहुत हुआ तो एकाध माला सटका देने या राई-रत्ती पूजा-पत्री का थोड़ा सा खेल-मेल करके संतुष्ट हो जाते हैं। इन बाल क्रीड़ाओं से कुछ प्रयोजन पूरा होने वाला नहीं है। जीवन मिला है तो उसका लाभ भी लेना चाहिए। लाभ तब मिले जब हम उसके स्वरूप, कर्त्तव्य और लक्ष्य को समझें। आत्म विस्मृति को समस्त पापों और दुःखों की जननी कहा जाता है। ज्ञान का उपदेश करते हुए तत्वदर्शियों ने मनुष्य को हजार बार एक ही उपदेश दिया है—अपने को जानो, अपने संबंध में विचार करो और अपनी सही दिशा निर्धारण करके उस पर चल पड़ो।

यह निरंतर विचारा जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है और इस संबंध में अधिक चिंतन करने के लिए एक भावपूर्ण हर्षोल्लास से जुड़ा हुआ पुनीत पर्व भी नियत है—उसका नाम है जन्म-दिन। व्यक्तिगत जीवन में जन्म-दिन से बढ़कर संतोष, उल्लास एवं प्रकाश से भरा दूसरा त्यौहार नहीं हो सकता। सन्तोष इस बात का कि ८४ लाख जन्म बाद हम एक अलभ्य अवसर प्राप्त कर सके हैं। उल्लास इस बात का कि हम चाहें तो अपनी दिशा बदलकर आज की तुलना में लाख गुनी मंगलमयी परिस्थितियाँ प्राप्त कर सकने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षमता से ओत-प्रोत हैं। प्रकाश इस बात का कि शरीर तथा मन की गतिविधियों को सही दिशा में नियोजित कर सकना संभव हो रहा है और अपना कायाकल्प दिखाई दे सकता है।

पिता को भगवान् कृष्ण की पूजा करते देखकर बालक ने पूछा—पिताजी ! भगवान कृष्ण को क्यों पूजना चाहिए ? पिता ने बेटे से कहा—बेटा ! आज कृष्ण-जन्माष्टमी अर्थात् कृष्ण का जन्मदिन है। उनका जन्मदिन मनाने का अर्थ है, उनके गुण, ज्ञान, शक्ति और ईश्वरीय प्रकाश को हम भी अपने अन्दर धारण करें ? पुत्र ने पिता की बातें अच्छी तरह समझ लीं। अपने जीवन में उन गुणों को धारण करने वाला यही बालक गीता का पण्डित लोकमान्य तिलक हुआ।

संसार भर के सभ्य देशों में जन्म-दिन मनाने की प्रथा है। स्वजन सम्बन्धी एवं मित्र मिलकर उस दिन एक हर्षोल्लास मनाते हैं और उस व्यक्ति की प्रगति एंव सुख शांति की कामना करते हैं। यह प्रचलन अपने यहाँ भी होना चाहिए। अपना चेहरा शीशे में बार-बार देखने की इच्छा होती है, अपना फोटो प्रिय लगता है, अपने नाम की चर्चा होने या छपने से मजा आता है। अपनत्व संसार में सबसे प्रिय वस्तु है। इस अपनेपन के वातावरण का शुभ दिन भी हमारे लिए आकर्षक एवं उल्लास भरा हो सकता है, होना भी चाहिये।

माँ पूजन आदि की तैयारी कर रही थीं। बच्चे ने पूछा—माँ ! क्या कर रही हो ? तेरे जन्मदिन के पूजन की तैयारी। बच्चे ने पूछा—जन्मदिन की तैयारी का क्या मतलब है माँ ! माँ बोली—आज से तू एक वर्ष और बूढ़ा हो गया। आज तेरा विवेक जगाएँगे कि तूने अब तक कितना समय समझदारी से बिताया और कितना बेखबरी से। जन्मदिन मनाने का यही उद्देश्य है।

युग निर्माण योजना के अन्तर्गत जन्म-दिन मनाने पर बहुत जोर दिया गया है। पूजन, हवन, घृत दीप, संगीत, प्रवचन, आर्शीवाद आदि की एक मिश्रित पद्धति भी है, जिसे सभी सदस्य जानते हैं। उस पद्धति से अपनी-अपनी विवेक बुद्धि से जन्म दिन के आयोजन सर्वत्र मनाए जाने चाहिए। व्यक्ति को स्वयं यह आयोजन करने में संकोच लगे, तो युग-निर्माण योजना की शाखाएँ अपने सदस्यों के जन्मदिन मनाने की व्यवस्था इस तरह करें, जिससे खर्च न्यूनतम पड़े और उत्सव का स्वरूप अधिक से अधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली बन सके। आनंद और उल्लास के अवसरों को बढ़ाना भी शोक संतृप्त मानव जाति की एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महती सेवा ही मानी जाएगी। यह प्रथा परम्परा प्रचलित करने में हममें से प्रत्येक को पूरा उत्साह दिखाना और प्रयत्न करना चाहिये।

इंग्लैंड के धन कुबेर डोरिस और उसकी पत्नी लिली में प्रगाढ़ प्रेम था। वर्ष में एक बार उनका जन्मदिन आता, तो वे एक-दूसरे को सर्वोत्तम भेंट दिया करते। दैवयोग से व्यापार में घाटा शुरू हुआ और यहाँ तक हुआ कि डोरिस दाने-दाने को मुँहताज हो गया। फिर विवाह की वर्षगाँठ आई। पति-पत्नी दिन भर उपहार की खोज करते रहे। कुछ न मिला, खाली हाथ दोनों घर लौटे तो सोच रहे थे कि कैसे मिलें। आँखें गीली किए हुए आमने-सामने हुए। डोरिस ने लिली को हृदय से लगाकर कहा—लिली ! जब तक हमारे हृदय में प्रेम है, किसी और उपहार की चिंता क्यों करें ? वे गरीबी में भी प्रेम का सुख पाते हुए जीए।

जन्म-दिन मनाने का वास्तविक लाभ तब है जब वह व्यक्ति आत्म-चिंतन करे और आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण एवं आत्म-विकास की सुव्यवस्थित योजना बनाकर उस पर चल पड़ने का साहस दिखाए। इस अवसर पर ऐसे ही संगीत तथा प्रवचनों का तारतम्य होना चाहिए। जिनमें जीवन की महिमा समझने तथा उस अलभ्य अवसर का सदुपयोग करने की प्रेरणा मिले। भजन भर करने की बात उस सन्दर्भ में पूरी नहीं रहेगी। जीवन सुधार तथा लोक-मंगल के लिए साहसपूर्ण कार्य किए बिना, जीवन की सार्थकता भजन करते रहने पर भी संभव नहीं हो सकती, यह तथ्य इस अवसर पर भली प्रकार प्रतिपादित किया जाना चाहिए। देखने में यह एक हर्षोत्सव मात्र है, पर आध्यात्मिक जागरण एवं भावनात्मक नव निर्माण की महान संभावनाएँ उसमें सन्निहित हैं। इसलिए जन्म-दिन मनाने की प्रथा चलाये जाने के लिए प्रबल प्रयत्न किये जाने चाहिए।

शिष्य ने शिकायत की—गुरूवर ! आप कहते हैं, इन्द्रियों की निरर्थकता याद रखो, पर जब वासनाएँ प्रबल हो उठती हैं, तो सारा दर्शन, सारा ज्ञान धरा रह जाता है। गुरू ने कहा—हाँ वत्स ! संसार का स्वरूप कुछ ऐसा ही है। आज से तू शाम को सोया कर, तो यह भावना किया कर 'मैं मर रहा हूँ'' प्रातःकाल उठाकर तो यह मानकर कि मेरा नया जन्म हो रहा है। मुझे इसे समझदारी और विवेक से जीना चाहिए। मृत्यु को याद रखने और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने से यह शिष्य विकार मुक्त संत एकनाथ हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन्म-दिन की भाँति विवाह-दिन का भी महत्त्व है। विवाह सामाजिक जीवन का शिलान्यास है। विवाह की आदर्शवादिता एवं उत्कृष्टता अक्षुण्य रखने पर ही बच्चों का तथा समस्त परिवार का भावनात्मक विकास निर्भर है। लोग आमतौर से विवाह के साथ जुड़े हुए कर्त्तव्यों एवं प्रतिज्ञाओं को भूल जाते हैं और अवाँछनीय गतिविधियाँ अपनाने लगते हैं। विवाह-दिवसोत्सव मनाकर उन कर्त्तव्यों एवं प्रतिज्ञाओं का पुनः स्मरण किया और कराया जा सकता है। उसकी भी पद्धति युग-निर्माण शाखाओं को विदित है। प्रयत्न यह भी होना चाहिये कि विवाह-दिवसोत्सव भी मनाए जाएँ और दांपत्य जीवन में हर साल एक नई उमंग है, नई भावना एवं नई प्रेरणा उत्पन्न की जाये। इस प्रकार सरस और प्रखर दांपत्य जीवन, परिवार निर्माण की दिशा में अति प्रभावकारी सिद्ध हो सकता है। जन्म-दिनों की तरह विवाह दिन भी मनाने की प्रथा को हमें एक व्यापक परंपरा बनाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये।

प्रश्न

१. इसे आप कैसे कह सकते हैं कि एक सामान्य मनुष्य भी अवतारी पुरुष बन सकता है ?
२. मनुष्य शरीर पाकर जो काम हमें करने चाहिए, वे हम किस कारण नहीं कर पा रहे हैं ?
३. माया किसे कहते हैं ? तथा माया के चंगुल में फँसा व्यक्ति किस प्रकार विनष्ट हो जाता है ?
४. मानव अपनी शरीरचर्या किस प्रकार व्यतीत करता है ?
५. जीवन मिला है तो उसका लाभ किस प्रकार लेना चाहिए ?
६. जन्मदिन से बढ़कर और कोई त्यौहार व्यक्तिगत जीवन में क्यों नहीं है ?
७. जन्मदिन किस प्रकार मनाया जाना चाहिए ?
७. जन्मदिन का वास्तविक लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है ?
६. युग निर्माण योजना के अनुसार विवाह दिन किस प्रकार मनाया जा सकता है ?

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org